

Catalogue of Sanskrit Manuscripts



Vol. II

Compiled by:

Dr. Preeti Agrawal

Cataloguer of Sanskrit Manuscripts

Assisted by:

Dr. Abusad Islahi

Library & Information Officer



Prof. S.M. Azizuddin Husain

Director

Rampur Raza Library

Ministry of Culture

Govt. of India

Rampur

Catalogue of Sanskrit Manuscripts Vol. II

संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूची

खण्ड—2

संकलनकर्त्ता

डा0 प्रीति अग्रवाल

सूचीकर्त्ता, संस्कृत पाण्डुलिपि

परामर्शक

डा0 अबुसाद इस्लाही

पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी

प्रो0 एस0 एम0 अज़ीज़उद्दीन हुसैन

निदेशक

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार

रामपुर

पुस्तक का नाम	:	संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूची
प्रकाशक	:	प्रो० एस० एम० अज़ीजउद्दीन हुसैन निदेशक, रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर
प्रकाशन वर्ष	:	2015
ISBN	:	978-93-82949-21-3
प्रतियाँ	:	500
मूल्य	:	रु० 500/–
मुद्रक	:	इण्डस्ट्रियल प्रिंटर्स को०सो०लि०, रामपुर
टाइटिल	:	हस्तलिखित संस्कृत पाण्डुलिपियाँ

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार)
रामपुर – 244901
उत्तर प्रदेश – भारत

website : www.razalibrary.gov.in
e-mail : directorrazalibrary@gmail.com
Telephone : +91-595-2325045, 2327244, 2325346
Fax : +91-595-2340548

Catalogue of Sanskrit Manuscripts

Vol. II

Compiled by:

Dr. Preeti Agrawal

Cataloguer of Sanskrit Manuscripts

Assisted by:

Dr. Abusad Islahi

Library & Information Officer

Prof. S.M. Azizuddin Husain

Director

Rampur Raza Library

Ministry of Culture

Govt. of India

Rampur

Contents

पुरोवाक्

ज्ञान को अधिग्रहण करना और सीखना दोनों ही धार्मिक विषय हैं। इस्लाम में इन्हें उच्च स्थान प्राप्त है। पैगम्बर हजरत मुहम्मद निर्देश देते हैं– "गहवारे से लेकर कब्र तक मनुष्य को ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।" हजरत अली कहते हैं– "जिसने मुझे एक शब्द भी सिखा दिया, उसने मुझे अपना दास बना लिया।" इस्लाम ने 7वीं सदी में शिक्षा को सभी के लिए फैलाया। इस्लाम में शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिए धर्म, जाति, लिंग, सम्प्रदाय, उम्र आदि की कोई पाबन्दी नही थी। शीघ्र ही शिक्षण संस्थाओं का निर्माण करने की आवश्यकता हुई, ये शिक्षण संस्थाऐं मदरसों के नाम से जानी जाने लगी। ये मदरसे अपने यहाँ पुस्तकालय भी रखते थे, जिनमें अच्छी पुस्तकों का संग्रह होता था। जब इब्न–ए–सीना ने सस्सानिद के पुस्तकालय का निरीक्षण किया, तो वह किताबों के इतने अच्छें संग्रह को देखकर आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने टिप्पणी की– मैनें अपने जीवन में इतना अच्छा पुस्तकालय कभी नही देखा। मैं समझता हूँ कि रज़ा लाइब्रेरी भी साहित्य की दुनिया में वैसा ही अच्छा स्थान रखती है।

भारत अध्ययन का केन्द्र रहा है। तक्षशिला विश्वविद्यालय भारत में सबसे प्राचीन है। जिसका अस्तित्व बुद्ध से भी पहले का है। शायद उपनिषदों (7वीं सदी से पूर्व) के काल में दार्शनिकों ने अपने स्कूल खोले थे और निर्देश देते थे। बुद्ध के समय में यह एक शक्तिशाली शिक्षण केन्द्र बन गया। यहाँ सैन्यविज्ञान, राजनीति विज्ञान, औषधी, दर्शन, धर्म, भाषाऐं और साहित्य की शिक्षा दी जाती थी। दूसरा केन्द्र नालन्दा था। 5वीं से 12वीं शताब्दी तक राजाओं की लम्बी सफलता एवं उनके द्वारा किये गये रखरखाव में नालन्दा विश्वविद्यालय को उन्नति एवं समृद्धि दिलायी।

भारत में तुर्की शासकों की विजय ने भारत के शासन में बहुत बदलाव किये जिससे जीवन के बहुत से क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बदलाव हुए। 11वीं शताब्दी

में देबुल, उच्छ, मुल्तान, लाहौर और पानीपत इत्यादि अध्ययन के मुख्य केन्द्र बन गये। दिल्ली के सुल्तानों ने बड़ी संख्या में मदरसों की स्थापना की, जैसे– मुइज़्ज़ी, नसीरिया, अलाई, हौजख़ास इत्यादि। 1258 में बगदाद की तबाही ने दिल्ली को मुस्लिम संसार में एक ख़ास अध्ययन केन्द्र बना दिया। जियाउद्दीन बरनी लिखते हैं – अब समरकन्द और बुख़ारा आदि के उलेमा, दिल्ली के उलेमा से सहयोग के लिए परामर्श करते हैं। जियाउद्दीन बरनी हमें 'बताते हैं कि दिल्ली में 14वीं शताब्दी में किताबों की बहुत मांग थी, लिपिक को किताबों की प्रतियाँ लिखने से कोई विराम नही मिलता था। यदि कोई किसी पुस्तक की प्रति मांगता तो लिपिक उसे किताब की दूसरी प्रति देने में उससे एक साल का समय मांगता। एक दिन शेख निजामुद्दीन औलिया के पुराने सहपाठी उन्हें अजोधन में मिले और उन्हें खराब और फटे हुए कपड़ों में देखकर आश्चर्यचकित रह गये। उन्होंने मौलाना निजामुद्दीन से अचम्भित होकर पूछा– "आपके साथ क्या अनहोनी हुई है ?" आप दिल्ली में पढ़ाने का कार्य क्यों नही करते हैं ? आप आज के समय के अच्छे विद्वान हैं और समृद्ध भी हैं। मदरसा–ए–मोइजी, नसीरिया, अलाई, हौजख़ास के पुस्तकालयों में पुस्तकों का अच्छा संग्रह है। दिल्ली के सुल्तानों ने दिल्ली का स्थान परगना मुख्यालय से बदलकर अन्तर्राष्ट्रीय यश का शहर कर दिया। 1555 में भारत के दरवाजे ईरानी उमरा और उलेमा के लिए खोल दिये गये, जो कि भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण विकास था। मुगल बादशाह अकबर (1556–1605A.D) ने मदरसों का निर्माण करने में अत्यधिक रुचि ली। ईरानी उलेमा अपने साथ किताबों का बड़ा ख़जाना लाये थे। बाबर (1526–1530A.D) के पास स्वयं का पुस्तकालय था, उसने टिप्पणी की– "वर्षा के दौरान जलवायु बहुत सुखद होती है........ इसका दुष्प्रभाव यह है कि वायु नम और आर्द्र होती है........पुस्तकें तथा सभी नमी के कुप्रभावों से प्रभावित होते हैं।" आगरा के क़िले में और फतेहपुर सीकरी में भी अकबर ने लाइब्रेरी बनवायी। परिणामतः 19वीं सदी में लाल क़िले में बहुत अच्छा पुस्तकालय था, लेकिन 1857 में इसे अग्रेंजों द्वारा लूट लिया गया। 1857 और 1947 में हमने पाण्डुलिपियों का एक बड़ा संग्रह खो दिया। हमने बड़ी संख्या में पाण्डुलिपियाँ खो दी। आज हम ब्रिटिश म्यूजियम में देखते हैं, भारत की

पाण्डुलिपियों के बारे में चिन्तित् है, जो कि मुख्यतः 1857 और 1947 का परिणाम है।

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी विश्व की महत्वपूर्ण लाइब्रेरियों में एक है। यह विभिन्न धार्मिक परम्पराओं के वर्णन के अतिरिक्त भारतीय इस्लामिक शिक्षा एवं कला का महत्वपूर्ण ख़जाना है। इसकी स्थापना रामपुर के नवाब फ़ैजुल्लाह खाँ द्वारा 1774 ई0 में की गई। रामपुर के नवाब, विद्वानों, कवियों, चित्रकारों, कैलीग्राफरों तथा संगीतकारों के बहुत बड़ें संरक्षक रहे। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात रामपुर की रियासत भारतीय संघ में सम्मिलित कर दी गई। उसके बाद 6 अगस्त 1951 से लाइब्रेरी एक ट्रस्ट के अन्तर्गत आ गई। पूर्व केन्द्रीय शिक्षा मंत्री प्रो0 सैय्यद नूरुल हसन के प्रयासों से भारत सरकार ने 1 जुलाई 1975 ई0 को रामपुर रज़ा लाइब्रेरी को पार्लियामेण्ट एक्ट 1975 के अधीन राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया। इ़सके बोर्ड के अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के महामहिम राज्यपाल हैं। लाइब्रेरी में अरबी, फारसी, पश्तो, संस्कृत, उर्दू, हिन्दी और तुर्की भाषाओं की 17,000 पाण्डुलिपियाँ हैं। यहाँ चित्रों और विभिन्न भाषाओं के ताड़पत्रों का अच्छा संग्रह है। यहाँ पर लगभग 60,000 मुद्रित पुस्तकें हैं, जो कि विभिन्न भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में हैं।

मौलाना शिब्ली नोमानी ने 1884 और 1914 में रामपुर रज़ा लाइब्रेरी का दौरा किया। और उन्होंने एक़ विस्तृत रिपोर्ट जमा की। उन्होंने सुझाव दिया कि रज़ा लाइब्रेरी में पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग नहीं है, उसको तैयार किया जाये। वे लाइब्रेरी के कर्मचारियों के कार्य से भी संतुष्ट नही थे। पूर्व शिक्षा मंत्री, भारत सरकार मौलाना अबुल कलाम आजाद ने 1952 में लाइब्रेरी का दौरा किया और रज़ा लाइब्रेरी में पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग बनाने का सुझाव दिया। कैटॅलाग में निम्न बिंदू होने चाहिए– 1. नाम और विषय 2. नम्बर 3. किताब का नाम 4. लेखक का नाम 5. भाषा 6. पाण्डुलिपि या प्रकाशित पुस्तक।

सन् 1857 में हाफ़िज़ अहमद अली शौक, हकीम अज़मल खाँ के निर्देशन में विषय के अनुसार अरबी पुस्तकों की सूची तैयार करने के लिए लाइब्रेरी में नियुक्त किये गये। नवाब हामिद अली खान (1889–1930) के काल में मुंशी

अमीर मिनाई, मुंशी अब्दुर्रहीम और अहमद अली खान द्वारा सन् 1889 में रज़ा लाइब्रेरी में स्टॉक रजिस्टर एवं पुस्तकों की सूची तैयार की गई। इस रजिस्टर में इन तीनों व्यक्तियों के हस्ताक्षर उपलब्ध हैं। अब यह रजिस्टर स्वयं एक पाण्डुलिपि बन चुका है। पुस्तकों की सूची बनाने में वर्णानुक्रम का प्रयोग किया गया है। इसमें 9347 पुस्तकें हैं, लेकिन सन् 1904 में नवाब हामिद अली खान के सुझाव से नया रजिस्टर तैयार किया गया। अहमद अली शौक लिखते है– "नवाब खुल्द आशियाँ (नवाब कल्बे अली खान) के काल में तीन भागों में एक रजिस्टर तैयार किया गया। यह सूची वर्णानुक्रम के अनुसार थी, लेकिन विषय के अनुसार वर्गीकरण नही था। इस रजिस्टर में पाण्डुलिपियाँ एवं प्रकाशित पुस्तकें दोनो थी।" यह कैटॅलाग सन् 1902 में प्रकाशित किया गया। इसमें पाण्डुलिपियों के बारे में अच्छी जानकारी है। फिर उन्होंने कैटॅलाग का दूसरा एवं तीसरा भाग और सुधार के साथ तैयार किया, जो कि 1928 में तैयार किये गये। ये दोनो कैटॅलाग विस्तृत हैं, उन्होंने ब्रिटिश म्यूजियम लन्दन में बने हुए पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग से प्रेरणा ली। वे स्वयं लिखते हैं– "इस कार्य को करने में मौलाना मुहम्मद नबी, रजिस्ट्रार कुतुबखाना एवं अब्दुल्लाह अमृतसरी ने भी सहयोग दिया। लेकिन इस कैटॅलाग में पाण्डुलिपियाँ एवं पुस्तकें दोनो साथ–साथ हैं।" ये कैटॅलाग उर्दू भाषा में लिखे गये हैं।

1932 में मौलाना इम्तियाज़ अली खाँ अर्शी ने नाज़िम–ए–कुतुबख़ाना का भार संभाल लिया। वे बहुत ही विद्वान व्यक्ति थे तथा लाइब्रेरी के संग्रह के बारे में उन्हें अच्छी जानकारी थी। उन्होंने रज़ा लाइब्रेरी की अरबी की पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग बनाने का कार्य प्रारम्भ किया। उन्होंने अरबी पाण्डुलिपियों के 6 कैटॅलाग तैयार किये और प्रकाशित कराये। श्री इम्तियाज़ अली खाँ अर्शी 26 नवम्बर 1963 में अपनी प्रास्तवना में लिखते हैं– "यह अरबी पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग का प्रथम भाग है जो रज़ा लाइब्रेरी में सुरक्षित है।" श्री डी0 एम0 सिन्हा, आई0ए0एस0, सचिव, रज़ा लाइब्रेरी बोर्ड 27 नवम्बर 1963 में लिखते हैं कि रज़ा लाइब्रेरी में पाण्डुलिपियों का विस्तृत कैटॅलाग अग्रेंजी भाषा में बनाये जाने की आवश्यकता है। रामपुर में संसार के विभिन्न भाषाओं के विद्वान आते हैं। भाग्यवश वैज्ञानिक अनुसंधानिक और सांस्कृतिक मामलों के मंत्रालय, भारत

सरकार ने अरबी और फारसी की पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग बनाने के लिए अनुदान दिया। उनके सहयोग को धन्यवाद देते हुए हम अरबी भाषा की पाण्डुलिपियों का प्रथम कैटॅलाग विद्वानों के समक्ष रखने में सक्षम हुए। अरबी पाण्डुलिपियों का विस्तृत कैटॅलाग चार खण्डों में बनाया जाना प्रस्तावित है। इसके बाद फारसी भाषा की पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग भी इसी पद्धति पर बनाया गया। श्री सिन्हा इस कैटॅलाग के संकलनकर्ता की विशेषताएँ बताते हुए कहते हैं–इस कैटॅलाग के संकलनकर्ता श्री इम्तियाज़ अली अर्शी प्राच्यविद्या के बहुत अच्छे विद्वान हैं। मैं इस बात पर दृढ हूँ कि उनका यह वर्षों का कार्य भारत एवं विदेश से आने वाले कार्यकर्ताओं के लिये आदर्श होगा। मौलाना अर्शी ने 1977 में अरबी भाषा के छः कैटॅलाग पूर्ण किये, परन्तु 1981 में उनकी मृत्यु के बाद यह कार्य रुक गया और तब से अब तक रुका हुआ ही था। जब मैंने 3 अप्रैल 2012 को रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक के रूप में पद ग्रहण किया, तब मैंने पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग बनाये जाने की ओर विशेष ध्यान दिया। पश्तो भाषा की पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग 2012 में रज़ा लाइब्रेरी द्वारा प्रकाशित किया जा चुका है। तुर्की एवं फारसी भाषा के भी दो कैटॅलाग 2014 में प्रकाशित किये गये हैं। संस्कृत की पाण्डुलिपियों का कैटॅलाग बनाने का कार्य भार मैंने डा0 प्रीति अग्रवाल को सौंपा।

भारत के माननीय प्रधानमंत्री डॉ0 मनमोहन सिंह ने पुस्तकालयों में राष्ट्रीय मिशन के लिए सन् 2006 में नींव डाली एवं 3 फरवरी 2014 को उच्चाधिकार प्राप्त समिति का गठन किया। भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने लाइब्रेरियों के लिए मिशन का शुभांरभ किया। उनके भाव को ऊपर रखते हुए रामपुर रज़ा लाइब्रेरी ने फारसी, पश्तो, तुर्की और उर्दू पाण्डुलिपियों के कैटॅलाग प्रकाशित किये। ताकि विद्वानों और दूसरे व्यक्तियों को रामपुर रज़ा लाइब्रेरी की पाण्डुलिपियों की जानकारी आसानी से प्राप्त हो सके।

अभी डॉ0 दानियाल मैक्रोविज, हार्वड यूनिवर्सिटी, अमेरिका ने जून 2013 में लाइब्रेरी का भ्रमण किया। उन्होंने लिखा है कि आपकी लाइब्रेरी भारत की सभी लाइब्रेरियों में सबसे अच्छी है। डॉ0 सीमॉन डब्लू0 फुच्स, जर्मनी ने जुलाई 2013 में रज़ा लाइब्रेरी का भ्रमण किया। उन्होंने लिखा कि मैं आपसे व्यक्तिगत

रूप से विदा नही ले सका क्योंकि आप दिल्ली में हैं, आपके द्वारा की गयी मदद के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। पूरे पाकिस्तान, ईरान एवं ईराक में रज़ा लाइब्रेरी, एक प्रभावशाली संस्था है और यह एक आशीर्वाद है कि आप इसके निदेशक हैं।

जब मैंने 3 अप्रैल 2012 को रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक पद को ग्रहण किया, तभी मैंने निश्चय किया कि रज़ा लाइब्रेरी में उपलब्ध दुलर्भ पाण्डुलिपियों का संकलन व मुद्रण किया जाये। परिणामस्वरूप मैंने हजरत अली की 'नहजुल बालागाह', ज़ियाउद्दीन वरनी की 'नात–मौहम्मदी' व 'तारीख़–ए–फिरोजशाही', सय्यद मौ० कमाल वास्ती की 'असरारीया कश्फ–ए–सूफिया, मुगल बादशाह बाबर का दीवान, 'दीवान–ए–हाफिज', शिराजी, जौहर आफताब्ची की 'तज़किरातुल वाक़ियात' व मोहतशिम कशानी की 'दावाजदेह बंद' मुद्रित कराई। मेरे द्वारा अरबी पाण्डुलिपियों के दो खण्ड, संस्कृत पाण्डुलिपि के दो खण्ड, तुर्की पाण्डुलिपि का एक खण्ड, पश्तो पाण्डुलिपि का एक खण्ड, उर्दू पाण्डुलिपि का एक खण्ड मुद्रित कराया गया।

मैं हार्दिक आभारी हूँ माननीय श्री राम नाईक, श्री राज्यपाल, उ०प्र० एवं अध्यक्ष रामपुर रज़ा लाइब्रेरी बोर्ड, का। मैं दिल से आभार व्यक्त करता हूँ डा० महेश शर्मा, संस्कृति मंत्री, भारत सरकार एवं श्री रविन्द्र सिंह, सचिव, संस्कृति मंत्रालय का जिन्होंने हमें आर्थिक सहयोग दिया। हर प्रकार की सहायता व सहयोग के लिये मैं आभारी हूँ श्रीमती जूथिका पाटनकर, प्रमुख सचिव, माननीय श्री राज्यपाल, उ०प्र० का, श्रीमती श्रेया गुहा, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय का, जिनके सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ।

मैं डा0 प्रीति अग्रवाल, कैटॅलागर संस्कृत पाण्डुलिपि, को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने संस्कृत भाषा की पाण्डुलिपियों के कैटलाग भाग–2 का कार्य पूर्ण किया। मैं आभारी हूँ डा0 बलराम शुक्ला, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली का एवं डॉ0 अनीता त्यागी, संस्कृत विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली डा0 अबुसाद इस्लाही, लाइब्रेरी एवं सूचना अधिकारी, श्री ए0 के0 सक्सेना, मिस मोहिनी रानी, श्रीमती बिल्कीस फारुकी, श्री इस्बाह खान, श्री फैसल खान, और

इन्जी0 शुजाउद्दीन खान का जिन्होने इस कठिन कार्य में अपनी सहायता देकर इस कार्य को सम्भव बनाया।

दिनॉक– 6 जनवरी 2015

प्रो0 सय्यद मौहम्मद अज़ीज़उद्दीन हुसैन
निदेशक,
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

Introduction

The Rampur Raza Library is one of the important libraries of the World. Besides works relating to different religions, traditions, it is a treasure house of Indo-Islamic learning and arts. This library was founded by Nawab Faizullah Khan in 1774. The Nawabs of Rampur were great patrons of learning and the learned *ulema*, poets, painters, calligraphers and musicians - enjoyed their patronage. After the independance of India and merger of the state in the union of India, the library was brought under the management of the trust, which was created on 6th April, 1951. Professor Saiyid Nurul Hasan, former Minister of Education, Government of India, brought this library under an Act of Parliament on 1st. July, 1975. The Chairman of the board is Honourable Governor of Uttar Pradesh. It is having around 17000 manuscripts in Arabic, Persian, Pashto, Sanskrit, Urdu, Hindi and Turkish languages. Moreover, it possesses a good collection of paintings and palm leaves in various Indian languages. A collection of around 60,000 printed books in various Indian and foreign languages are also available.

There are two landmarks in the Islamic world in the field of Cataloguing – Ibn Nadeem's – *Al-Fehrist* and Haji Khalifa's – *Kashfaz Zanoon.* Raza Library is having rich collection of manuscripts and prepared its catalogues. Ahmed Ali Shauq wrote a book titled – *Kitab Khana-i-Rampur*, which was published in 1998. It shows that first, list of the manuscripts and books was prepared during the period of Nawab Kalbe Ali Khan (1865-87). It seems to be the first proper list of the collection of Raza Library.

In 1888, Maulana Shibli Nomani visited this library and submitted a comprehensive report titled – "*Report Mutaliq Kutub Khana-i-Riyasat Aliya*

Mustafabad, Rampur" dated 14th October, 1888. He pointed out the problems of the catalogues of Raza Library. Then he again visited Raza Library on 6th April, 1914. On the basis of this report Nawab Mushtaq Ali Khan (1887-89) directed the staff of the library to prepare the new Catalogue of the Manuscripts of the library in the light of the suggestions of Maulana Shibli Nomani. This catalogue bears the following columns.

1. *Nam-i-Fan* (Name of the subject)
2. *Number Shumar* (Number)
3. *Nam-i-Kitab* (Name of the book)
4. *Nam-i-Musannif* (Author's Name)
5. *Zaban* (Language)
6. *Qalmi/Chhapa* (Manuscript or Printed)
7. *Kaifiyat* (Condition)

Following scholars were deputed to work for the cataloguing of manuscripts and published books of Raza Library, Maulana Hafeezullah, Maulana Muhammad Taiyab, Principal of *Madarasa-i-Aliya*, Maulana Fazl-i-Haq Rampuri, Maulvi Zahoorul Hasan, Maulvi Majduddin and Maulvi Fasihuz Zaman. This catalogue was having classification of books on the subject.

In 1897 Haifz Ahmed Ali Shauq was appointed in the library and under the supervision of Hakim Ajmal Khan, prepared the list of Arabic books based on subject. There are stock registers and the list of books which was prepared during the period of Nawab Hamid Ali Khan (1889-1930) by Munshi Amir Meenai, Munshi Abdur Rahim and Mehdi Ali Khan, *Munsarim* of Raza Library in 1889. This register bears the signature of all the three persons. Now this register itself has become a manuscript. Alphabetic order is followed for

the listing of books. It is having 9347 books. But in 1904 on Nawab Hamid Ali Khan's suggestion a new register was prepared. Ahmed Ali Shauq writes that, "During the period of *Nawab Khuld Ashiyhan* (Nawab Kalbe Ali Khan) a register was prepared in three parts." This list was based on alphabetic order but the classification based on subject, was not being followed. This register is having both the manuscripts and published books together. This catalogue was published in 1902. It is having details about the manuscript. Then he prepared the second and third volumes of the catalogues with more modifications which were published in 1928. These two catalogues are more detailed and descriptive. He had taken inspiration from the Catalogue of manuscripts published by British Museum, London. He himself mentions that this was done by Maulana Muhammad Nabi, Registrar *Kutub Khana* and Maulana Abdullah Amratsari also contributed in this work. But these catalogues were having manuscripts and books together. These catalogues were written in Urdu language. Maulana Abul Kalam Azad, Former Minister of Education, Government of India, visited Raza Library in 1952 and he also suggested for the compilation of catalogue of manuscripts and printed books.

Hakim Ajmal Khan was appointed as Afsar-i-Ala of Raza Library by Nawab Hamid Ali Khan. Under Hakim Ajmal Khan's patronage the first volume of Arabic manuscripts was compiled and published in 1902. Then Hafiz Ahmed Ali Khan Shauq (b.1862) was appointed as the librarian of Raza Library in 1905. He worked on Cataloguing of the manuscripts of the library. He compiled the second and third volume of Arabic manuscripts, which were published in 1928 and 1929 in urdu. He prepared this catalogue on the pattern of the catalogue of manuscripts published by British Museum, London.

In 1932, Maulana Imtiyaz Ali Khan Arshi took over the charge as *Nazim-i-Kutub Khana*. He was an eminent scholar and took keen interest in the collection of the Library. He took up the task of the compilation of Catalogue of Arabic manuscripts of Raza Library. He compiled and published six volumes of Catalogues of Arabic manuscripts. Maulana Imtiyaz Ali Khan Arshi rearranged the collection of the library and separated manuscripts from the published works based on subject. Instead of doing cataloguing in Urdu, Maulana Imtiyaz Ali Khan Arshi compiled the catalogue of Arabic manuscripts in English so that larger section of scholars could be benefitted. Mr. Imtiyaz Ali Khan Arshi, writes in his preface dated 26th November, 1963 that, "This is the first volume of Catalogue of Arabic manuscripts preserved in Raza Library, Rampur." Mr. D.M. Sinha, IAS, Secretary, Raza Library Trust, writes in his introduction dated 27th November, 1963 that, "Since long the need for publishing in English a Descriptive Catalogue of the manuscripts of Raza Library, Rampur, was felt by oriental scholars all over the world. Fortunately the Ministry of Scientific Research and Cultural Affairs, Government of India, sanctioned a grant for publishing a Catalogue of Arabic and Persian manuscripts. With their aid, which we acknowledge with thanks, we have been able to place before oriental scholars the first volume of this catalogue of Arabic manuscripts. It is proposed to exhaust the Arabic manuscripts in four volumes, after which the catalogue of Persian manuscripts will be issued on the same pattern." Mr. Sinha highlighting the scholarship of the compiler of this catalogue records in these words, "The compiler of this catalogue, Mr. Imtiyaz Ali Khan Arshi is a scholar of repute in the world of the oriental learning. I am sure, this work of his years labour would be up to the standard lay down by his co-workers both in this country and abroad." Maulana Arshi

successfully completed six volumes of the catalogue of Arabic manuscripts in 1977 but his death in 1981, proved to be a setback in the compilation of the descriptive catalogues and since then this work suffered a setback. When I joined as Director of Raza Library on 3rd April, 2012, so I decided to pay special attention for the compilation of the descriptive catalogues of manuscripts. Catalogue of Pashto manuscripts was published by Rampur Raza Library in 2012.Catalogue of Turkish and two volumes of Persian manuscripts published in 2014.

When I joined as Director of Raza Library on 3rd April, 2012, so I decided to pay special attention for the compilation and publication of the descriptive catalogues of manuscripts and publication of rare manuscripts available in Raza Library. I have published Hazrat Ali's *Nahjul Balagha*, Ziauddin Barani's *Naat-i-Muhammadi*, Ziauddin Barani's *Tarikh-i-Firoz Shahi*, Saiyid Muhammad Kamal Wasti's *Asrariya Kashf-i-Sufiya*, Mughal Emperor Babur's Diwan, Diwan-i-Hafiz Shirazi, Jauhar Aftabchi's Tazkiratul Waqiat and Mohtashim Kashani's *Dawazdeh Band*. I have also published the Descriptive Catalogue of Arabic manuscripts, two volumes, Persian Manuscripts, three volumes, Sanskrit Manuscripts, two volumes, Turkish Manuscripts, one volume, Pashto Manuscripts, one volume, Urdu Manuscripts, one Volume.

I am highly grateful to Shri Ram Naik, Honourable Governor of Uttar Pradesh and Chairman, Rampur Raza Library for his patronage. I am extremely grateful to Dr. Mahesh Sharma, Honourable Minister of Culture, Government of India and Mr. Ravinder Singh, Secretary, Ministry of Culture for their financial support. I am thankful to Mrs Juthika Patankar Principal

Secretary to Honourable Governor of Uttar Pradesh for her kind help and support. I am equally indebted to Mrs Sreya Guha, Joint Secretary, Ministry of Culture, Government of India, New Delhi for giving me all the help.

I am highly thankful to Dr. Preeti Agrawal for the compilation of the second volume of the Catalogue of Sanskrit Manuscripts. I am grateful to my colleagues Dr. Abusad Islahi, Library and Information Officer, Mr. Isbah Khan, Mr. A.K. Saxena, Ms. Mohini Rani, Ms. Bilqis Farooqi, Mr. Faisal Khan and Er. Shujauddin Khan whose valuable help and hard work has made this work possible.

Dated: 4th January 2015

Prof. S.M. Azizuddin Husain
Director, Rampur Raza Library
Ministry of Culture, Government of India.

"My idea is first of all to bring out the gems of spirituality that are stored up in our books (Manuscripts) and in the possession of a few only, hidden as it were, in monasteries and in forests - to bring them out; to bring the knowledge out of them, not only from the hands were it is hidden, but from the still more inaccessible chest, the language in which it is preserved, the incrustation of centuries of Sanskrit words. In one word, I want to make them popular, I want to bring out these ideas and let them be the common property of all, of every man in India, whether he knows the Sanskrit language or not"

- Swami Vivekananda

प्रस्तावना

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी विश्व की ख्याति प्राप्त लाइब्रेरियों में एक प्रतिष्ठित स्थान रखती है। इसकी स्थापना रामपुर के नवाब फैजुल्लाह खाँ द्वारा 1774 ई0 में की गयी। समय में परिवर्तन के कारण नवाब बदलते रहे तथा उनके काल में किताबों एवं पाण्डुलिपियों की संख्या में वृद्धि होती रही। सबसे अधिक वृद्धि नवाब कल्बे अली खां एवं नवाब हामिद अली खां के काल में हुई। नवाब हामिद अली खां की मृत्यु के पश्चात उनके बेटे नवाब रज़ा अली खां (1930–49 ई0) ने लाइब्रेरी की कमान संभाली। उनके काल में भी लाइब्रेरी ने बहुत अधिक उन्नति की। आजादी के बाद रामपुर की रियासत भारतीय संघ में शामिल कर दी गई, 6 अगस्त 1951 से रज़ा लाइब्रेरी एक ट्रस्ट के अन्तर्गत आ गई। इसके बाद पूर्व केन्द्रीय शिक्षामंत्री प्रो0 सैयद नूरुल हसन के प्रयासों से भारत सरकार ने 1 जुलाई 1975 ई0 को राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया। इसके बोर्ड के अध्यक्ष उत्तर प्रदेश के महामहिम श्री राज्यपाल हैं।

रामपुर रज़ा लाइब्रेरी में लगभग 17,000 पाण्डुलिपियाँ है जो अरबी, फारसी, उर्दू, संस्कृत, तुर्की, पश्तो, एवं हिन्दी आदि भाषाओं में हैं। लाइब्रेरी में 60,000 प्रकाशित पुस्तकें हैं तथा 5,000 के आसपास रंगीन कलाकृतियां एवं भोजपत्र हैं। यद्यपि यह ओरियन्टल लाइब्रेरी है फिर भी यहाँ संस्कृत की लगभग 600 पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं जोकि आश्चर्य की बात है। ये पाण्डुलिपियाँ रामपुर के नवाबों द्वारा एकत्र की गई, जिससे पता चलता है कि उन्हें भारत एवं भारतीय संस्कृति से बहुत प्रेम था। उनके इसी प्रेम के कारण आज ये भारत की अमूल्य धरोहर लाइब्रेरी में सुरक्षित है, जोकि आने वाली पीढ़ी के लिए एक वरदान है।

अब चूंकि पाण्डुलिपियाँ तो संग्रहित थी, परन्तु इतनी बड़ी संख्या में उनको पढ़ना सरल नही था इसलिए शोधार्थियों को पूर्ण जानकारी प्राप्त

कराने हेतु कैटॅलाग की आवश्यकता हुई। सर्वप्रथम मौलाना इम्तियाज़ अली खां अर्शी द्वारा अरबी भाषा के छः कैटलॉग बनाये गये। संस्कृत की पाण्डुलिपियों का भी एक कैटॅलाग डॉ0 फराह द्वारा सन् 2002 में तैयार किया गया था। वह कैटॅलाग 333 पाण्डुलिपियों का है जो कि पूर्ण नहीं है। समय की बदलती हुई परिस्थितियों एवं शोधार्थियों की आवश्यकता को देखते हुए विस्तृत कैटॅलाग बनाने की पुनः आवश्यकता हुई जिसके लिए लाइब्रेरी के निदेशक प्रो0 एस0 एम0 अज़ीज़उद्दीन हुसैन द्वारा मेरा चयन किया गया। उन्हीं के निर्देशन में मैंने यह दुरुह कार्य आरम्भ किया जो कि मेरे लिए अत्यन्त कठिन था। यह संस्कृत की पाण्डुलिपियों का प्रथम विस्तृत कैटॅलाग है। भारत की किसी भी लाइब्रेरी में संस्कृत की पाण्डुलिपियों का विस्तृत कैटॅलाग नहीं है। रामपुर रज़ा लाइब्रेरी सर्वप्रथम इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

इस कैटॅलाग के द्वितीय भाग में मैंने 188 पाण्डुलिपियों का चयन किया है। सभी पाण्डुलिपियाँ हस्तनिर्मित कागज पर लिखी गयीं हैं। अक्षरों को लिखने के लिए लाल एवं काली स्याही का प्रयोग किया गया है। अक्षरों को मिटाने के लिए पीली स्याही का प्रयोग किया गया है। कागज पुराना होने के कारण एवं कीड़ों द्वारा खाया जाने के कारण पाण्डुलिपियों को पढने में अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ा। पाण्डुलिपि में लिखे गये शब्दों को ज्यों का त्यों लिख दिया गया है, उसमें मेरे द्वारा संशोधन नहीं किया गया है। इस कैटॅलाग के अन्तर्गत कर्मकाण्ड, काव्य, कोश, न्याय, पुराण, स्तोत्र, उपनिषद्, एवं वेदान्त के विषयों की पाण्डुलिपियों को लिया गया है। जिसके लिए इन विषयों के बारे में जान लेना अति आवश्यक है।

कर्मकाण्ड – कर्म का अर्थ है 'कार्य'। वेदों का प्रथम भाग कर्मकाण्ड कहलाता है। वेदों के अनुसार यदि हम अच्छा बोयेगें, तो अच्छा काटेगें और अगर बुरा बोयेगें तो बुरा ही काटेगें। अच्छे कर्मों के द्वारा ही हम सब कुछ

प्राप्त कर सकते हैं। जैसे– धन, संतान, स्वर्ग आदि। यह भी कहा गया है कि यज्ञ आदि कर्मकाण्डों से ही स्वर्ग सुख की प्राप्ति सम्भव है। अच्छे कर्मों से ही मनुष्य पुण्य प्राप्त करता है। पुण्य फल के भोग के उपरान्त पुण्य क्षय अनिवार्य है। इसके उपरान्त इस मृत्युलोक में पुनर्जन्म लेना पड़ता है। हिन्दू धर्म में मनुष्य को बहुत से ऐसे कार्यों के बारे में बताया गया है, जिन पर चलकर उसका वर्तमान एवं भविष्य सभी कुछ बदल सकता है। प्रस्तुत सूची में कर्मकाण्ड की 34 पाण्डुलिपियाँ हैं।

__काव्य__ – काव्य वह वाक्य रचना है, जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण है। अर्थात वह कला जिसमें चुने हुए शब्दों के द्वारा कल्पना और मनोवेगों का प्रभाव डाला जाता है। रसगंगाधर में 'रमणीय' अर्थ के प्रतिपादक शब्द को 'काव्य' कहा है। साहित्यदपर्णकार विश्वनाथ के अनुसार रसात्मक वाक्य ही काव्य हैं। रस अर्थात् मनोवेगों का सुखद संचार ही काव्य की आत्मा है। संस्कृत साहित्य में काव्य के दो भेद किये गये हैं– दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य। दृश्य काव्य शब्दों के अतिरिक्त पात्रों की वेशभूषा, भावभंगिमा, आकृति, क्रिया और अभिनय द्वारा दर्शकों के हृदय में रसोन्मेष करता है। श्रव्य काव्य में पद्य, गद्य और चम्पू काव्यों का समावेश किया जाता है। पुनः पद्यकाव्य के दो भेद किये जाते हैं– महाकाव्य और खण्डकाव्य। खण्डकाव्य को मुक्तकाव्य या गीतिकाव्य भी कहते हैं। प्रस्तुत सूची में काव्य की 20 पाण्डुलिपियाँ हैं।

__कोश__ – कोश से तात्पर्य है डिक्शनरी अर्थात शब्दकोश। कोश एक ऐसी पुस्तक होती है, जिसमें शब्द अकारादि वर्ण क्रम के अनुसार होते हैं। प्रत्येक शब्द की पूर्ण जानकारी शब्द का अर्थ, उच्चारण और व्युत्पत्ति भी होती है। एक शब्द के एक से अधिक अर्थ भी होते हैं जिनको पाठक अपनी सुविधानुसार प्रयोग करते हैं। प्रायः शब्दकोश का मुख्य कार्य एक भाषा के शब्दों का दूसरी भाषा में ज्ञान कराना होता है। प्रस्तुत सूची में कोश की 10 पाण्डुलिपियाँ हैं।

न्याय – दर्शनशास्त्र में न्याय दर्शन को प्रवेश द्वार स्वीकार किया जाता है। वह शास्त्र बुद्धि को तीव्र तथा विशद बनाता है। इसके लिए 'आन्वीक्षिकी' शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। न्याय दर्शन के प्रवर्त्तक के रूप में महर्षि गौतम का नाम लिया जाता है। न्याय दर्शन 16 पदार्थ स्वीकार करता है तथा सृष्टि का कर्त्ता, पालक तथा संहारक ईश्वर को मानता है। दुखों की निवृत्ति ही मोक्ष या अपवर्ग है। प्रस्तुत सूची में न्याय की 7 पाण्डुलिपियाँ हैं।

पुराण – पुराण शब्द का अर्थ है– पुराना। इनमें पुराने आख्यानों तथा वर्णनों की अधिकता है। प्राचीनता तथा महत्व में पुराण वैदिक संहिताओं के समान माने गये हैं। प्राचीन होते हुए भी जो परम्पराऐं नये युग में सार्थक बनी रहें, उनका संग्रह पुराण है। वायुपुराण में पुराण की रोचक व्युत्पत्ति दी गई है – **यस्मात् पुरा ह्यनति।** अर्थात् जिससें अतीत साँस लेता हुआ या सजीव हो जाये, वह पुराण है। सायण ने सृष्टि की उत्पत्ति व विकास का प्रतिपादन करने वाले साहित्य को पुराण कहा है। प्रस्तुत सूची में पुराण की 45 पाण्डुलिपियाँ हैं।

स्तोत्र – भक्तिकाल के गीतिकाव्यों को संस्कृत साहित्य में स्तोत्र काव्य की संज्ञा दी गयी है। इस काव्य में गीतात्मक श्लोकों की रचना होती है। इन श्लोकों के माध्यम से किसी देवी–देवता, आचार्य या तीर्थ आदि की स्तुति की जाती है, जिससे वे प्रसन्न हो सकें। प्रस्तुत सूची में स्तोत्र की 43 पाण्डुलिपियाँ हैं।

उपनिषद् – उपनिषद् वह विद्या है, जिसका अध्ययन करने से अविद्या का नाश होता है जिससे ब्रह्म की प्राप्ति हो जाती है तथा जिसका अध्ययन करने से नाना प्रकार के दुखों का दुष्प्रभाव मन्द अर्थात् शिथिल हो जाता है। उप+नि+सद् का अर्थ पास बैठना भी होता है। इस विद्या के द्वारा ब्रह्म के पास बैठा जा सकता है। इस अर्थ के अनुसार भी इसका नाम उपनिषद्

पड़ा। इसके अर्थों को शिष्य गुरु के चरणों में बैठकर ही समझ सकते हैं। प्रस्तुत सूची में उपनिषद् की 6 पाण्डुलिपियाँ हैं।

वेदान्त – वेदान्त शब्द का अर्थ 'वेद का अन्त' से माना जाता है। वेदों का सार भी उपनिषदों में पाया जाता है। उपनिषदों में आत्मा तथा ब्रह्म का विषय वर्णित है। आत्मा तथा ब्रह्म सम्बन्धित वर्णनों के आधार पर जिस परम्परा का उदय हुआ, वही आगे चलकर वेदान्त के नाम से जानी जाने लगी। सदानन्द योगीन्द्र कृत 'वेदान्तसार' एक अद्वितीय प्रकरण ग्रन्थ है, जो कि कोहिनूर हीरे के समान है। प्रस्तुत सूची में वेदान्त की 23 पाण्डुलिपियाँ हैं।

इस कैटलॉग को पूर्ण करने में मुझे जिन–जिन महानुभावों का आशीर्वाद एवं सहयोग मिला, मैं उन सभी का हृदय से आभार व्यक्त करना अपना प्रथम कर्त्तव्य समझती हूँ। सर्वप्रथम मैं अपने गुरु जी डॉ0 माधवराम यादव एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, राजेन्द्र प्रसाद डिग्री कालेज, मीरगंज, बरेली के प्रति नतमस्तक हूँ, जिन्होंने मुझ अल्पमति को अपनी शिष्या बनाया एवं ज्ञान दिया। रामपुर रज़ा लाइब्रेरी के निदेशक प्रो0 एस0 एम0 अज़ीज़उद्दीन हुसैन जी का आभार व्यक्त करने के लिए तो मेरे पास शब्द ही नही हैं क्योकि उन्हीं के प्रेरणादायक निर्देशन एवं पूर्ण सहयोग से ही यह कार्य पूर्ण हुआ है। मैं डॉ0 बलराम शुक्ला, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने व्यस्तता के बावजूद भी इस कैटलॉग का निरीक्षण किया एवं मुझे पूर्ण सहयोग दिया, उनके मार्गदर्शन के बिना यह कार्य सम्भव नहीं था। मैं डॉ0 अनीता त्यागी, संस्कृत विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली एवं डॉ0 शरद अरोरा का भी धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ जिन्होंने मेरी समय समय पर सहायता की।

मैं लाइब्रेरी के पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी डॉ0 अबुसाद इस्लाही जी का आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने समय समय पर पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध करायी और उचित मार्ग दर्शन भी किया। मैं लाइब्रेरी

के अपने दूसरे साथी सै0 नवेद कैसर शाह, श्रीमती नाजमा बी, श्रीमती साजिदा शेरवानी, डॉ0 तबस्सुम साबिर, श्री इस्बाह खान, श्री तौसीफ अहमद एवं श्री राजेश कुमार का भी धन्यवाद व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इस कार्य को करने में यथासमय सहयोग दिया।

मैं अपने पूज्य पिता जी श्री चन्द्रसेन अग्रवाल एवं माता जी श्रीमती सुधा अग्रवाल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ जिनके सतत् आर्शीवाद, स्नेह, प्रेरणा और निर्देशन के कारण ही यह कार्य सम्भव हो सका है। मैं अपने पति श्री भारत अग्रवाल जी की भी बहुत आभारी हूँ जिन्होंने इस कार्य को पूर्ण करने में मुझे पर्याप्त समय व सहयोग दिया।

यद्यपि इस कैटॅलाग को बनाने में एवं प्रूफादि शोधन करने में मेरे द्वारा निश्चय ही प्रमाद रहित प्रयास किया गया है, फिर भी यदि कहीं अशुद्धि रह गयी हो तो गलती करना मानव स्वभाव मानकर विद्वान पाठक मुझे क्षमा करें एवं अपने सुझाव प्रेषित करें, जिससे अगले प्रकाशन में इसे सही किया जा सके।

सधन्यवाद !

दिनांक : 15.8.2014

डॉ0 प्रीति अग्रवाल
कैटॅलागर संस्कृत
रामपुर रज़ा लाइब्रेरी, रामपुर
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार

प्राक्कथन

रामपुर शहर के बीचों बीच विस्तृत अहाते में स्थित नवाब के महल में प्रवेश करते ही हामिद मंजिल के बाहर शालिपट्ट पर अरबी की कुर्आनी आयत– **"रब्बना ज़्दिनी इल्मन्"** के साथ–साथ संस्कृत का समानार्थक ध्येयवाक्य– **"ज्ञानं वर्धयतु प्रभुः"** (परमेश्वर मेरे ज्ञान को बढ़ायें) देखकर प्रसन्नता मिश्रित आश्चर्य होता है। पुस्तकालय के अन्दर जाकर ग्रन्थों के संग्रह को देखकर भी इसी उदारता के दर्शन होते हैं। यद्यपि रामपुर रज़ा पुस्तकालय अपने अरबी तथा फारसी के समृद्ध तथा अद्भुत संग्रह के कारण विश्व प्रसिद्ध है तथापि इसमें तुर्की, पश्तों आदि के साथ संस्कृत तथा हिन्दी की पाण्डुलिपियाँ भी विद्यमान हैं। यह तथ्य रामपुर के नवाबों की पक्षपातरहित ज्ञानप्रियता का बड़ा उदाहरण है।

1774 ई0 में फैजुल्लाह खां से लेकर 1949 में रज़ा अली खां तक 200 से भी अधिक वर्षों में निरन्तर समृद्ध होता है इस ग्रन्थालय को 1974 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय महत्त्व समझा तथा अब यह संस्कृत मंत्रालय के अधीन है।

पुस्तकालय में लगभग 600 संस्कृत पाण्डुलिपियाँ है, जिनमें अनेकानेक अप्रकाशित होने के कारण बड़ी महत्वपूर्ण हैं। अनके वर्षों तथा अनेक स्तरों पर पुस्तकालय में इनका आगमन हुआ। इनमें से अनेक पाण्डुलिपियाँ रामपुर या मुरादाबाद के स्थानीय लेखकों के द्वारा लिखी गयी हैं तथा पण्ड़ितों के घरों से पुस्तकालय को दी गई हैं या बेची गयी हैं। इस प्रकार स्थानीय संस्कृत पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से इस पुस्तकालय का योगदान महत्वपूर्ण है।

यहाँ की संस्कृत पाण्डुलिपियों के विषयों में पर्याप्त विविधता है। इनमें कर्मकाण्ड, काव्य, कोश, न्याय, पुराण, स्तोत्र, उपनिषद्, एवं वेदान्त आदि अनेकानेक विषय सम्मिलित हैं। इन पाण्डुलिपियों में एक बड़ी संख्या नित्य पाठ की पुस्तिकाओं, पंचागों तथा पारायण हेतु प्रयोग की जाने वाले पुराणों (विशेषतः श्रीमद्भागवत महापुराण) की है। इसके अतिरिक्त अति महत्वपूर्ण तथा अधुनावधि का अप्रकाशित पाण्डुलिपियाँ यहाँ संग्रह को महत्वपूर्ण बनाती हैं। इनकी

विशेषताओं के निदर्शन के लिये कुछ पाण्डुलिपियों का परिचय आगे दिया जा रहा है। कालिदास कृत **रघुवंश** की जनार्दन भट्ट की अप्रकाशित टीका शिशुप्रबोधिनी अपूर्ण होने के बावजूद प्राचीन तथा महत्त्व की है। महाभारत के प्रसिद्ध विष्णुसहस्रनाम में प्राप्त भगवान के 1000 नामों का व्युत्पत्त्यात्मक श्लोकबद्ध व्याख्या के रुचिकर पाण्डुलिपि है, जिसके कर्ता कोई सन्यासी हैं। इसका नाम **विष्णुनामप्रकाश** है। टीकाराम शर्मा नामक किसी आधुनिक स्थानीय नैयायिक द्वारा लिखित ग्रन्थ तर्कसुधाधारा की पाण्डुलिपि यहाँ विद्यमान है। इस पर ग्रन्थकार की धारा नामक स्वोपज्ञ टीका भी है। संगतिवाद न्यायशास्त्र के सम्बद्ध तत्व से सम्बन्धित पाण्डुलिपि है, केवल अर्थालंकारों पर आधारित लघुकाय, परन्तु दुर्लभ पाण्डुलिपि **अर्थालंकारमंजरी** भी यहाँ स्थित है। **अंलकारकुलप्रदीप** पाण्डुलिपि अंलकारों का सरल रीति से विवेचना करती है इसके लेखक काशी निवासी निर्मल भट्ट नामक विद्वान हैं। ज्योतिष के द्वारा व्यक्ति के आयु निर्णय तथा दीर्घायु कारक उपायों से समन्वित 100 योगों का वर्णन करने वाला ग्रन्थ **योगशतकम्** भी यहाँ पाण्डुलिपि के रूप में विद्यमान है। **नक्षत्ररोगावली** में नक्षत्रों के भिन्न–भिन्न योगों को रोगों के कारक के रूप में वर्णित किया गया है तथा तंत्र एवं धर्मशास्त्र पर आधारित उनके उपचार का वर्णन भी किया गया है। ज्योतिष के ताजिक क्षेत्र से समबद्ध **ताजिकाभरण** तथा **प्रश्नवैष्णव** ग्रन्थ भी पाण्डुलिपि के रुप में विद्यमान हैं। **वेदान्तसंज्ञाप्रकाश** में वेदान्त शास्त्र से सम्बन्धित 44 पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या है। **भुवनेश्वरी पद्धति** तथा **भुवनेश्वरी विधान** भुवनेश्वरी देवी की तन्त्रोचित सप्रया से सम्बन्धित ग्रन्थ है। श्रीमद्भागवत के प्रथम श्लोक की 100 मूलकथापरक व्याख्याओं की अद्‌भुत पाण्डुलिपि तथा पण्ड़ितराज जगन्नाथ की **गंगालहरी** संस्कृत टीका तथा अन्यान्य पाण्डुलिपियाँ उल्लेखनीय है। इन पाण्डुलिपियों में से अनेक में सुन्दर चित्रकारियाँ भी प्राप्त होती है, जिनका चित्रकलादि की दृष्टि से अध्ययन हो सकता है।

इस प्रकार के महत्वपूर्ण पाण्डुतिपियों से समन्वित ग्रन्थराशि का सूचीकारण विद्वत् जगत के लिए बहुत आवश्यक था। इस दिशा में सबसे पहला कार्य सन् 2002 में हुआ। पुस्तकालय की 333 संस्कृत पाण्डुलिपियों की सूचना के साथ एक सूची आचार्य विद्यानिवास मिश्र की प्रस्तावना के साथ प्रकाश में

आयी। प्राथमिक प्रयास होने के नाते यह कार्य महत्वपूर्ण तो था, परन्तु इसमें अपूर्णता के साथ अनेक सूचनात्मक दोष भी विद्यमान थे, जिसके नाते इसका निरापद रुप में शोध हेतु प्रयोग नही किया जा सकता था। इस सत्य का ज्ञान मुझे तब हुआ जब पुस्तकालय के वर्तमान अध्यवसायी निदेशक प्रो० एस० एम० अज़ीज़उद्दीन हुसैन साहब ने 2012 में मुझे प्रकाशन योग्य पाण्डुलिपियों का निरीक्षण करके एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने को कहा। सूची का निरीक्षण करते हुए मैं उसकी सीमाओं से अवगत हुआ। इसमें अनेक तथ्यात्मक गलतियाँ भी थी जैसे **उपदेशसाहस्री** की अपूर्ण पाण्डुलिपि को **अपोहवाद** के नाम से सूचीकृत कर दिया गया था। अनेक पाण्डुलिपियों की सूची संख्या की अशुद्ध सूचना दी गई थी, जो शोधकर्ताओं के लिए असुविधा उत्पन्न करने वाली थी। इसके अतिरिक्त इस सूची में प्रूफ की पर्याप्त अशुद्धियाँ तथा सम्पादन की अपूर्णताऐं थी। इस सूची के अनुसार इस पुस्तक में 333 पाण्डुलिपियों को सम्मिलित किया गया है, जबकि पुस्तकालय में संस्कृत की 600 से अधिक पाण्डुलिपियाँ विद्यमान हैं।

महत्वपूर्ण पाण्डुलिपियों पर रिपोर्ट देते हुए मैंने पुस्तकालय को सुझाव दिया कि समस्त पाण्डुलिपियों को नये सिरे से सूचीबद्ध किया जाये। इसे स्वीकार करते हुए पुस्तकालय ने पुनः सूचीकरण का कार्य प्रारम्भ कराया। जिसका प्रमाण प्रस्तुत सूचीग्रन्थ के प्रथम खण्ड के रुप में आपके सामने हैं। प्रथम भाग में 188 पाण्डुलिपियों का यथोलब्ध परिपूर्ण सूचना के साथ विषयवार सूचीकरण किया गया है। यह कार्य मेरे निर्देशन में डॉ० प्रीति अग्रवाल ने अनेक कठिनाइयाँ आने के बावजूद बड़े ही श्रमपूर्वक किया है इसके लिए इन्हें भूरिशः साधुवाद प्रदान किया जाता है तथा यह सारा कार्य संस्कृत के राष्ट्रीय महत्त्व को समझने वाले पुस्तकालय के निदेशक इतिहासविद् प्रो० एस० एम० अज़ीज़उद्दीन हुसैन के अध्यवसाय तथा लगनशीलता का परिणाम है। उन्हें तथा पुस्तकालयाध्यक्ष सहित अन्यान्य पुस्तकालीय सहायकों को उनके यथास्थान सहयोग के लिए धन्यवाद देते हुऐ अगले खण्डों के शीघ्र प्रकाशन के प्रति विश्वास प्रकट करता हूँ।

श्रीकृष्णजन्माष्टमी

17.08.2014

डॉ० बलराम शुक्ल
दिल्ली विश्वविद्यालय
दिल्ली—110007

Karma Kāṇḍa

कर्मकाण्ड

Kāvya

काव्य

Kośa

कोश

Nyāya

न्याय

Purāṇa

पुराण

Purāṇa

पुराण

Stotra

स्तोत्र

Upaniṣad

उपनिषद्

Vedānta

वेदान्त

Karma Kāṇḍa

कर्मकाण्ड

Form No.: 1	**Manuscript No.:** 15312
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15312
Title of Work:	Ananta Kathā
Title of Work in Sanskrit:	अनन्त कथा
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ananta Kathā is a famous Vrata of Hindus. The work has taken from Bhaviṣyottara Purāṇa. By asking Yuḍhiṣthira, God Śrī Krisṇa told the story of this Vrata. According to the MS, it is celebrated in the month of Bhādrapad Śukla Caturdaśī. Folio no.1 is missing from the MS.
Beginning:	.............त्रिकालं वंद्यते संध्या षट्कर्मनिरतः सदा कालेनम्रियते भार्या........... ।
End:	अनंतरुपविजयो जपश्च अनंत रुपाय नमो नमस्ते ।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.8 x 16.2 cm.

Lines:	8 to 9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	5
Condition:	Only water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	No
Memory Notes:	No
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 2	**Manuscript No.:** 15307
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15307
Title of Work:	Ananta Vrata Kathā
Title of Work in Sanskrit:	अनन्त व्रत कथा
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ananta Vrata Kathā is a famous Vrata of Hindus. The work has taken from Bhaviṣya Purāṇa. According to the MS, it is celebrated in the month of Bhādrapad Śukla Caturdaśī. By asking Yuḍhiṣthira, God Śrī Krisṇa told the importance and the story of this Vrata. All folios of the MS are badly worm eaten therefore some text is also missing. The handwriting is very difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अनन्तव्रतमस्त्यन्यसर्वपापहरं शिवं सर्वकामप्रदंन्तणां स्त्रीणां चैव युधिष्टिर.. ।
End:	त्रिभुवने शमनं तद्रूपं वध्वंतु दक्षिणां करेवदोरकं च।।

Script:	Devanāgarī
Size:	9 x 19.3 cm.
Lines:	8 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1856
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and conversation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not available
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	Not given
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 3

Manuscript No.: 15340

Subject: Karma Kāṇḍa

Accession No: 15340

Title of Work: Anantavrata Kathā

Title of Work in Sanskrit: अनन्तव्रत कथा

Name of Author: Not metioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Anantavrata Kathā is a famous Vrata of Hindus. According to the MS by asking Yudhiṣṭhira, Śrī Krisṇa told him the importance of this vrata and its story. Lord Śrī Krisṇa says that by doing this vrata, all the sins of seven lives would be destroyed.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। पातंवोपद्मनाभाय जलशायी सुखासने।। चतुर्मासाय देवाय अनंताय नमो नमः।।

End: वर्षे चतुर्दशं कृत्वा ततोद्यापन कारयेत्।।६३।।

Script: Devanāgarī

Size:	10.5 x 23.5 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Guśaī Anirūddha Giri
Age:	Saṃvat 1792
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	9
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 4	**Manuscript No.:** 15350
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15350
Title of Work:	Āditya Vrata Vidhiḥ
Title of Work in Sanskrit:	आदित्य व्रत विधि
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS the pattern of Āditya (Sun) Vrata has given. On the last folio the pattern of Ravivrata Udyāpan has also given. This is very famous Vrata in Hindus. According to the MS One who performs Āditya Vrata contains all things.
Beginning:	।। श्री गणेशाय नमः ।। तत्र रविवारव्रतं मदनरत्नोसौर धर्मे ।।
End:	तावुभौ पुण्यकर्माणौ रविलोकमवाप्नुयात् ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	16.2 x 23.8 cm. (Different)
Lines:	14 to 16

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 5	**Manuscript No.:** 15326
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15326
Title of Work:	Ṛṣī Pañcami Vrata Kathā
Title of Work in Sanskrit:	ऋषि पंचमी व्रत कथा
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS Ṛṣī Pañcami Vrata Kathā is given. It is celebrated in the month of Bhādrapad Śukla Pañcami. All folios are difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। सूत उवाच।। इन्द्रप्रस्थे शुभस्थाने पांडवेषु वसत्सु च जत्रागमनं नारदो वै दृष्टा पांडवनंदनं १।
End:	सर्व पाप विर्निमुक्तो ब्रह्मास्माकम्.............. ।
Script:	Devanāgarī
Size:	9 x 21 cm.
Lines:	8 to 9
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	3
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 25.7.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 6	**Manuscript No.:** 25
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15301
Title of Work:	Ekādaśīvrata Kathā
Title of Work in Sanskrit:	एकादशीव्रत कथा
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS the importance of Ekādaśīvrata Kathā has given. By Asking Yudhiṣṭhira, Śri Kriṣṇa told the importance of this Vrata. The work has taken from Padma Purāṇa. Some folios are worm eaten from edges due to this some handwriting is also missing.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। शुक्लाधिकं व्रतं।। युधिष्ठिर उवाच।। भगवन्श्रोतुमिच्छामि व्रतानामुत्तमंव्रंतं सर्वपापहरं चैव फलंसुव्रतिनामपि।। १।।
End:	एकादशीसमं नास्ति त्रैलोक्ये व्रतमुत्तमं।। ३१ ।।
Script:	Devanāgarī

Size:	9.1 x 14.5 cm.
Lines:	9 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1717
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	6
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been by National archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 7	**Manuscript No.:** 15323
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15323
Title of Work:	Kārtikavratodyāpana Sūtrasāra
Title of Work in Sanskrit:	कार्तिकव्रतोद्यापन सूत्रसार
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kārtikavratodyāpana Sūtrasāra is a work of Karma Kāṇḍa. In the MS Kārtika Vrata Udyapana Vidhi has given.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ कार्त्तिकोद्यापनोपयोगीसूत्रसारो लिख्यते।
End:	अभिषेकतिलकं रक्षामंत्र पाठान्कुर्यात् आचम्य अच्युताय नमः ब्राह्मणान्संतर्प्य सुहृद्युतो भुंजीत।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.6 x 27.5 cm.
Lines:	8 to 10
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	19
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 6.6.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 8	**Manuscript No.:** 15349
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15349
Title of Work:	Kumbha Vivāha Vidhiḥ
Title of Work in Sanskrit:	कुम्भ विवाह विधिः
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kumbha Vivāha Vidhiḥ is a work of Karma Kāṇḍa. According to the MS The girl whose lagna and Grahas became very disturbed at the time of her birth then for the peace of her Grahas whose marriage has been done with Kumbha in the presence of God Śrī Viṣṇu. So that her future life become happy. Last two folios of the MS are blank. The MS has bound in wrong pattern by mistake.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ कन्याया दुष्ट स्थान स्थित दुष्ट ग्रह जनित वैधव्य परिहाराय कुंभ विवाह विधिः....... ।

End:	कन्यामभिषिच्य दक्षिणा संकल्पः ब्राह्मणान् दक्षिणादिभिः परितोष्य ब्राह्मणान्भोजयेत् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	22.5 x 14.5 cm.
Lines:	18 to 19
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 9	**Manuscript No.:** 15311
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15311
Title of Work:	Cūḍākaraṇa Saṁskāra
Title of Work in Sanskrit:	चूडाकरण संस्कार
Name of Author:	Manu
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Cūḍākaraṇa Saṁskāra is the eight Saṁskāra told by Manu. He told sixteen Saṁskāra to the Men in his book Manusmriti. Cūḍākaraṇa Saṁskāra is one of them. When the hair of the child has cut first time after taken the birth and the śikha (शिखा) has been left on the head of the child. It is called Cūḍākaraṇa Saṁskāra. In Hindus, it is called Mundan Saṁskāra also. According to the Ms it is celebrated in the third years of the child. Cūḍākaraṇa Saṁskāra Vidhi has also given. The MS is incomplete.

Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। अथ चूडाकरणं ।। संवत्सरपूर्णे तृतीय वर्षे उपनीत्या सहैव वा चूडाकर्म्मः ।।
End:	त तोनापिताय क्षुरन्प्रयछंति अक्षुणमिति वामदेव....... ।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.8 x 18.8 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	5
Condition:	Slightly worm eaten and water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 10	**Manuscript No.:** 15329
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15329
Title of Work:	Jalāśayapūjā Pratiṣṭha
Title of Work in Sanskrit:	जलाशयपूजा प्रतिष्ठा
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The Pattern of Jaḻāśayapujā Pratiṣṭha has been given in the MS. All folios are difficult to read.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः अथ जलाशयपूजाप्रतिष्ठा लिख्यते।
End:	विविशेषः प्रशात्कारणरुपायां वृक्षदानविधिः सुगमः।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.2 x 16.7 cm.
Lines:	14 to 19
Copier's Name:	Girdhārīlāla Miśra

Age:	Saṃvat 1814
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Copier self
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 27.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 11	**Manuscript No.:** 15335
Subject:	Karma Kāṇḍa
Acession No:	15335
Title of Work:	Tulsī Vivāha
Title of Work in Sanskrit:	तुलसी विवाह
Name of Author:	Not metioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The pattern of Tulsī Vivāha has been given in the MS. The work has taken from Nārada Pañcarātra.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ तुलसी विवाह वशिष्ट उवाच। अथो विवाह वक्ष्यामि तुलस्यातु यथा विधिः।।
End:	भूयसी दक्षिणा इहलोके सुखं भुक्तवा विष्णु लोके स गच्छतु।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.3 x 16 cm.
Lines:	14
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	8 (1b to 3a)
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 12 | **Manuscript No.:** 15335

Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15335
Title of Work:	Dāmodar Tulsī Vivāha
Title of Work in Sanskrit:	दामोदर तुलसी विवाह
Name of Author:	Not metioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The pattern of Dāmodar Tulsī Vivāha has been given in the MS. The work has taken from Padma Purāṇa Uttar Khaṇḍa. Tulsī Vivāha and Damodar Tulsī Vivāha is the one MSS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। प्रणम्य शिरसा देवं माधवं राधया सह विवाहस्य विधिं वक्ष्ये...... ।
End:	राधा संख्यया श्री तुलस्याः सह विसर्जनं कृष्णस्य स्वालयं प्रतिगच्छतां।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.3 x 16 cm.
Lines:	15 to 20

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1918
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	8 (3b to 8b)
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 13	**Manuscript No.:** 15339
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15339
Title of Work:	Nāmakaraṇa Paddhatiḥ
Title of Work in Sanskrit:	नामकरण पद्धति
Name of Author:	Not metioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nāmakaraṇa Paddhatiḥ is dealing with Nāmakaraṇa saṁskār. According to the MS after born the child Brahamins namakaraṇa Saṁskār has done in 10 days, Kṣhatriyas in 12 days, Vaiśhyas in 15 days and the Sudras in one month.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ नाम कर्म्म। दशम्यामुत्थाय ब्रह्मणात् भोजयित्वा पिता नाम करोति।।
End:	ग्रहांतर्नयेत् ततो महानीराजनादि आचारात्।
Script:	Devanāgarī
Size:	9 x 20.6 cm.

Lines:	7 to 8
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	5
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 14	**Manuscript No.:** 15338
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15338
Title of Work:	Pūjā paddhatiḥ
Title of Work in Sanskrit:	पूजा पद्धतिः
Name of Author:	Not metioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The way of worshiping has given in the MS. The size of the MS is small. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ॐ अथ पूजा पद्धतिः ॐ ब्राह्मे मुहूर्त्ते चोत्थाय मुक्तस्वापो वद्ध पद्मासनः........ ।
End:	तस्य षोडश वारजपेन पूरयेत् वामनाशया वमिति वरुण वीजंभु ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	8 x 15.1 cm.
Lines:	6
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	11
Condition:	Slightly worm eaten.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 15

Manuscript No.: 15327

Subject: Karma Kāṇḍa

Accession No: 15327

Title of Work: Pradoṣa Śivapūjana Vidhi

Title of Work in Sanskrit: प्रदोष शिवपूजन विधि

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Pradoṣa Śivapūjana Vidhi is a work in worship of God Śiva. The work has taken from Skāṇḍa Purāṇa Brahmottara Khaṇḍa. The MS is in brittle condition. All Folios are badly damage. Due to this mostly text is not readable.

Beginning: सिद्धिं श्री गणेशाय नमः ।।

End: धन्यास्त एवं निजः पुनजिनत्रिलोकास्तेषां पदांवुजरजानुवनं पुनातु ।।

Script: Devanāgarī

Size: 11.1 x 23 cm.

Lines: 9 to 13

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very Bad, brittle
No. of Folios:	9
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 16

Manuscript No.: 15333

Subject: Karma Kāṇḍa

Accession No: 15333

Title of Work: Mūlavidhānam

Title of Work in Sanskrit: मूलविधानम्

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Mūlavidhānam is a work of Karma Kāṇḍa. All folios are worm eaten from left side. Folio no.1 is blank so the MS starts from folio no. 2a. Colophon is not given. The pattern of worship of Mulśānti has been given in this MS.

Beginning: अथ मूल विधानं।। स्नानसंध्यादेवार्चनादिनित्यं विधायमातृकाभ्यो दयिके कुर्यात्।।

End: प्रधानाहुतयः सर्प्पदैवत स्थापनं।। इति विशेषः।।

Script: Devanāgarī

Size: 11 x 19 cm.

Lines: 10

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 17	**Manuscript No.:** 15330
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15330
Title of Work:	Mūlaśleṣā Vidhāna
Title of Work in Sanskrit:	मूलश्लेषा विधान
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS the Pattern of Mool Śanti has given. Some folios are worm eaten from edges due to this some text is also missing. All folios are very difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ मूल शांतिर्लिख्यते।। अथ मूल जातस्य विधिः लिख्यते।
End:	७० हंसपदी ७१ कुंडा ७२ वटु ७३ खिरहटी.......... ।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.7 x 15.3 cm.
Lines:	9 to 11

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 27.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 18	**Manuscript No.:** 55
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	20174
Title of Work:	Yajurveda Mañjarī
Title of Work in Sanskrit:	यजुर्वेद मंजरी
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS many mantras related to God Śiva have been given. The MS contains four patals of Yajurveda Mañjarī. The MS has missing from beginning and the end.
Beginning:	................त्रस्य भरद्वाज ऋषिः रिन्द्रो देवता अनुष्टुप् छंदो.................. ।
End:	देवता विज्ञाय यथा कामं जपेत्।। अपा ॐ।। मित्य...।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 21.8 cm.
Lines:	10

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	25
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 19	**Manuscript No.:** 15325
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15325
Title of Work:	Yajñopavīta Paddhati
Title of Work in Sanskrit:	यज्ञोपवीत पद्धति
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Yajñopavīta Paddhati is a work of Karma Kāṇḍa. The Pattern of Yajñopavīta has given in the MS. Some folio's colour is yellow. The last folio of the MS is bound inverse by mistake.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ यज्ञोपवीत लिख्यते। अष्टं वर्ष ब्राह्मणमुपंनयेत गर्भाष्टमे वा।।
End:	सर्वेषां मित्रमिव।। तिस्रो रात्रीर्व्रतंचरेत्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9 x 21.5 cm.
Lines:	6 to 7

Copier's Name:	Prānsukha
Age:	Saṃvat 1827
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	24
Condition:	Slightly worm eaten and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 20	**Manuscript No.:** 15346
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15346
Title of Work:	Yajñopavīta Paddhati
Title of Work in Sanskrit:	यज्ञोपवीत पद्धति
Name of Author:	Ganeśa Duṭṭa Miśra
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS the pattern of Yajñopavīta has given. Folio no. 1, 13, 14, 15 and 16 are missing from the MS. All folios are much difficult to read.
Beginning:	..............षादेणोत्फेणालेपनं हस्तेनोद्धरनं।। उदकेनाभ्युक्षनं।।
End:	लेषकोगणनायकं तदपिचलति बुधिकाकथाइतरे जना।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.5 x 21 cm.
Lines:	8 to 9
Copier's Name:	Guru Prasāda Brāhamaṇa

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very bad
No. of Folios:	12
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 25.7.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 21	**Manuscript No.:** 15328
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15328
Title of Work:	Vivāha Paddhati
Title of Work in Sanskrit:	विवाह पद्धति
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS the pattern of Hindu marriage has given. First folio of the MS is badly worm eaten due to this some text is missing. Colophon is not given in the MS.
Beginning:	राम सिद्धि श्री गणेशाय नमः अथ विवाहपद्धति लिख्यते।
End:	व्यवहारे कृषि वाणिज्ये मम प्रज्ञाप्रवर्तते साक्षी पूर्ववत।
Script:	Devanāgarī
Size:	16.1 x 18.8 cm.
Lines:	14 to 19

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	21
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 22

Manuscript No.: 15345

Subject: Karma Kāṇḍa

Accession No: 15345

Title of Work: Vivāha Paddhati

Title of Work in Sanskrit: विवाह पद्धति

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: In the MS the pattern of Hindu marriage has given. Mostly folios are worm eaten from edges. Some folios are difficult to read.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। पादत्राण विमोचनं च वर्णं वाचार्चणं विष्टरं पाद्यं विष्टर मर्घ्यमाचमन कृतं.......१।।

End: अथोत्वं दीर्घायु र्भूत्वा शतवल्शा विरोह्रतात् ततोऽभ्यंतरगमनं द्यौशांतिरितिपठेत्।

Script: Devanāgarī

Size: 10.5 x 22.5 cm. (Different)

Lines: 8 to 9

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	15
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 23

Manuscript No.: 61

Subject: Karma Kāṇḍa

Accession No: 20350

Title of Work: Vivāha Paddhatiḥ

Title of Work in Sanskrit: विवाह पद्धतिः

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: The pattern of Hindu marriage has given in the MS. Hindi translation has also given in the MS. After ending the MS the name of the things, which have used in the marriage have been given. First three folios are blank. Some folios are blank in the middle of the MS.

Beginning: श्री गणेशाय नमः ।। अथ विवाह पद्धतिः लिख्यते ।।

End: सर्वरोगोपशातये पात्रं सुवर्ण सहितं दद्यात्संकल्प पूर्वकम् ।।

Script: Devanāgarī

Size: 12.7 x 21.2 cm.

Lines:	3 to 10 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	146
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 24	**Manuscript No.:** 15348
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15348
Title of Work:	Viṣṇu Pratimā Vivāha Vidhiḥ
Title of Work in Sanskrit:	विष्णु प्रतिमा विवाह विधि
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Viṣṇu Pratimā Vivāha Vidhiḥ is a work of Karma Kāṇḍa. According to the MS The girl whose lagna and Grahas became much disturbed at the time of her birth then for the peace of Grahas whose marriage has done with the picture of Lord Śrī Viṣṇu. So that her future life become happy. Last folio of the MS is blank. The MS has bound in wrong pattern by mistake.
Beginning:	श्री रामाय नमः अथ विष्णुप्रतिमा विवाहविधिः कन्या स्नानयित्वा शुभ वस्त्रान् परिधापयित्वा स्वयमावांतः गणेशपूजनं अद्येह......... ।

End:	ॐ तत्सत् ब्राह्मश्च द्यौरस्यादात् पृथिवीत्वा प्रतिग्रह्णणात् स्वरित कोदाति चकामरतुतिं पठित्वा अनघाभव इति .नेर्वदेत् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	22 x 14.5 cm.
Lines:	22 to 24
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 25	**Manuscript No.:** 15302
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15302
Title of Work:	Śani Pradoṣa Vrata
Title of Work in Sanskrit:	शनि प्रदोष व्रत
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śani Pradoṣa Vrata has taken from Kedār Khaṇḍa of Skāṇḍa Purāṇa. The Pattern of Śani Pradoṣa Vrata has given in the MS. After ending Vrata Kathā the importance of this worship has been also given in 14 ślokas.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ कार्तिकादि मासेषु शनियुक्तत्रयोदश्यां शनि प्रदोष व्रतं स्कांदे।। लोमेश उवाच।।
End:	चतुर्विंशति कुर्वंति यथोक्तं फलमाप्नुयात्।।१४।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 19.8 cm.

Lines:	5 to 9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1863 Śake 1728
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	10
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 26

Manuscript No.: 15347

Subject: Karma Kāṇḍa

Accession No: 15347

Title of Work: Śivarātri Kathā

Title of Work in Sanskrit: शिवरात्रि कथा

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Śivarātri Kathā is a very famous Vrata of Hindus in worshipping Lord Śivā. The work has taken from Skāṇḍa Purāṇa. According to the MS who does Śivarātri Vrata gots the result like Aśwamedha Yajña.

Beginning: अथ अमांतमांतमासेन माघकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तत् चार्द्धरात्रिव्यापिन्यां कार्य्यं............ ।

End: संप्रार्थ्यतान्विप्रान्प्रणम्य च पुनः पुनः ततश्च स्वजनैः सार्द्धं स्वयं भुंजीत सव्रती ।।

Script: Devanāgarī

Size: 14 x 21.6 cm.

Lines:	12 to 14
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	18
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 27

Manuscript No.: 15295

Subject: Karma Kāṇḍa

Accession No: 15295

Title of Work: Satyanārāyaṇa Vrata Kathā

Title of Work in Sanskrit: सत्यनारायण व्रत कथा

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Satyanārāyaṇa Vrata Kathā is a very famous work in praise of God Satyanārāyaṇa. The work has taken from Skaṇḍa Purāṇa. This worship is doing in every house of Hindus. The ink is bleed on mostly folios due to this the text is not readable. All folios are worm eaten from the edges but the last folio is badly worm eaten therefore some text is missing. According to the MS who reads Satyanārāyaṇa Vrata Kathā his all sins have destroyed by the blessing of God Satyanārāyaṇa.

Beginning: ॐ श्री गणेशाय नमः अथ सत्यनारायण पूजा विधिः व्रती संक्रातौ पौर्णमास्यां.............. ।

End:	तस्य नश्यंति पापानि सत्यदेव प्रसादतः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 28 cm.
Lines:	6 to 7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1825
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	15
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 21.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 28 | **Manuscript No.:** 15318

Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15318
Title of Work:	Samgānām Sandhya
Title of Work in Sanskrit:	सामगानां सन्ध्या
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS the pattern of evening prayer (सन्ध्या विधि) has been given. The copier Durgādatta Miśra was the son of Gaṅgā Visan Miśra according to the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। अश सामगानां संध्या तत्रादौ प्रातः संध्या विधिर्लिख्यते ।
End:	अनायास प्रदायीनिकुर्य्यात्कर्मारापतंडित इति भोजनं ।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 10.7 cm.
Lines:	11 to 12

Copier's Name:	Durgādatta Miśra
Age:	Saṃvat 1848
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	9
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 29	**Manuscript No.:** 15331
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15331
Title of Work:	Saṁkaṣṭavrata Kathā
Title of Work in Sanskrit:	संकष्टव्रत कथा
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Saṁkaṣṭavrata Kathā is a very famous Vrata of Hindus. In this Vrata the worship of God Gaṇeśa has done. Mostly folios are worm eaten from edges. All folios of the MS are difficult to read. The work has taken from Skanda Purāṇa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। ऋषय उवाच।। द्ररिद्रसोक कष्टाद्यै।। पीडितानां च वैरिभिः।।
End:	पुत्रार्थी पुत्रमाप्नोति ....रोग प्रमुच्यते।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.3 x 18.5 cm.

Lines:	9 to 12
Copier's Name:	Bhawānī Dāsa
Age:	Saṃvat 1799
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	6
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 4.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 30	**Manuscript No.:** 15308
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15308
Title of Work:	Sandhyopāsanā
Title of Work in Sanskrit:	सन्ध्योपासना
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The pattern of Sandhyopāsanā has given in the MS. The author gave the description of Gāyatrī Mantra also. Some folios are ink stained.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री सामवेदाय नमः हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्यः।।
End:	अनेन प्रातर्मध्यानसायं संध्या संपूर्णम्।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.5 x 15 cm.
Lines:	6 to 7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1902

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Mangalsena
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	17
Condition:	Only water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 31 | **Manuscript No.:** 15336

Subject: Karma Kāṇḍa

Accession No: 15336

Title of Work: Homapaddhatiḥ

Title of Work in Sanskrit: होमपद्धतिः

Name of Author: Not metioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: The pattern of Homa (हवन) has given in the MS. Folio no. 1, 2 and 6 are missing from the MS. All folios are worm eaten from edges. The MS is incomplete. All folios are very difficult to read and some are not readable.

Beginning: ....दोयेन आवः सुवुध्न्या उपमास्यविष्टाः सतश्वजोनिम त्यतश्चविवः........... ।

End: आवाहवयेन्महा देव तस्मै कालात्मने नमः.......... .. ।

Script: Devanāgarī

Size: 9.5 x 21.5 cm.

Lines: 9 to 11

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	25
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 27.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 32	**Manuscript No.:** 15337
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15337
Title of Work:	Homapaddhatiḥ
Title of Work in Sanskrit:	होमपद्धतिः
Name of Author:	Not metioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The pattern of Homa (हवन) has given in the MS. Folio no. 16b is blank. The MS is incomplete. In this MS, different Gods and Their vehicles are also described.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अथ होम पद्धतिर्लिख्यते प्रतिज्ञावरणं चैव स्वस्ति पुण्याहवाचनं........... ।
End:	ॐ सूर्याचंद्रमसौ चंद्रस्यतां तपन् यज्ञस्य यज्ञस्य यज्ञार्थं यजमान।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.8 x 14 cm.
Lines:	8 to 10

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	33
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 2.6.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 33	**Manuscript No.:** 15351
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15351
Title of Work:	Haratālikā Vrata Vidhi
Title of Work in Sanskrit:	हरतालिका व्रत विधि
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Haratālikā Vrata Vidhi is a famous Vrata of Hindus. According to the MS, this Vrata is being done in the month of Bhādra Śukla Pakśa Tṛtiya. Who performs this Vrata contains the result of one thousand Aśvamedha Yajña (अश्वमेध यज्ञ). The story and importance of this Vrata has been given in the MS.
Beginning:	।। श्री गणेशाय नमः ।। मंदारमालांकुलितालकायै कपालमालांकिंत शेखराय ।।
End:	एतत्ते कथितं देवि तवाग्रे तु वरानने ।।
Script:	Devanāgarī

Size:	15.5 x 29 cm.
Lines:	13 to 16
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	2
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 34	**Manuscript No.:** 15247
Subject:	Karma Kāṇḍa
Accession No:	15247
Title of Work:	Śrāddhaviveka
Title of Work in Sanskrit:	श्राद्धविवेक
Name of Author:	Rudradhar
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The description of Śrāddha has given in the MS. The first to ten folios are missing from the MS therefore, it starts from folio no. eleven.
Beginning:	..............कृतःस्य शूद्रस्य वृषोत्सर्गानधिकारप्रामौ कृष्णे कृष्णेनाप्यं त्यजन्मन इति शूद्रं.............. ।
End:	नित्य श्राद्धीय मन्त्रं ब्राह्मणाय प्रतिपादयेत् जले वा क्षिपेत् ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 28.5 cm.
Lines:	12 to 14 (Different)
Copier's Name:	Bholanātha

Age:	Saṃvat 1779 Śake 1644
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	73
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Kāvya

काव्य

Form No.: 35	**Manuscript No.:** 15065
Subject:	Kāvya
Accession No:	15065
Title of Work:	Kumārsambhavam
Title of Work in Sanskrit:	कुमारसम्भवम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Not Mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kumārsambhavam is a very famous epic of Kālidāsa. Kālidāsa composed this epic in Seventeen chapters. The MS is dealing only first to seven chapters. The marriage of Lord Śiva and Pārvati is described in it.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः रामः श्री सरस्वत्यै नमः श्रेयसे। अस्त्युत्तररस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः............... ।
End:	अपि शयनसखीभ्यो दत्तवा चा कथंचित्प्रमथमुखविकारैर्हासयामासगौरीम् ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15.4 x 31.4 cm.
Lines:	14 to 21

Copier's Name:	Hari Prasāda Miśra
Age:	Saṃvat 1906
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	19
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	According to the marginal notes, Harī Prasāda wrote the MS in south area.
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 36	**Manuscript No.:** 15066
Subject:	Kāvya
Accession. No:	15066
Title of Work:	Kumārsambhavam
Title of Work in Sanskrit:	कुमारसम्भवम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kumārsambhavam is a very famous epic composed by Kālidāsa. He divided his book in seventeen chapters. The MS is dealing with first to seven chapters. Every chapter has a different name. The Author described the marriage of Lord Śiva and Pārvati.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजःपूर्वापरौतोयनिधीविगाह्यस्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।
End:	नवपरिणयलज्जाभूषणां तत्र गौरीवदनमपहरंतीं तत्कृतोत्क्षेपमीशः अपि शयन सखीभ्योदत्तवाचं कथंचित्प्रथममुखविकारैर्हासयामास गूढं।।
Script:	Devanāgarī

Size:	12.4 x 30.3 cm.
Lines:	9 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	33
Condition:	Worm eaten, water stained, paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 37 | **Manuscript No.:** 15077

Subject: Kāvya

Accession No: 15077

Title of Work: Kirātārjunīyam

Title of Work in Sanskrit: किरातार्जुनीयम्

Name of Author: Bhāravi

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Kirātārjunīyam is a famous epic of Bhāravi. Bhāravi composed this epic in eighteen sargas. The MS contains one to thirteen sargas complete while the fourteen sarga is incomplete.

Beginning: स्वस्ति श्री गणेशाय नमः। श्रियः कुरूणामधिपस्य पालनीं प्रजासु वृत्तिं यमयुंक्त वेदितुं।

End: असंभवन् भूधरराजकुक्षिः...................... ।।

Script: Devanāgarī

Size: 13 x 30.2 cm.

Lines: 8 to 11

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not metioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	74
Condition:	Worm eaten, water stained, new guarding and ink stained.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.61. According the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 38	**Manuscript No.:** 15085
Subject:	Kāvya
Accession No:	15085
Title of Work:	Gītagovindam
Title of Work in Sanskrit:	गीतगोविन्दम्
Name of Author:	Jayadeva
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Jayadeva, the son of Bhōjadeva and Rāmādevī composed Gītagovindam. There are twelve sargas in the MS. This is a famous lyric poem describing amourous activities of Śrī Krișṇa and Rādhā. Every sarga has its different name. The last śloka of the MS is not complete. Folio no.1b is blank.
Beginning:	श्री गणपतये नमः ।। श्री रामाये नमः ।। मेघैर्मेदुरमंबरं वनुभवः श्यामास्तमालद्रुमैः ।।
End:	तद्रोमावलिमौक्तिंकावलियुगे वेणीभ्रमंबिभ्रती ।। तत्ताहलादि कुचप्रयोगफ....... ।।
Script:	Devanāgarī

Size:	8 x 16.2 cm.
Lines:	4 to 6
Copier's Name:	Brijagopāl
Age:	Saṃvat 1888
Place of Copying:	Cīraghāta
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 39 **Manuscript No.:** 15087

Subject: Kāvya

Accession No: 15087

Title of Work: Gītagovindam

Title of Work in Sanskrit: गीतगोविन्दम्

Name of Author: Jayadeva

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Jayadeva, son of Bhojdeva and Rāmādevī, composed Gītagovindam. There are twelve chapters named sarga. Every sarga has a different name. This is a famous lyric poem describing amourous activities of Śrī Krisṇa and Rādhā. folio no.1of Ms is missing from upper side. The folio no. 28 and 29 are missing.

Beginning: ....मेघैमेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमैर्नक्त भीरुरयं........ ।।

End: यावद्रावंश्रृंगार सारस्वतमिह जयदेवस्य विष्वग्वचांसि ।।

Script: Devanāgarī

Size:	9.2 x 14.5 cm.
Lines:	8
Age:	Saṃvat 1915
Copier's Name:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	54
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 40	**Manuscript No.:** 15080
Subject:	Kāvya
Accession No:	15080
Title of Work:	Ghaṭakarpara Kāvya
Title of Work in Sanskrit:	घटकर्पर काव्य
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Tārācanda
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ghaṭakarpara Kāvya is composed by Ghaṭakarpara. There are only 22 verses in this Kāvya. Its plot is like Meghdūta. In this poem, a wife sent Megh near her husband by giving her message. The MS is with commentary by Tarācanda. Many folios of the MS have written inverse. Folio no.1a contains some unknown material from a medical manuscript and is totally unrelated to the main corpus. The handwriting of the MS is difficult to read.
Beginning:	श्रीगणेशाय नमः।। प्रोषितप्रमदयेदमुच्यत इति षष्ठश्लोकेनान्वयः....... ।
End:	प्राप्य शपेयं शपथमित्यर्थः।

Script:	Devanāgarī
Size:	12.2 x 22.5 cm.
Lines:	6 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	9
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 41	**Manuscript No.:** 15068
Subject:	Kāvya
Accession No:	15068
Title of Work:	Nalodaya
Title of Work in Sanskrit:	नलोदय
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS contains four chapters. The MS is a commentary named Sārasaṃgrahini of Suvarṇa. The story of King Nala is described in it. The Kāvya is ascribed to Kālidāsa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। सांबं लंबोदरं नत्वा हृदिकृत्वागुरोः पदम्।
End:	आयतमाय अतिशयलाभाय जनाय सुखदं कं यथैवहरिमिव आयत्प्राप।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.5 x 29 cm. (Different)
Lines:	11 to 16

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	32
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 42	**Manuscript No.:** 15083
Subject:	Kāvya
Accession No:	15083
Title of Work:	Nītiśatkam
Title of Work in Sanskrit:	नीतिशतकम्
Name of Author:	Bhartṛhari
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nītiśatkam is composed by Bhartṛhari. There are 107 ślokas in it. He described methods on foolish, scholar, gentle, benevolence, patience etc.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। यां चिंतयामि सततं मयिसाविरक्ता साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोन्यसक्तः.......... ।।
End:	कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मर नित्यमनित्यतां ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 24.1cm.
Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	15
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No

Form No.: 43	**Manuscript No.:** 15069
Subject:	Kāvya
Acession. No:	15069
Title of Work:	Naiṣadhīyacaritam
Title of Work in Sanskrit:	नैषधीयचरितम्
Name of Author:	Śrī Harṣa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	This is a very famous epic of Śrī Harṣa. He divided it in twenty-two chapters. The manuscript is dealing with first three chapters. This is the story of King Nala and Damyanti. In this epic, a swan helps king and queen to meet each other. The fourth chapter of MS is incomplete.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः। निपीय यस्य क्षितिरक्षिणः कथास्तथाद्रियंते न बुधा सुधामपि।
End:	दहनमाशु विंशंति कथंस्त्रि.............. ।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.2 x 27.2 cm.

Lines:	8 to 15
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	No
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	27
Condition:	Water stained
Seal:	Not available
Marginal Notes:	According to the marginal notes, Śrī Harṣa lived in second half of the 12th century A.D.
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 44	**Manuscript No.: 15070**
Subject:	Kāvya
Accession No:	15070
Title of Work:	Meghadūtam
Title of Work in Sanskrit:	मेघदूतम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Samaya Sundar Gaṇi
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Meghadūtam is a famous lyrics poem of Kālidāsa. The MS is with a commentary named Bālabodhini by Samaya Sundara Gaṇi.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः। श्री सरस्वत्यै नमः। श्रेयसे ॐ श्री सर्वज्ञं जिनं नुत्वाग्रणिः समय सुदरः.......... ।
End:	अतएव हृस्टचित्तौ प्रीतमानसौ जातावि‌ति मन्दाक्रान्ता छंदः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.8 x 26 cm. (Different)
Lines:	10 to 16

Copier's Name:	Giridhārīlāla Śarmā
Age:	Saṃvat 1906 Śake 1771
Place of Copying:	No
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	49
Condition:	Worm eaten and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 6.6.61. According the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 45	Manuscript No.: 15074
Subject:	Kāvya
Accession No:	15074
Title of Work:	Meghadūtam
Title of Work in Sanskrit:	मेघदूतम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Meghadūtam is a very famous lyrics poem of Kālidāsa. Kālidāsa divided it into two parts Purvamegha and Uttaramegha. The MS contains both the parts. In it, Yakṣa sent Megha near his wife to deliver his message.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः। कश्चित् कांताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः........... ।।
End:	श्रुत्वा वार्तां जलद कथितां तं धनेशोपि सद्यः.. .... ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.3 x 27.5 cm. (Different)
Lines:	8 to 12

Copier's Name:	Bhavānanda
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	21
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.4.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 46	**Manuscript No.:** 53
Subject:	Kāvya
Accession No:	20172
Title of Work:	Meghadūtam
Title of Work in Sanskrit:	मेघदूतम्
Name of Author:	Kālīdāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Meghadūtam is a very famous Lyric poem of Kālīdāsa. In this poem, A Yakṣa sent Megha near his wife by giving his message. Mostly folios are worm eaten from edges due to this some text is also missing. The signature of Scriber has been also given in English in the MS. Last folio of the MS is blank.
Beginning:	..................ॐ कश्चित्कांता विरह गुरुणा स्वाधिकार प्रमत्तः.................. ।
End:	नत्वार्यायाश्चरण कमलं कालिदासश्चकार १२७ ।।
Script:	Devanāgarī

Size:	10.2 x 20.3 cm.
Lines:	8
Copier's Name:	Ghāsīrāma
Age:	Saṃvat 1892
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Copier self
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	22
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 47	**Manuscript No.:** 15071
Subject:	Kāvya
Accession No:	15071
Title of Work:	Raghuvaṃśam
Title of Work in Sanskrit:	रघुवंशम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Raghuvaṃśam is a very famous epic of Kālidāsa. Kālidāsa composed this in ninteen Sargas. The MS contains only one to five Sargas. Every Sarga has a different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। श्री गंगायै नमः। स जयतु सिंधुरवदनो देवो यत्पादपंकजस्मरणम्।
End:	कुशल विरचितानुरुपवेषः क्षितिपसमाजमगात् स्वयंवरस्थः।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 28.8 cm.
Lines:	11 to 14

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	20
Condition:	Worm eaten, ink stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 48	**Manuscript No.:** 15072
Subject:	Kāvya
Accession No:	15072
Title of Work:	Raghuvaṃśam
Title of Work in Sanskrit:	रघुवंशम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Janārdana Bhaṭṭa
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Raghuvaṃśam is a very famous epic of Kālidāsa. The MS is with commentary named Śiśuprabodhani by Janārdana Bhaṭṭa. The MS has six complete sargas. The commentary ends abruptly after the seventh śloka of sixth sarga.
Beginning:	ॐ नमः श्री सारदावरदात्र्यै पदे वाक्ये प्रमाणे च हं सम्यगधीतिमान्।।
End:	प्रज्ञाधिकयामंडनकर्त्री एक एव चरणेसलाक्ता। अतोस्मिन् अपरस्मिन्न नलंकृतोऽपि।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.2 x 27 cm. (Different)

Lines:	10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	113
Condition:	Worm eaten, water stained, ink stained with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 49	**Manuscript No.:** 15086
Subject:	Kāvya
Accession No:	15086
Title of Work:	Raghuvaṃśam
Title of Work in Sanskrit:	रघुवंशम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Mallinātha
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Raghuvaṃśam is a famous epic of Kālidāsa. There are twelve sargas in the MS. The MS is with commentary named Sanjīvinī by Mallinātha.The MS is in brittle condition. Many folios are damage half or quarter. Some of them are in the hundreds of pieces. The conservation work has done in any lab using new techniques supported by handmade paper. The last folio of the MS is inverse. There is a Kundli on the last folio.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। मातापितृभ्यां जगतो नमो वामार्द्धजानये।
End:	राज्याभिषे सूचकमितिभावः।

Script:	Devanāgarī
Size:	10.7 x 32.2 cm.
Lines:	8 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1850
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
No. of Folios:	186
Quality of Paper:	Bad
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 50	**Manuscript No.:** 15075
Subject:	Sanskrit Kāvya
Accession No:	15075
Title of Work:	Rāmakriṣṇa Kāvyam
Title of Work in Sanskrit:	रामकृष्ण काव्यम्
Name of Author:	Paṇḍita Sūrya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Rāmakriṣṇa Kāvyam is an extremely artificial poem composed by Paṇḍita Sūrya. It is read from left to right in first line and right to left in second line. The folio 1a of MS is torn from right side due to this some text is missing. The Kāvya contains a commentary of the Author himself.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। श्री मन्मंगलमूतिमार्त्रिसमनं नत्वाविदित्वा ततः ।।
End:	सो विपुनः प्रतीपमाने सुमद्रिं प्रभवेत्किमेतौः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.5 x 31.7 cm.

Lines:	8 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1904
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	No
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	20
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 28.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 51	**Manuscript No.:** 12
Subject:	Kāvya
Accession No:	22697
Title of Work:	Rākṣasakāvyam
Title of Work in Sanskrit:	राक्षसकाव्यम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Author himself
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Rākṣasakāvyam is a small poem comprising 20 stanzas. In which a forester describes various pastoral objects for the gratification of his mistress. The MS has a commentary.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः कश्चिदिसनिर्दृष्ठः नापुरूषः इमां वक्ष्यमाणां गां वाचं वनितां वभाषेउक्तवान्............ ।
End:	किं विधः सुमनाः सुष्ठु शोभनोमनोयस्य सषुभाना पुनः किं विधः अहिनः सुन्दर इत्यर्थः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.1 x 31.9 cm.

Lines:	8 to 12
Copier's Name:	Gaṅgā Prasāda Paṇḍita
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	6
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 52

Manuscript No.: 15081

Subject: Kāvya

Accession No: 15081

Title of Work: Vairāgyaśatakam

Title of Work in Sanskrit: वैराग्यशतकम्

Name of Author: Bhartṛhari

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Vairāgyaśatakam is composed by Bhatṛhari. There are 108 ślokas in it. The Author divided it into ten groups like condemnation of desire, description of the working of time, workship of Śiva etc. Folio no. one is slightly worm eaten from upper side.

Beginning: श्रीमते रामचंद्राय नमः।। ॐ दिक्कालद्यनवछिन्नानंत चिन्मात्रमूर्त्तये स्वानुभूत्येकमानाय नमः शांताय तेजसे।

End: एते तस्य कुटुंबिनोवदसके कस्माद् भयं योगिनाम्।।

Script: Devnāgarī

Size: 13.2 x 21 cm.

Lines:	13 to 16
Copier's Name:	Hari Prasāda Miśra
Age:	Saṃvat 1910
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	10
Condition:	Water stained and new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 27.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 53	**Manuscript No.:** 15082
Subject:	Kāvya
Accession No:	15082
Title of Work:	Vairāgyaśatakam
Title of Work in Sanskrit:	वैराग्यशतकम्
Name of Author:	Bhartṛhari
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Bhartṛhari composed Vairāgyaśatakam. He composed it in 102 ślokas. He divided it into ten groups like condemnation of desire, a comparison as to how a monk stands to a king, a self realized characterized by highest spiritual freedom etc.
Beginning:	ॐ श्री महामंगलमूर्त्तये नमः। दिक्कालाद्यनवछिन्नानंत चिन्मात्रमूर्त्तये स्वानुभूत्यैकमानाय नमः शांताय तेजसे।
End:	ब्रह्माण्डोदुम्बरान्तर्मशकवदपरे प्राणिनो जातनष्टाः।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 24.1cm.

Lines:	9 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1886
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	16
Condition:	Water eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 54	**Manuscript No.:** 15067
Subject:	Kāvya
Accession No:	15067
Title of Work:	Śiśupālavadham
Title of Work in Sanskirt:	शिशुपालवधम्
Name of Author:	Māgha
Name of Commentator:	Mallinātha
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	This is a very famous epic of Māgha. Māgha wrote this epic in twenty chapters. The MS is dealing only one and two chapters. The MS is with commentary named Sarvaṃkaṣā by Mallinātha sūri.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। इन्दीवरदलश्याममिंदिरानंदकंदलं..................... ।।
End:	ननमयययुतेयं मानिनी भोगिलोकैरितिलक्षणात् ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 30.4 cm.
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Saṃvat 1857
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not bad
No. of Folios:	53
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Kośa

कोश

Form No.: 55	**Manuscript No.:** 15221
Subject:	.)ictionary
Accession No:	15221
Title of Work:	Anekārtha Dhvanimañjarī
Title of Work in Sanskrit:	अनेकार्थ ध्वनिमंजरी
Name of Author:	Amar Siṃha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Anekārtha Dhvanimañjarī is a Sanskrit dictionary composed by Amar Siṃha. The MS contains four Kāṇḍa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः शब्दाभोधिर्यतोः नंतोकुतोप्यगम अव्ययात् स्वानुवोधैक मानाय तस्मै वागात्मने नमः ।।
End:	मासौयौ चैत्र वैशाखौ तावेव मधुमाधवौ ज्येष्ठाषाढ़ा वुभा पक्षौ तौ च शुक्र शुचीवुधैः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.5 x 26 cm. (Different)
Lines:	7 to 12
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 56	**Manuscript No.:** 15216
Subject:	Dictionary
Accession No:	15216
Title of Work:	Amarakośa
Title of Work in Sanskrit:	अमरकोश
Name of Author:	Amar Siṃha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Amara kośa is a Sanskrit dictionary composed by Amar Siṃha. Folio no.1 has bound inverse therefore, it is blank. All folios are difficult to read due to oldness, water stains and being worm eaten.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः ।। विशेष्यनिघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि ।।
End:	Not readable
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 22.5 cm. (Different)
Lines:	8 to 10

Copier's Name:	Rāma Krisṇa
Age:	Śake 1614
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very bad
No. of Folios:	39
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 57

Manuscript No.: 15217

Subject: Dictionary

Accession No: 15217

Title of Work: Amarakośa

Title of Work in Sanskrit: अमरकोश

Name of Author: Amar Siṃha

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: The MS is a Sanskrit dictionary composed by Amar Siṃha. Some folios are missing from borders due to being worm eaten. Some handwriting is also missing.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। हे अनघाः भवद्भिः सधीराः सेव्यताम्।।

End: पाताल भोगि नरकं वारि चैषां च संगतं।।

Script: Devanāgarī

Size: 10.5 x 30 cm.

Lines: 8 to 12

Copier's Name: Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	83
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 58	**Manuscript No.:** 15212
Subject:	Dictionary
Accession No:	15212
Title of Work:	Amarakośa (Pratham Kāṇḍa)
Title of Work in Sanskrit:	अमरकोश (प्रथम काण्ड)
Name of Author:	Amar Siṃha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Amarakośa is a Sanskrit dictionary composed by Amar Siṃha. The MS contains Pratham Kāṇḍa. All folios are badly worm eaten. Some text is also missing.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। यस्य ज्ञानदयासिंधोरगाधस्या नघा गुणा।।
End:	पाताल भोगि नरकं वारि चैषां च संगतं।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 28.7 cm
Lines:	7 to 11
Copier's Name:	Girdharilāla Miśra

Age:	Saṃvat 1907 Śakc 1772
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	21
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 21.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 59	**Manuscript No.:** 15218
Subject:	Dictionary
Accession No:	15218
Title of Work:	Amarakośa (Pratham Kāṇḍa)
Title of Work in Sanskrit:	अमरकोश (प्रथम काण्ड)
Name of Author:	Amar Siṃha
Name of Commentator:	Bhānujī Dīkṣita
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a Sanskrit dictionary composed by Amar Siṃha. The MS is bound in reverse position. Folio no. 7 is torn from right side. Some folios have ink spots.
Beginning:	श्रीमते रामानुजाय नमः वल्लवीवल्लभ नत्वागिरं भट्टोजिदीक्षितं आमरे विद्धे व्याख्यां मुनित्रयमतानुगाम्।।
End:	पाताल भोगि नरकं वाारिश्चैषां च संगतं।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 26 cm.
Lines:	8 to 14
Copier's Name:	Thākur Dāsa Jī Miśra

Age:	Saṃvat 1824
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	19
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 60	**Manuscript No.:** 15213
Subject:	Dictionary
Accession No:	15213
Title of Work:	Amarakośa (Dwitīya Kāṇḍa)
Title of Work in Sanskrit:	अमरकोश (द्वितीय काण्ड)
Name of Author:	Amar Siṃha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Amarakośa is a Sanskrit dictionary composed by Amar Siṃha. The MS contains Dwitīya Kāṇḍa. All folios are badly worm eaten. All folios are difficult to read due to oldness, water and ink stained.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। वर्गाः पृथ्वीपुर क्ष्माभृद्वनौषधि नगादिभिः ।
End:	ताद्वपांदन्यतो वृत्ता ब्रूह्यलिंङ्गान्तरेऽर्पितः ।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 25.5 cm
Lines:	9 to 11
Copier's Name:	Lāljīmala

Age:	Saṃvat 1896 (Difficult to read)
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	46
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 28.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 61	**Manuscript No.:** 15214
Subject:	Dictionary
Accession No:	15214
Title of Work:	Amarakośa (Dwitīya Kāṇḍa)
Title of Work in Sanskrit:	अमरकोश (द्वितीय काण्ड)
Name of Author:	Amar Siṃha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a Sanskrit dictionary composed by Amar Siṃha. The MS contains Dwitīya Kāṇḍa from Linganuśāsna. There is a blank folio in the last of the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री सरस्वत्यै नमः।। वर्गापृथ्वी पुरक्ष्माभृत.......... ।
End:	........भूरिप्रयोगत्वा देकस्मिन्ये त्रयौगिका।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 29 cm (Different)
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Śivadatta Khedāpati and Girdhārī Lāla
Age:	Saṃvat 1873

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Not good

No. of Folios: 40

Condition: Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.

Seal: The technical restoration and conservation work of the MS has been donc by National Archives Govt. of India in 12.5.61. According to the seal of last page.

Marginal Notes: Not given

Memory Notes: Not given

Decorative Ornament: No

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: Not mentioned

Form No.: 62	**Manuscript No.:** 15215
Subject:	Dictionary
Accession No:	15215
Title of Work:	Amarakośa (Tṛtīya Kāṇḍa)
Title of Work in Sanskrit:	अमरकोश (तृतीय काण्ड)
Name of Author:	Amar Siṃha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Amarakośa is a Sanskrit dictionary composed by Amar Siṃha. The MS contains Tṛtīya Kāṇḍa in general Linganuśāsna.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। विशेष्य निघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि।।
End:	षट्संज्ञकास्त्रिषु समायुष्मद स्मत्तिङ व्ययम् परं विरोधे शेषं तु ज्ञेयं शिष्टप्रयोगतः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 29.2 cm.
Lines:	10 to 16
Copier's Name:	Girdhārī Lāla Miśra
Age:	Saṃvat 1907 Śake 1772

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	17
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 63	**Manuscript No.:** 15220
Subject:	Dictionary
Accession No:	15220
Title of Work:	Amarakośa (Tṛtiya Kāṇḍa)
Title of Work in Sanskrit:	अमरकोश (तृतीय काण्ड)
Name of Author:	Amar Siṃha
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a dictionary of Sanskrit composed by Amar Siṃha.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः विशेष्य निघ्नैः संकीर्णैर्नानार्थैरव्ययैरपि लिंगादि संग्रहैर्वगाः सामान्ये वर्ग संश्रयाः ।।
End:	तत्सौरमें नभस्वंतः संतस्त तम्वन्ति तद्गुणान्।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 26 cm.
Lines:	10 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	24
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 64	**Manuscript No.:** 15219
Subject:	Dictionary
Accession No:	15219
Title of Work:	Amarakośa Padacandrika
Title of Work in Sanskrit:	अमरकोश पदचन्द्रिका
Name of Author:	Amar Siṃha
Name of Commentator:	Rāyamukuṭa Maṇi and Bṛhaspati
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Amarakośa Padcandrika is a work of Lexicography. The MS is a commentary of Rayamukuṭa and Bṛhaspati on Amara Kośa. Some folios are slightly worm eaten from borders. Last 12 folios have a big hole due to worm eaten. Therefore, some text is missing.
Beginning:	ॐ श्री महामंगलमूर्त्तये श्री विनायकाय नमः विशेष्येत्यादि वक्ष्यमाणेत्र सामान्ये सामान्यकांडे विशेष्यानिघ्नादिभिः.............. ।
End:	महाकवीनां च प्रयोगात् ज्ञेयं .... पिस्त्रीपोटानपुंसकेपिस्त्रीत्यादि कमूहनीयमिति ।
Script:	Devanāgarī

Size:	17.5 x 38 cm.
Lines:	10 to 16
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	103
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 6.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Nyāya

न्याय

Form No.: 65	**Manuscript No.:** 15254
Subject:	Nyāya
Accession No:	15254
Title of Work:	Tarka Saṁgrahaḥ
Title of Work in Sanskrit:	तर्कसंग्रह
Name of Author:	Annam Bhaṭṭa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tarka Saṁgrahaḥ is a work on Nyāya philosophy composed by Annam Bhaṭṭa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। निधाय ह्रदि विश्वेशं विधाय गुरुवंदनं बालानां सुख बोधाय क्रियते तर्क संग्रहः १।
End:	सप्तैव पदार्थानां इति सिद्धं।। कणाद न्याय मतयो वालव्युत्पत्ति सिद्धये।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.5 x 28.3 cm.
Lines:	7 to 9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1855

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	9
Condition:	Water stained and paper pasting only on folio no. 1.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 66	**Manuscript No.:** 15255
Subject:	Nyāya
Accession No:	15255
Title of Work:	Tarka Saṁgrahaḥ
Title of Work in Sanskrit:	तर्कसंग्रह
Name of Author:	Annam Bhaṭṭa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tarka Saṁgrahaḥ is a work on Nyāya philosophy composed by Annam Bhaṭṭa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। निधाय ह्रदि विश्वेशं विधाय गुरुवंदनं बालानां सुख बोधाय क्रियते तर्क संग्रहः१।।
End:	सुखं दुखं एक विंशति प्रकार कमितिदिक्............।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 27 cm.
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentiioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 67	**Manuscript No.:** 15256
Subject:	Nyāya
Accession No:	15256
Title of Work:	Tarka Saṁgraha
Title of Work in Sanskrit:	तर्कसंग्रह
Name of Author:	Annam Bhaṭṭa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tarka Saṁgraha is a work of Nyāya philosophy composed by Annam Bhaṭṭa. Some irrelevant matter has written of folio no. 1a.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री सरस्वत्यै नमः। निधाय हृदि विश्वेशं विधाय गुरु वंदनम्।।
End:	काणादिन्यायमतयोः बालव्युत्पत्तिसिद्धये।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.5 x 21.7 cm.
Lines:	9 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1831

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	13
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 68	**Manuscript No.:** 15253
Subject:	Nyāya
Accession No:	15253
Title of Work:	Tarka Saṁgraha Dīpika
Title of Work in Sanskrit:	तर्कसंग्रह दीपिका
Name of Author:	Annam Bhaṭṭa
Name of Commentator:	Author himself
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tarka Saṁgraha Dīpika is a well-known work on the Nyāya Vaiṣeśika philosophy with the commentary named Dīpika by the Author himself. Folio no. 10 has bound inverse by mistake.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः श्री गुरुभ्यो नमः विश्वेश्वरं साम्बमूर्तिं प्रणिपत्य गिरं गुरुं टीकां शिशुहितां कुर्वे तर्कसंग्रहदीपिकां।।
End:	साक्षात् तस्मात्पदार्थ ज्ञानान्मोक्षः परमप्रयोजनमिति सर्वं रमणीयम्।
Script:	Devanāgarī
Size:	18.5 x 32.5 cm.
Lines:	12 to 15
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not metioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 69	**Manuscript No.:** 15257
Subject:	Nyāya
Accession No:	15257
Title of Work:	Tarka Sudhā Dhārā with commentary
Title of Work in Sanskrit:	तर्कसुधा धारा टीका सहित
Name of Author:	Tīkārāma Śarma
Name of Commentator:	Author himself
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tarka Sudhā Dhārā is a work on Nyāya Philosphy composed by Tīkārāma Śarmā. All handwriting is difficult to read. There is a commentary called Tarka Dhārā.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः शंभोरंहि युगं प्रणम्य निखिल स्वीयैव............ ।
End:	सदा चिरं श्रयति सर्वेषां प्रमोद जननी नृणां २ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 19.3 cm.
Lines:	11 to 15
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Saṃvat 1918
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	29
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 70	**Manuscript No.:** 15183
Subject:	Nyāya
Accession No:	15183
Title of Work:	Muktāvalī Saṭika
Title of Work in Sanskrit:	मुक्तावली सटीक
Name of Author:	Viśvanātha
Name of Commentator:	Mahādeva
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nyāya Siddhanta Muktāvalī Satika is a celebrated book of Nyāya Vaiśeṣika Philosophy written by Viśvanātha Tarkapañcānana. This MS contains a commentary on it authored by Mahādeva. Folio first and last is blank.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः लक्ष्मीपादयुगं प्रणम्य पितरं श्रीबालकृष्णाभिधं भारद्वाज कुलांबुधौ विधुमिव श्री गौरवास्यांबुजात्. .... ।
End:	सर्वदैवेति ध्यानाद्यभावेऽपीत्यर्थः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13 x 31.2 cm.

Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	92
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 12.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 71	**Manuscript No.:** 15258
Subject:	Nyāya
Accession No:	15258
Title of Work:	Saṃgativāda
Title of Work in Sanskrit:	संगतिवाद
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Saṃgativāda is a work on Nyāya philosophy.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। जायते चेति।। कार्येज्ञाते कारणः त्वस्य ज्ञानात्कारण ज्ञानमिष्ट साधनमित्याकारक...।
End:	एवं च सर्वत्रपूर्वापरनिरुपण विषययोः संबधं एव संगतिः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 19.6 cm.
Lines:	8 to 11
Copier's Name:	Chandrasena
Age:	Saṃvat 1918
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	6
Condition:	New guarding only on folio no.1.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Purāṇa

पुराण

Form No.: 72	**Manuscript No.:** 15263
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15263
Title of Work:	Kalki Purāṇa
Title of Work in Sanskrit:	कल्कि पुराण
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Kalki Purāṇa is a work of Purāṇa. The work is belonging to Bhaviṣya Purāṇa. The MS contains thirty-five chapters called Adhayāyas. After ending the MS 7 lines are given on folio 46b which have been written inverse.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः सेंद्रा देवगणा मुनीश्वरगणा लोकाः सपालास्सदा स्वं स्वं कर्मसुसिद्धये प्रतिदिनं................१।।
End:	कलिकुल विनिहंता सत्य धर्म प्रणेता कलयतुकुशलंवः कल्किनूपः स्वनूपः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15 x 34 cm.

Lines:	13 to 17 (Different)
Copier's Name:	Yamunādāsa Gurjar
Age:	Saṃvat 1906
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	46
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 73	**Manuscript No.:** 15237
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15237
Title of Work:	Gargasaṃhitā Goloka Khaṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	गर्गसंहिता गोलोक खण्ड
Name of Author:	Ṛṣi Garga
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gargasaṃhitā Goloka Khaṇḍa is a Puranic work composed by Ṛṣi Garga. The stories of Lord Krisṇa have given in the MS. There are twenty Adhayāyas in the MS. Every Adhayāya has its different name. In the last of the MS, some folios are not bound in sequence by mistake.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तम देवी सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् १।।
End:	यो नित्यं पठते सम्यक भक्ति भाव समन्वितः स गछेत् कृष्ण चंद्रस्य गोलोक प्रकृतेः परं ४०।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 33.5 cm.

Lines:	10 to 15
Copier's Name:	Hari Prasāda Miśra
Age:	Saṃvat 1882
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	30
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 74	**Manuscript No.:** 15238
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15238
Title of Work:	Gargasaṃhitā Girirāja Khaṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	गर्गसंहिता गिरिराज खण्ड
Name of Author:	Ṛṣi Garga
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gargasaṃhitā Girirāja Khaṇḍa is a Puraṇic work composed by Ṛṣi Garga. There are eleven Adhayāyas in the MS. Every Adhayāya has its different name. The life stories of Śrī Krisṇa have given in the MS.
Beginning:	श्री गणपतये नमः।। श्री बहुलाश्व उवाच।। कथं दधार भगवन् गिरि गोवर्द्धनंपरं उच्छिलींध्रयथा वालो हस्तेनैकेनलीलया १।।
End:	देवराज इव सोत्र समेति नंदराज इवशातिममत्र २५।।
Script:	Devanāgarī
Size:	13.8 x 28.6 cm.
Lines:	12 to 14

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1892
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	No
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	15
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 75	**Manuscript No.:** 15273
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15273
Title of Work:	Gargasaṃhitā Girirāja Khaṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	गर्गसंहिता गिरिराज खण्ड
Name of Author:	Ācarya Garga
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gargasaṃhitā Girirāja Khaṇḍa is a Paurāṇic work composed by Ṛśī Garga. The MS contains eleven chapters called Adhayāya. Every chapter has a different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री बहुलाश्व उवाच।। कथं दधार भगवान् गिरि गोवर्धनं परं।।
End:	देवराज इव सोत्र समेति नंद राज इव शांति ममत्र २५।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 32.7 cm.

Lines:	9 to 12
Copier's Name:	Harkrişņa Pant
Age:	Saṃvat 1883
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	20
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 76	**Manuscript No.:** 15235
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15235
Title of Work:	Gargasaṃhitā Balabhadra Khaṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	गर्गसंहिता बलभद्र खण्ड
Name of Author:	Ṛṣi Garga
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gargasaṃhitā Balabhadra Khaṇḍa is a Pauraṇic work giving the life stories of Śrī Krisṇa and Duryodhana said by many Ṛṣi Munis. There is a blank folio in the last of the MS. There are twelve Adhayāyas in the MS. Every Adhayāya has its different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री राधा कृष्णाय नमः।। बहुलाश्व उवाच।। श्रतुंतवसुदवाब्रह्मन्मंगलं परमादभुतम्....... ।
End:	श्रृणोतियो धामहरेः सयातिविशो कमानंदम खंडरुपम्।
Script:	Devanāgarī
Size:	17 x 33.2 cm.

Lines:	14 to 18
Copier's Name:	Giridhārī Lāla Miśra
Age:	Saṃvat 1911
Place of Copying:	Middle Rāmkṣetra
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	18
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 77	**Manuscript No.:** 15234
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15234
Title of Work:	Gargasaṃhitā Mathurā Khaṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	गर्गसंहिता मथुरा खण्ड
Name of Author:	Ṛsi Garga
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gargasaṃhitā Mathurā Khaṇḍa is a Puraṇic work composed by Ṛṣi Garga. In the MS there are the stories related to Śrī Kriṣṇa. There are 25 Adhayāyas in the MS. Every Adhayāya has its different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः वसुदेवसुतंदेवं कंसचाणूरमर्द्दनं देवकीपरमानंदं कृष्णं वंदे जगद्गुरुं।। १।।
End:	विजित्य विघ्नात्प्रविजित्यनाकपान्गोलोक धाम प्रवरं प्रयातिसः ३८।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 33.4 cm.
Lines:	12 to 14

Copier's Name:	Harī Prasād Miśra
Age:	Saṃvat 1889
Place of Copying:	Nyonḍhanā Nagar
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	36
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 78	**Manuscript No.:** 15236
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15236
Title of Work:	Gargasaṃhitā Mādhurya Khaṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	गर्गसंहिता माधुर्य खण्ड
Name of Author:	Ṛṣi Garga
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gargasaṃhitā Mādhurya Khaṇḍa is a Puraṇic work composed by Sage Garga. The life stories of Lord Śrī Kriṣṇa have given in the MS. There are twenty-four Adhayāyas in the MS. Every Adhayāya has its different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अतसीकुसुमोपमेय कार्तिर्यमुनाकूल कदंवमध्यवर्ती नवगोपवधूदुकूल शालीवनमालीवितनो तुमंगलानि १।।
End:	कामदं पठतांशश्वत्त्किंभूयः श्रोतुमिच्छसि।।
Script:	Devanāgarī

Size:	13.5 x 27 cm.
Lines:	10 to 13
Copier's Name:	Hari Prasāda Miśra
Age:	Saṃvat 1889
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	32
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 79	**Manuscript No.:** 15233
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15233
Title of Work:	Gargasaṃhitā Vṛndāvana Khaṇḍa
Title of Work in Sanskrit:	गर्गसंहिता वृन्दावन खण्ड.
Name of Author:	Ṛsi Garga
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gargasaṃhitā Vṛndāvana Khaṇḍa is a Puraṇic work composed by Sage Garga. In the MS the related stories of Śrī Krisṇa have described. There are 23 Adhayāyas in the MS. Every Adhayāya has its different name. Folio no. 32a is blank.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। कृष्णातीरे कोकिला केलिकीरे गंजापुंजेदेव पुष्पादिकुंजे................. .।
End:	श्रृणोति चैतच्चरितं नरोवरः परं पदं पुण्यतमं प्रयाति सः।
Script:	Devanāgarī

Size:	13.8 x 28.3 cm.
Lines:	10 to 14
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1891
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	35
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 80

Manuscript No.: 15310

Subject: Purāṇa

Accession No: 15310

Title of Work: Gajendra Upākhyāna

Title of Work in Sanskrit: गजेन्द्र उपाख्यान

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Gajendra Upākhyāna is a famous story described in Bhāgvata Mahāpurāṇa Aṣṭam Skandha. The MS contains second and third adhayāya complete but the fourth adhayāya is incomplete. Folio no. 1 is also missing. Second adhayāya describes the war between Gajendra (An elephant) and Grāha (A crocodile). The third adhayāya of the MS describes the prayer of God, done by Gajendra and his salvation (Mokṣa). All folios are worm eaten due to this some handwriting is also missing. The MS is very difficult to read.

Beginning: ....उवाच आसीद्गिरिवरो राजँस्त्रिकूट इति विश्रुतः क्षीरोदेनावृतः श्रीमान्योजनायुतमुच्छितः ।१।

End: श्री शुक उवाच इत्यादिश्यहृषीकेशः प्रध्माय जल....... ।

Script:	Devanāgarī
Size:	8.5 x 19.5 cm. (Different)
Lines:	6
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	12
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 27.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 81	**Manuscript No.:** 15305
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15305
Title of Work:	Catuḥślokī Bhāgvatam
Title of Work in Sanskrit:	चतुःश्लोकी भागवतम्
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS contains only eight ślokas. In which Lord Śrī Krisṇa has said seven ślokas and the last one śloka has been said by Śrī Śukdeva Jī. Folio no. 2 is in brittle condition. The colour of the MS change to brown.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री भगवानुवाच।। ज्ञानं परमं गुह्यं मेय द्विज्ञानसमन्वितं।
End:	पश्यतस्तस्य तद्रूपमात्मानोन्यरुणहरिः।।८।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.5 x 17.5 cm.
Lines:	9

Copier's Name:	Malūkdāsa Vaiṣaṇava
Age:	Saṃvat 1775
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	2
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 82	**Manuscript No.:** 64
Subject:	Purāṇa
Accession No:	12556
Title of Work:	Nārāyaṇa Kavaca
Title of Work in Sanskrit:	नारायण कवच
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nārāyaṇa Kavaca has taken from Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Aṣṭama Skandha.
Beginning:	श्री कृष्णाय नमः।। विश्वरुप उवाच।। धौतांघ्रि पाणिराचम्यसपवित्र उदङ्मुखः।।
End:	त्रैलोक्य लक्ष्मी वुभुज विनिर्जित्य मृधे सुरान्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	3.6 x 8.1 cm.
Lines:	4
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1809

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	14 (38a to 51b)
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 83 **Manuscript No.:** 78

Subject: Purāṇa

Accession No: 12/1670

Title of Work: Padma Purāṇa

Title of Work in Sanskrit: पद्म पुराण

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Padma Purāṇa is a very famous Purāṇa of Hindus. The MS contains Swarga Khaṇḍa Purvardha, Swarga Khaṇḍa Uttarardha, Pātāl Khaṇḍa and Sṛsti Khaṇḍa. Swarga Khaṇḍa Purvardha contains 62 Adhayāyas. Swarga Khaṇḍa Uttarardha contains 26 Adhayāyas, Pātāl Khaṇḍa contains 114 Adhayāyas and Sṛsti Khaṇḍa contains 84 Adhayāyas. Every Adhayāya has its different name. Some folios have written in very small letters. Folio no. 11b and 12a are coloured with orange.

Beginning: श्री गणेशाय नमः ।। श्री सरस्वत्यै नमः ।। अथ स्वर्ग खण्ड लिखते ।।

End:	कल्पकोटि शतं साग्रं ब्रह्मलोके स मोदते।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15 x 38.5 cm.
Lines:	13 to 25
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1924
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	503
Condition:	Slightly worm eaten, slightly water stained and paper pasting.
Seal:	Rampur Raza Library seals.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 84 | **Manuscript No.:** 79

Subject:	Purāṇa
Accession No:	11/1669
Title of Work:	Padma Purāṇa
Title of Work in Sanskrit:	पद्म पुराण
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS contains Pātāl Khaṇḍa and Bhūmi Khaṇḍa. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। दिलीप उवाच।। भगवन् भवता प्रोक्ताः सर्वे धर्म विशेषतः............. ।
End:	अष्टोत्तर तिलाज्यैश्च पालाशैः समिधैरपि।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 33.5 cm.
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	232
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Rampur Raza Library seals.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 85 **Manuscript No.:** 57

Subject: Purāṇa

Accession No: 20176

Title of Work: Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa

Title of Work in Sanskrit: श्रीमद्भागवत महापुराण

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Śrīdhara Swāmī

Language: Sanskrit

About the Manuscript: The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpika by Śrīdhara Swāmī. To see the MS It seems that this is a small portion of a big MS from which some folios have been taken and have bound in this MS so the folio are very disturbed and not in sequence. The MS has written with yellow inner and outer border. Some folios of the MS are blank. Plain tissue paper is used between two folios. Some lines have written from blank ink and some have written from red ink.

Beginning: अंवीरा विध वाधनेश्वरी सत्यपिघासु दुर्भगा सुभगा भवति।।

End:	स्वपरमज्ञानोपदेशेन तं शापादावदमुं नमा....... ....मानंदा कृतिं माधवं।।
Script:	Devanāgarī
Size:	18.3 x 32 cm.
Lines:	12 to 18
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	13
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 86 **Manuscript No.:** 41

Subject: Purāṇa

Accession No: Not given

Title of Work: Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Pratham Skandha

Title of Work in Sanskrit: श्रीमद्भागवद् महापुराण प्रथम स्कन्ध

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Śridhar Swāmī

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Śrīmadbhāgvat Mahāpurāṇa Prathama Skandha is a work of Purāṇa. The MS contains nineteen chapters called Adhayāyas. This is a commentary named Bhāvārtha Dīpikā by Śridhara Swāmī. The MS has written with red and black inner border and red and black outer border. Some folios of the MS are yellow in between. First folio is blank. On the last folio of the MS, there is also red and black inner border and outer border.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। ॐ श्री परमहंसा स्वादित चरण कमल चिन्मकरंदाय भक्त जनमानस निवासाय श्री रामचंद्राय।।

End:	मधुरया गिराआभाषित: अभिमुखीकृत: पृष्टश्च ।। ४० ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	19 x 47.3 cm.
Lines:	8 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	102
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 87	**Manuscript No.:** 49
Subject:	Purāṇa
Accession No:	Not given
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Dwitīya Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण द्वितीय स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Dwitīya Skandha is a work of Purāṇa. The MS contains ten chapters called Adhayāyas. This is a commentary named Bhāvārtha Dīpikā by Śrīdhara Swāmī. The MS has written with red and black inner and outer border. Folio no. 1, 16 and 52 are yellow.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। आर्यं धर्मजमाहतारिमवनौ कृत्वा परिक्षित् नृपं ब्रह्मास्त्रादपि रक्षितं कलिजयख्यातं च कृत्वाभुवि।।
End:	तदनुसारेण सर्वे पुराणार्थमवोचत् यत् तदेवाहं वोभिधास्यामि तथैव श्रणुतेति।।
Script:	Devanāgarī

Size:	19 x 47.3 cm.
Lines:	8 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	57
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 88	**Manuscript No.:** 38
Subject:	Purāṇa
Accession No:	Not given
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Tṛtīya Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण तृतीय स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śridhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Tṛtīya Skandha is a work of Purāṇa. The MS contains thirty-three Adhayāyas. This is a commentary named Bhāvārtha Dīpika by Śrīdhara Swāmī. The MS has written with red inner and outer border. Some folios of the MS are yellow in between.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। तृतीये तुत्रयस्त्रिंशदध्यायैः सर्ग वर्णनं ईरोक्षयागुणक्षोभात्सर्गो ब्रह्मांडसंभवः।। १।।
End:	भगवति कृतधीः सुपर्णकेतावुपलभते भगवत्पदारविंदं।। ३७।।
Script:	Devanāgarī

Size:	19 x 47.3 cm.
Lines:	9 to 13 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	120
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 89 **Manuscript No.:** 48

Subject: Purāṇa

Accession No: Not given

Title of Work: Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Catụrtha Skandha

Title of Work in Sanskrit: श्रीमद्भागवत महापुराण चतुर्थ स्कन्ध

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Śrīdhara Swāmī

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Caturtha Skandha is a work of Purāṇa. The MS. contains thirty-one chapters called Adhayāyas. This is a commentary named Subodhinī. The MS has written with red inner and outer border. Some folios are yellow in between. Folio no. 75a has written inverse.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। श्री परमहंसाऽऽस्वादित चरण कमल चिन्मकरंदाय भक्त जनमानस निवासाय श्रीरामाय नमः।।

End: आयुवर्द्धनं यशः स्वास्ति गतिमैश्वर्यमाप्नुयात् ३०।।

Script: Devanāgarī

Size:	19 x 47.3 cm.
Lines:	8 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	114
Condition:	Only folio no. 99 has new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 90	**Manuscript No.:** 46
Subject:	Purāṇa
Accession No:	Not given
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Pancam Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवद महापुराण पंचम् स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Pancam Skandha is a work of Purāṇa. The MS contains twenty-six chapters called Adhayāyas. This is a commentary named Bhāvārtha Dīpikā by Śrīdhara Swāmī. The MS has written with red outer border.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। ॐ नमः परमहंसास्वादित चरणकमल चिन्मकरंदाय भक्तजनमानस निवासाय श्रीरामचंद्राय।।
End:	गीतामयातवनृपाद्भुतमीश्वरस्य स्थूलंवपुः सकलजीव निकाय धाम।।
Script:	Devanāgarī
Size:	18.9 x 47.2 cm.

Lines:	7 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	83
Condition:	Paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 91	**Manuscript No.:** 50
Subject:	Purāṇa
Accession No:	Not given
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Saṣṭha Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवद महापुराण षष्ठ स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhar Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Saṣṭha Skandha is a work of Purāṇa. The MS contains Nineteen chapters called Adhayāyas. This is a commentary named Bhāvārtha Dīpikā by Śrīdhara Swāmī. The MS has written with red outer border.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। पुण्यारण्येन सिंहा विराजते यन्नादतः पलायंते महाकल्मषकुंजराः।।
End:	षष्ठस्कंध निगूढार्थ पद भावार्थ दीपिका सद्भिरासेव्यतामेषा यति श्रीधर निर्मिता।
Script:	Devanāgarī
Size:	19 x 47.3 cm.

Lines:	10 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	55
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 92	**Manuscript No.:** 45
Subject:	Purāṇa
Accession No:	Not given
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Saptam Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवद महापुराण सप्तम् स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Saptam Skandha is a work of Purāṇa. The MS contains fifteen chapters called Adhayāyas. This is a commentary named Bhāvārtha Dīpikā by Śrīdhara Swāmī. The MS has written with red outer border.
Beginning:	श्री महागणाधिपतये नमः।। स्वभक्त पक्षपातेनतद्विपक्षविदारणं नृसिंहमद्भुतं वंदे परमानंद विग्रहं।। १।।
End:	देवासुर मनुष्याद्या लोकायत्र चराचराः।। ८०।।
Script:	Devanāgarī
Size:	19 x 47.3 cm.

Lines:	5 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	67
Condition:	Paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 93	**Manuscript No.:** 44
Subject:	Purāṇa
Accession No:	20347
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Aṣṭam Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवद महापुराण अष्टम् स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Aṣṭam Skandha is a work of Purāṇa. The MS contains twenty-four chapters called Adhayāyas. This is a commentary named Bhāvārtha Dīpikā by Śrīdhara Swāmī. The MS has written with red outer border. Some folio's colour is light brown and some are dark brown.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। ॐ नमः परमहंसास्वादित चरण कमल चिन्मकरंदाय भक्त जनमानस निवासाय श्री रामचंद्राय।।
End:	दितिं जमकथयद्यो ब्रह्मसत्यव्रतानां तमहमखिलहेतुं जिह्ममीनं नतोस्मि।। ६२।।

Script:	Devanāgarī
Size:	19 x 47.3 cm.
Lines:	7 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	58
Condition:	Paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 94	**Manuscript No.:** 42
Subject:	Purāṇa
Accession No:	Not given
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Navam Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवद् महापुराण नवम् स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvat Mahāpurāṇa Navam Skandha is a work of Purāṇa. The MS contains twenty-four chapters called Adhayāyas. The name of the commentary and commentator has not given in the MS. The MS has written with red inner border.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। गुणायंगुणतादीप्तै वृणते करुणानिधिं।।
End:	वसुघोषं कृत्वा परं तत्वं युद्ध वायोपदिश्य स्वधार्म सम्यत् केनै वरुण पैज गामेति।। ६३।।
Script:	Devanāgarī
Size:	19 x 47.3 cm.

Lines:	6 to 12
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	51
Condition:	Water stained and only last folio has new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 95	**Manuscript No.:** 15240
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15240
Title of Work:	Bhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skanḍh
Title of Work in Sanskrit:	भागवत महापुराण दशम् स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmi
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Bhāgvata Mahāpurāṇa Daśaṁ Skanḍha is a work of Purāṇa. The MS is a commentary named Bhavartha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmi. There are 90 Adhayāyas in the MS. Every chapter has its different name according to the matter. The life stories of Śrī Krişṇa have given in the MS. The ink is bleeding on some folios.
Beginning:	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।। ॐ नमो विघ्न वदत्रीविध्वंसिने कुठाराय गणरुपाय परमात्मनै ततः.. ।
End:	कलितमित्याह दुस्तरेति दुर्लभ पुरूषार्थमहाग्रमादिति।।

Script:	Devanāgarī
Size:	15.5 x 31.5 cm.
Lines:	9 to 16
Copier's Name:	Rāma Prasāda
Age:	1892 (Saṃvat or Śake has not given.)
Place of Copying:	The bank of Kalingaśva river.
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	148
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 96	**Manuscript No.:** 15239
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15239
Title of Work:	Bhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skanḍha Pūrvārdha
Title of Work in Sanskrit:	भागवत महापुराण दशम् स्कन्ध पूर्वार्द्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Bhāgvata Mahāpuraṇa Daśama Skanḍha Pūrvārdha is a work of Purāṇa. The MS is a commentary named Bhāvārth Dīpikā by Śrīdhara Swāmī. There are 49 Adhayāyas in the MS. Folio no.1 and 135a are blank. Some folios are ink stained. Every chapter has its different name.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ॐ नमः भगवते वासुदेवाय विश्वसर्ग विसर्गादि नव लक्षण लक्षितं श्री कृष्णख्यं परं धाम जगद्धाम नमामि तत् १।।
End:	तत्र प्रधानं मुख्यं कारणं यस्य संसार चक्रस्य गतिर्यस्मात् तस्मै नम इति ३०३१।।

Script:	Devanāgarī
Size:	15.5 x 31.5 cm.
Lines:	12 to 17
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	147
Condition:	Slightly worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 97	**Manuscript No.:** 47
Subject:	Purāṇa
Accession No:	Not given
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skandha Purvārdh
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवद दशम् स्कन्ध पूर्वाद्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skandha Purvārdh is a work of Purāṇa. The MS contains fourty nine chapters called Adhayāyas. This is a commentary named Bhāvārtha Dīpikā by Śrīdhara Swāmī. The MS has written with red outer border. Last folio of the MS is blank.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। विश्वसर्ग विसर्गादि नवलक्षण लक्षितं।।
End:	पांडवान् प्रति कौरव्ययदर्थं प्रेषितः स्वयं ।। ३१।।
Script:	Devanāgarī
Size:	19 x 47.3 cm.

Lines:	7 to 14
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	150
Condition:	Slightly water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 98	**Manuscript No.:** 40
Subject:	Purāṇa
Accession No:	Not given
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skandha Uttarārdha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण दशम् स्कन्ध उत्तरार्द्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śridhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skandha Uttarārdha is a work of Purāṇa. The MS contains fifty to ninty Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpikā by Śridhara Swāmī. It has written with red outer border. This is a very famous chapter of Bhāgvata.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। ततः पंचाशतमे तु जरासंध भयादिव।।
End:	स्त्रीणां सुदुस्त्यज कृतांत जवापवर्ग ग्रामाद्धनंक्षिति भुजोपियर्युयर्दर्थाः।
Script:	Devanāgarī

Size:	19 x 47.3 cm.
Lines:	5 to 13 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	130
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 99	**Manuscript No.:** 15241
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15241
Title of Work:	Bhāgvata Mahāpurāṇa Ekādaśa Skandha
Title of Work in Sanskrit:	भागवत महापुराण एकादश स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmi
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Bhāgvata Mahāpurāṇa Ekādaśa Skandha is a work of Purāṇa. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpikā by Śrīdhara Swāmi. There are 31 chapters called Adhayāyas in the MS. Every chapter has its different name according to the matter. The life stories of Śrī Krisṇa have given in the MS.
Beginning:	तत्र प्रथमेध्याये वैराग्योत्पादनाय य दुकुलस्य ब्रह्मशापापदेशेनात्युन्तता विषय सुखानामप्यनित्यता प्रतिपाद्यते।।
End:	अन्यत्र चेह च श्रुतानि गणनमनुष्यो भक्तिं परो परमहंसगगतौ लभते।।

Script:	Devanāgarī
Size:	15.5 x 31.5 cm.
Lines:	8 to 18
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1825
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	148
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 100 **Manuscript No.:** 37

Subject: Purāṇa

Accession No: Not given

Title of Work: Śrīmadbhāgvata Ekādaśa Skandha

Title of Work in Sanskrit: श्रीमद्भागवत एकादश स्कन्ध

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Śridhara Swāmī

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Śrīmadbhāgvata Ekādaśa Skandha is a work of Purāṇa. The MS contains thirty-one Adhayāyas. There is a commentary named Bhāvārtha Dīpika by Śridhara Swāmī. Illuminated headpiece with title.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।। ॐ नमः परमहंसास्वादित चरणकमल चिन्मकरंदाय भक्त जनमानस निवासाय श्री रामाय।।

End: अन्यत्र चेह चश्रुतानिगृणन् मनुष्यो भक्तिं चरां परमहंसगतौ लभेत।।

Script: Devanāgarī

Size: 18.5 x 47.3 cm.

Lines:	7 to 13 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	102
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 101	**Manuscript No.:** 39
Subject:	Purāṇa
Accession No:	Not givcn
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Dwādasa Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण द्वादश स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śridhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Dwadaśa Skandha contains thirteen Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpika by Śridhara Swāmī written with red inner and outer border.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। श्री वेदव्यासाय नमः ।। जयंति श्री परमानंद कृपापांगसदृशः ।।
End:	प्रणामो दुःखसमनसंनमामि हरिं परं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	19 x 47.3 cm.
Lines:	9 to 13

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Śake 1758
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	37
Condition:	Slightly worm eaten.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 102	**Manuscript No.:** 15244
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15244
Title of Work:	Bhāgavata Paddya Vyākhyā
Title of Work in Sanskrit:	भागवत पद्य व्याख्या
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a commentary named Madhusudani.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः श्री कृष्णं परमं तत्वंन त्वातस्य प्रसादतः श्री भागवत पद्यानां कश्चिद्भाव प्रकाश्यते १।।
End:	दर्शनान्मतुप्लोपो न सामानाधिकरणया संभवात् माधूत्वार्थं मतुपोऽप्राप्ति रेवेत्यर्थः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14.5 x 37.5 cm.
Lines:	12 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	13
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 103	**Manuscript No.:** 15249
Subject:	Purāṇa
Accession No:	15249
Title of Work:	Bhāgvatalīlā Cintāmaṇi
Title of Work in Sanskrit:	भागवतलीला चिन्तामणि
Name of Author:	Kamallocan
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS explains the first verse of Bhāgvatam eighty eight times, taking them representatives of different lines of Lord Krisṇa.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। श्री लीलाऽचल चन्द्रंचेतसिरु चिरं विचिंतयामिचिरं............ ।
End:	जन्माद्येत्यादि नांदी मिहतुवि हितवानद्भुता चिन्त्यशक्तिः ।
Script:	Devanāgarī
Size:	20 x 37 cm.
Lines:	10 to 22
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	34
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 104, **Manuscript No.:** 77

Subject: Purāṇa

Accession No: 6849

Title of Work: Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Prathama Skandha

Title of Work in Sanskrit: श्रीमद्भागवत महापुराण प्रथम स्कन्ध

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Śrīdhara Swāmī

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Prathama Skandha is an illustrated MS, contains ninteen Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio no.1b is blank. After ending the MS, the importance of Bhāgvata has given in fifteen folios. After ending the MS, 1folio is blank.

Beginning: ॐ स्वस्ति।। श्री गणेशाय नमः।। श्री भगवते वासुदेवाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः श्री गुरुवे नमः।।

End: सत्यलोके तुलांवधातोलयत्साधान्यजः।। १६।। लघु मत्यानि जातानि........इदं महत्।। तदाऋ।।

Script: Devanāgarī

Size: 22 x 38.5 cm. (Different)

Lines: 8 to 17

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Good

No. of Folios: 121

Condition: Worm eaten, water stained and paper pasting.

Seal: Not available

Marginal Notes: Not given

Memory Notes: Not given

Decorative Ornament:

There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text.The inner border is also decorated with floral designing. On first folio many colours like red, orange, gold, black, blue, green, yellow, pink and white are used. In the picture, different Gods and Goddess are sitting. These are Gaṇeśa, Śiva and Pārvatī, Viṣṇu and Luxmī, Brahmā and Saraswatī. A single picture of Sarawati has also drawn. Four men and one Ṛsi have sitting.

Source of Receiving:

Not mentioned

Date of Receiving:

29 November 1933

Form No.: 105

Manuscript No.: 76

Subject: Purāṇa

Accession No: 6848

Title of Work: Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Dwitīya Skandha

Title of Work in Sanskrit: श्रीमद्भागवत महापुराण द्वितीय स्कन्ध

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Srīdhara Swāmī

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Dwitīya Skandha is an illustrated MS, contains ten Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio no.1b and 65a are blank.

Beginning: ॐ श्री गणेशाय नमः।। ॐ द्वितीये तु दशाध्यायैः श्री भागवतमादितः उद्देशलक्षणोक्ति संक्षेपेणोपवर्ण्यते।।

End: तदेवाहंतेभिधास्यामि तथैव श्रृणोति।। ५३।।

Script: Devanāgarī

Size: 22 x 37.2 cm.

Lines: 10 to 15

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	65
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral designing. On first folio many colors like red, orange, gold, black, blue, green, yellow, pink and white are used. In this picture, Śrī Sukdeva has sit on a chowki taking a mālā in his hand and seven men have also sit on the ground infront of him in the same situation.
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	29 November 1933

Form No.: 106

Manuscript No.: 75

Subject: Purāṇa

Accession No: 6847

Title of Work: Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Tṛtīya Skandha

Title of Work in Sanskrit: श्रीमद्भागवत महापुराण तृतीय स्कन्ध

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Srīdhara Swāmī

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Tṛtīya Skandha is an illustrated MS, contains thirty-three Adhayāyas. The MS is a commentary ṇamed Bhāvārtha Dīpīkā by Srīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio no.1b and 176a are blank.

Beginning: ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ तृतीये तु त्रयस्त्रिंशदध्यायैः सर्गवर्णनं ईशेक्षयागुणक्षोभात्सर्गो ब्रह्मांड संभवः....... ।

End: उपलभते प्राभोति ।। ३७ ।।

Script: Devanāgarī

Size: 22 x 38.3 cm.

Lines: 10 to 16

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	176
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral designing. On first folio many colours like red, orange, gold, black, blue, green, yellow, pink and white are used. In this picture, different Gods and Goddess have stand. In this picture God, Śrī Varāha is killing a gaint. God Śrī Brahmā and Śiva have also stood His right side. God Kārtikaya and his wife have also stood His left side.
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	29 November 1933

Form No.: 107

Manuscript No.: 74

Subject: Purāṇa

Accession No: 6846

Title of Work: Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Caturth Skandha

Title of Work in Sanskrit: श्रीमद्भागवत महापुराण चतुर्थ स्कन्ध

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Śrīdhara Swāmī

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Caturth Skandha is an illustrated MS, contains thirty-one Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio no.1b is blank. Some folios are worm eaten from edges. Some text is missing also.

Beginning: श्री गणेशाय नमः ।। श्री परमहंसास्वादित चरण कमल चिन्मकरंदाय भक्त जनमानस निवासाय रामाय नमः ।।

End:	राज्ञां चरितमिति शेषः ।। ३१ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	22 x 38.2 cm.
Lines:	10 to 18
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	146
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral designing. On first folio

many colours like red, orange, gold, black, blue, green, yellow, pink and white are used. In this picture, Lord Śiva has stand taking a triśul in his hand and two Gaṇ are stand in the same situation. On the other side God Śrī Brahmā and two people have stand. In the middle of this picture, a lady is burning in fire and a man lay on the earth.

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: 29 November 1933

Form No.: 108	**Manuscript No.:** 73
Subject:	Purāṇa
Accession No:	6845
Title of Work:	Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Pañcam Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण पंचम स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Srīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Pañcam Skandha is an illustrated MS, contains twenty-six Adhayāyas. The MS is a commentary ṇamed Bhāvārtha Dīpīkā , by Srīdhara Swāmī. There are three miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio no.1b is blank. Mostly folios are worm eaten from edges therefore, some text is also missing.
Beginning:	।। श्री............रामाय नमः........स्कंधे व्याख्यानेक विशेष वा नमीर्यते........।
End:	गीतामया तव नृपाद्भुतमीश्वरस्य स्थूलं वपुः सकलजीव निकाय धाम।। ३१।।
Script:	Devanāgarī
Size:	19 x 37 cm. (Different)

Lines:	8 to 15
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	126
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There are three miniature painting on folio no.1a. The inner border is also decorated with floral designing. On first folio many colours like red, orange, gold, black, blue, green, yellow and pink, are used. In this picture, Lord Śrī Brahmā has sitting on a lotus. Three men are praying to sit before Him. In the other two pictures two men are standing.
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	29 November 1933

Form No.: 109

Manuscript No.: 72

Subject: Purāṇa

Accession No: 6844

Title of Work: Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Saṣtha Skandha

Title of Work in Sanskrit: श्रीमद्भागवत महापुराण षष्ठ स्कन्ध

Name of Author: Vedavyāsa

Name of Commentator: Srīdhara Swāmī

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Saṣtha Skandha is an illustrated MS, contains Ninteen Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Srīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio no.1b is blank. Mostly folios are worm eaten from edges therefore some text is missing.

Beginning: ....नारायणाय.............नृसिंहैकनाम सिंहो राजते...... ।

End: राजत्रिति महत्पुण्यं जन्म महद्व्रतं च ।।

Script: Devanāgarī

Size: 16 x 33.5 cm. (Different)

Lines: 11 to 15

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	94
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the middle of the text. The inner border is also decorated with floral designing. On first folio many colours like red, orange, gold, black, blue, green, yellow and pink are used. In this picture, an elephant get rid from the Crọcodile by the blessing of Lord Śrī Viṣṇu. Garuḍ is also standing behind Him.
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	29 Nov. 1933

Form No.: 110	**Manuscript No.:** 71
Subject:	Purāṇa
Accession No:	6843
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Saptam Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण सप्तम् स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Saptam Skandha is an illustrated MS, contains fifteen Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio no.1b is blank. Some folios are worm eaten from edges due to this some text is missing.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। स्वभ............ पक्षपातेन तद्विपक्षविदारुणं।।
End:	देवासुरमनुष्याद्या लोका यत्र चराचराः।।

Script:	Devanāgarī
Size:	21.2 x 38.3 cm.
Lines:	10 to 15
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	93
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral designing. On first folio many colours like red, orange,

gold, black, blue, green, yellow and pink are used. In this picture, Lord Narsimhā is killing Hiraṇayakaśyapa. Two men and two women have stand near him with close hands.

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: 29 November 1933

Form No.: 111	**Manuscript No.:** 70
Subject:	Purāṇa
Accession No:	6842
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Aṣṭama Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण अष्टम् स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Aṣṭama Skandha is an illustrated MS, contains twenty-four Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio no. 1b is blank.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। ॐ अध्याष्टमे चतुर्विंशत्याध्यायेमनुवर्णनं।।
End:	समवायाद् बहुवचनं जिस्नमीनं मायामीनं।।
Script:	Devanāgarī

Size:	22 x 37.5 cm.
Lines:	13 to 15
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	88
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral designing. One first folio many colours like orange, red, gold, black, blue, green, yellow and pink are used. In this picture Lord Śrī Krisna and his wife have sit on the flower of lotus.

This is a picture of Samundra Mańthan. Some Gods and some Giants have shown in this picture. Cow, Horse and elephant have also shown in this picture.

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: 29 November 1933

Form No.: 112	**Manuscript No.:** 69
Subject:	Purāṇa
Accession No:	6841
Title of Work:	Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Navam Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण नवम् स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Navam Skandha is an illustrated MS, contains twenty-four Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio 1b is blank.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। ......गुणता वात्यै वृणुते करुणानिधिं तमहं शरणंयामि परमानंद माधवं।।
End:	स्वधाम सम्यक्ते तैव रुपेण जगामेति।।
Script:	Devanāgarī
Size:	22 x 38.2 cm. (Different)
Lines:	11 to 15

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	80
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral designing. One first folio many colours like orange, red, gold, black, blue, green, yellow and pink are used. In this picture, Lord Śrī Krişņa and his wife have sit on the throne. God Hanumān has stand before him with close hands. A servant has also stand behind him.
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	29 November 1933

Form No.: 113	**Manuscript No.:** 68
Subject:	Purāṇa
Accession No:	6840
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skandha Purvārdha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण दशम् स्कन्ध पूर्वार्द्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skandha Purvārdha is an illustrated MS, contains fourty-nine Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is used somewhere to written the text. Folio no. 1b is blank.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। ॐ विश्वसर्ग विसर्गादि दश लक्षण लक्षतं।।
End:	पांडवात्प्रति कौरव्ययदर्थ प्रेषितः स्वयं।।
Script:	Devanāgarī

Size:	22 x 37.5 cm. (Different)
Lines:	13 to 18
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	228
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral designing. One first folio marry colours like orange, red, gold, black, blue, green, yellow and silver are used. In this picture, Lord Śrī Krisṇa, soldiers and chariot have shown.
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	29 November 1933

Form No.: 114	**Manuscript No.:** 67
Subject:	Purāṇa
Accession No:	6839
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skandha Uttarārdh
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण दशम् स्कन्ध उत्तरार्द्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Daśam Skandha Uttarārdh is an illustrated MS, contains fifty to ninty Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Red ink is also used somewhere to written the text. Folio no.1b is blank.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। ॐ ततः पचाशत्तमे तु जरासंध भयादिवा।।
End:	तमाहग्रामादिति।।
Script:	Devanāgarī

Size:	22 x 37.3 cm. (Different)
Lines:	11 to 19
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	189
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral designing. One first folio many colours like orange, red, gold, black, blue, green, yellow and silver are used. In this painting Lord Śrī Krisṇa, soldiers and chariot have shown.
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	29 November 1933

Form No.: 115	**Manuscript No.:** 66
Subject:	Purāṇa
Accession No:	6838
Title of Work:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Ekādaśa Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण एकादश स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Ekādaśa Skandha is an illustrated MS, contains thirty-one Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There is a miniature painting on folio no.1a. Folio no.1b is blank. Red ink is also used somewhere to written the text.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। ॐ विजयंते परानंद कृष्ण पाद रजस्रजः।।
End:	अन्यत्रचेद्ध च कृतानि गृणन्मनुष्यो भक्तिं परां परमहंस गतौ लभेत।।

Script:	Devanāgarī
Size:	22 x 37.1 cm. (Different)
Lines:	11 to 17
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	189
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There is a miniature painting on folio no.1a. It is right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral designing. Many colours like orange, red, gold, black, blue, green are used in this folio.

	In this picture, Lord Śrī Krișṇa sitting on a shaded throne and He holds a lotus in his left hand. Three Pāṇḍavas are sitting on the floor infornt of Him with close hands. One servant is standing behind Lord Śrī Krișṇa.
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	29 November 1933

Form No.: 116	**Manuscript No.:** 65
Subject:	Purāṇa
Accession No:	6837
Title of Work:	Srīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Dwādaśa Skandha
Title of Work in Sanskrit:	श्रीमद्भागवत महापुराण द्वादश स्कन्ध
Name of Author:	Vedavyāsa
Name of Commentator:	Śrīdhara Swāmī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śrīmadbhāgvata Mahāpurāṇa Dwādaśa Skandha is an illustrated MS, contains thirteen Adhayāyas. The MS is a commentary named Bhāvārtha Dīpīkā by Śrīdhara Swāmī. There are two miniature paintings on first and last folio. Red ink is used somewhere to written the text. All folios are bound inverse by mistake. Folio 1b and 59a are blank due to bound inverse.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः ।। ॐ जयति श्री परानंदः कृपामंगलमदृशः ।।
End:	तं यस्य सर्वपाप प्रणाशनः तं नमामि हरिं परं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	22 x 37.5 cm. (Different)
Lines:	13 to 15

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	59
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	There are two miniature paintings on first and last folio. These are right in the centre of the text. The inner border is also decorated with floral desigining on first folio. Many colours like orange, red, gold, black, blue, green are used in these picture and borders. In these pictures, Lord Śrī Krisṇa sitting on a lotus and he hold a lotus in his left hand. One Pāṇḍava and some people are sitting on the floor infront of Him with close hands.
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	29 November 1933

Stotra

स्तोत्र

Form No.: 117 **Manuscript No.:** 36

Subject: Stotra

Accession No: 22687

Title of Work: Anekatantrasaṁgrahītatantrasāraḥ

Title of Work in Sanskrit: अनेकतन्त्रसंग्रहीततंत्रसारः

Name of Author: Śrī Krisṇānanda Bhaṭṭācārya

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: The MS contains many stotras. First 349 folios have written from black ink and last folios have witten from green ink. After ending the MS, there is an index of books, which have used to written this MS. After ending the index there is a blank folio and after that, many pictures of different yantras have given. The ink is bleeding on some folios.

Beginning: ॐ नमो गणेशाय नत्वा कृष्णपदद्वन्द्वं ब्रह्मादि सुरवन्दितम् गुरुं च ज्ञानदांतारं कृष्णानन्देन धीमता १ ।।

End: क्षन्तव्यमेतत्करुणा निधान कोधोनचार्हः खलुपामेरषु ।।

Script: Devanāgarī

Size:	11 x 28 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Śrī Ramcandra Śarmā and Śrī Cakradhara Śarmā
Age:	Saṃvat 1996 Śake 1861
Place of Copying:	Mohiuddin Nagar
For whom the MS is written	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	765
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 118	**Manuscript No.:** 15289
Subject:	Stotra
Accession No:	15289
Title of Work:	Ādityahṛdaya Stotram
Title of Work in Sanskrit:	आदित्यहृदय स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ādityahṛdaya Stotram is a work in praise of Āditya means Sun. The work has taken from Bhaviṣyottara Purāṇa. The MS is a dialogue between Śrī Krisṇa and Arjuna. Folio no. 1a is badly colour stained.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। शतानीकोवाच ।। कथमादित्यमुद्यंतं ।। मुपतिष्ठेत्सनातनः ।।
End:	सुरनर अभिवंदे सुदरं विश्वरुपं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.7 x 15.3 cm.
Lines:	9

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	No
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	24
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 119	**Manuscript No.:** 15293
Subject:	Stotra
Accession No:	15293
Title of Work:	Ādityahṛdaya Stotram
Title of Work in Sanskrit:	आदित्यहृदय स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ādityahṛdaya Stotram is a work in praise of Āditya means Sun. The work has taken from Bhaviṣyottara Purāṇa. The MS is a dialogue between Śrī Krisṇa and Arjuna. Folio no. 1a is colour stained.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः ।। ॐ श्री सरस्वत्यै नमः ॐ सूर्याय नमः शौनक उवाच कथमादित्यमुद्यंतमुपतिष्ठेद्विजोत्तमः..................... ।।
End:	नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.5 x 22.5 cm.

Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	22
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 10.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 120 **Manuscript No.:** 15319

Subject:	Stotra
Accession No:	15319
Title of Work:	Ādityahṛdaya Stotram
Title of Work in Sanskrit:	आदित्यहृदय स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ādityahṛdaya Stotram is a work in praise of Āditya means God Sun. The work has taken from Ārṣa Rāmāyaṇa. First three folios consist of some Mantras related to Āditya and have written in different writing from the rest of the book. First three folios are handmade and others are machine made.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। ॐ आदित्याय नमः ततो युद्धपरिश्रांत समरे चिन्तयां स्थितं।।
End:	निशिचरपति संक्षयं विदित्वा सुरगण मध्यगतो वचस्त्वरेति।।३१।।
Script:	Devanāgarī

Size:	9 x 13.3 cm.
Lines:	5 to 6
Copier's Name:	Devīdatta
Age:	Saṃvat 1931
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Anganlāla
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	13
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 121

Manuscript No.: 15272

Subject: Stotra

Accession No: 15272

Title of Work: Ānāndalaharī

Title of Work in Sanskrit: आनन्दलहरी

Name of Author: Saṅkarācārya

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Ānāndalaharī is a work in praise of Goddess Śakti. The MS is a commentary. All folios are worm eaten from edges, due to this some text is missing. All folios are difficult to read.

Beginning: श्री महामंगलमूर्त्तये गणेशाय नमः ।। वारंवार मुदार सस्मित मुखः सिक्यो परिस्छापितं हारं.................. ।।

End: नरैः साधकैस्तान्कुर्वीत कवीन्नपेंद्र मुकुटा संधृष्ट पादांवुजान् १०५ ।।

Script: Devanāgarī

Size: 11.5 x 29.5 cm.

Lines:	7 to 13
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1910 Śake 1775
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	63
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in12.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 122	**Manuscript No.:** 27
Subject:	Stotra
Accession No:	15284
Title of Work:	Kavaca -Argalā- Kīlaka Stotram
Title of Work in Sanskrit:	कवच–अर्गला–कीलक स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	This MS contains 3 ancilliary stotras to Saptaśati, which are much celebrated in Hindu society. Rahasya is not complete it runs only until 4 Ślokas. The work has taken from Markaṇdey Purāna.
Beginning:	ॐ श्रीगणेशाय नमः।। मार्कंडेय उवाच।। यद्गुह्य परमं लोके........।
End:	मातुलुंगं गदां खेटं पानपात्रं च विभ्रती। नागलिगं च योनिं च।
Script:	Devanāgarī
Size:	9 x 21.5 cm.
Lines:	7

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 123 | **Manuscript No.:** 15294

Subject: Stotra

Accession No: 15294

Title of Work: Gaṅgālahrī Satīka

Title of Work in Sanskrit: गंगालहरी सटीक

Name of Author: Paṇḍitarāja Jagannātha

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Gaṅgālahrī is a work in praise of Goddess Gaṅgā. The MS is a commentary of Baldev Miśra. After ending, the MS there is an extra text upon Gaṅgālahrī on folio no. 11a. All folios are difficult to read.

Beginning: श्री गणेशाय नमः गंगा प्रणम्य वरदां बाल बुद्धिसुसिद्धये जगन्नाथस्य लहरीव्याख्यानं प्रकरोम्यहं।।

End: सर्वत्र सर्वदा सर्वसंपदः सर्वेकल्याणा निजायं तेनवंतीत्यर्थः ५३।।

Script: Devanāgarī

Size: 14.7 x 19.2 cm.

Lines:	11 to 17
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1890
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Rāmprasād Miśra
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	11
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new Guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 18.7.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 124	**Manuscript No.:** 15309
Subject:	Stotra
Accession No:	15309
Title of Work:	Gaṅgāṣṭakam
Title of Work in Sanskrit:	गंगाष्टकम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gaṅgāṣṭakam is a work in praise of Goddess Gaṅgā composed by Kālidāsa. He composed it in eight ślokas.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। कत्यक्षीणि करोटयः कति कति द्वीपि द्विपानां............... ।।
End:	सा नश्चेतसि जान्हवी निवसतां संसार संतापहृत्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.2 x 19.5 cm.
Lines:	13
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	1
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 125	**Manuscript No.:** 54
Subject:	Stotra
Accession No:	20173
Title of Work:	Gaṅgāṣṭakam
Title of Work in Sanskrit:	गंगाष्टकम्
Name of Author:	Vālmīki
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gaṅgāṣṭakam is a hymn in praise of Goddess Gaṅga composed by Vālmīki. In the MS folio no. 1 has some ślokas related to Kātyāyani. After ending the MS some lines has been given related to Mantras. Some folios are ink and colour stained.
Beginning:	ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः।। ॐ माता शैल सुता सपत्नवसुधा श्रृंगारहारावली र्स्वगारोहिण वैजयंति....... ।
End:	प्रक्षाल्य गात्रकलि कलमलंपंकमाश्रु मोक्षं लभेत्य तत नैव तरो भवाधौ।।
Script:	Devanāgarī

Size:	11.8 x 15 cm.
Lines:	7 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 126	**Manuscript No.:** 15313
Subject:	Stotra
Accession No:	15313
Title of Work:	Gopāla Sahasranāma
Title of Work in Sanskrit:	गोपाल सहस्रनाम
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Gopāla Sahasranāma is a work in praise of Lord Śrī Krişņa dealing with thousand names. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। ॐ कैलाशशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरं।।
End:	कोटि मन्मथ सौंदर्यो जगन्मोहन विग्रहः।।१४।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 15 cm.
Lines:	11 to 12
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	10
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 23.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 127	**Manuscript No.:** 26
Subject:	Stotra
Accession No:	22679
Title of Work:	Gaṇeśātharvaśīrṣam
Title of Work in Sanskrit:	गणेशाथर्वशीर्ष
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	A small MS has been written in praise of God Ganeṣa. The work has taken from Atharvanavedopaniṣad. The colour of the folios is brown.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। ॐ नमस्ते गणपतये।। त्वमेवप्रत्यक्षं तत्त्वमसि।।
End:	स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति य एवं वेद १४ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.6 x 15.6 cm.
Lines:	8

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	New guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 128 | **Manuscript No.:** 15290

Subject:	Stotra
Accession No:	15290
Title of Work:	Jānkīsahasṛanāma
Title of Work in Sanskrit:	जानकीसहस्रनाम
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Jānkīsahasṛanāma is a work in praise of Jānkī means Sita. The work has taken from Siddheśvaratantra. Folio no. 1 is missing from the MS. The size of the MS is small and the paper is thin.
Beginning:	............प्तासरोजाक्षी सकला सर्वरुपिणी ।। भक्तबाश्यामहोग्रा च सर्व तन्त्र विशारदा ।।६ ।।
End:	इच्छा कामं तु कामार्थी धर्मार्थी धर्ममक्षयं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 15 cm.
Lines:	7

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	18
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 129	**Manuscript No.:** 15276
Subject:	Stotra
Accession No:	15276
Title of Work:	Candīstotra Proyaga Vidhiḥ
Title of Work in Sanskrit:	चण्डीस्तोत्र प्रयोग विधिः
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The work has taken from Māṛkaṇḍey Purāṇa. All folios are missing from corners. All folios are difficult to read but some are unreadable. The scriber Nāgoji Bhaṭṭa was the son of Nānaka Śiva Bhaṭṭa according to the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः सामंविधिं ब्राह्मणोपयः कामयेत पुननशन्य जपिधमिति................... ।।
End:	सुवर्णामितहमे सुवर्णामिति गुंजामितम् ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	14 x 26.5 cm.

Lines:	12 to 14
Copier's Name:	Nāgoji Bhaṭṭa
Age:	Saṃvat 1884
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 27.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 130	**Manuscript No.:** 15281
Subject:	Stotra
Accession No:	15281
Title of Work:	Durgā Kavaca
Title of Work in Sanskrit:	दुर्गा कवच
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Durgā Kavaca is a work in praise of Goddess Durgā. Arglā Stotra and Kīlak Stotra (अर्गला स्तोत्र और कीलक स्तोत्र) are also given after ending the Kavaca. Folio no. 1a is badly ink stained.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। मार्कंडेय उवाच।। यद्गुह्यं परमंलोके सर्वरक्षाकरं नृणां।।
End:	रहस्यार्गलोपेतां संपूर्ण फलमहमते।। इति कीलकं संपूर्ण।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.5 x 20 cm.

Lines:	5
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 27.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 131 | **Manuscript No.:** 15277

Subject:	Stotra
Accession No:	15277
Title of Work:	Durgā Saptaśatī
Title of Work in Sanskrit:	दुर्गा सप्तशती
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Durgā Saptaśatī is a work in praise of Goddess Durgā. Kavaca and Kīlak have given in beginning in the MS. The work has taken from Mārkeṇḍaya Purāṇa. There are thirteen adhayāyas in the MS. Some folios are difficult to read. Last folio of the MS is blank. Every adhayāya has a different name like Śumbh Vadh, Mahiṣāsur Vadh etc. After ending the adhayāyas Rahasayas (रहस्य) is also given.
Beginning:	ॐ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः अथ सप्तशती स्तोत्र पाठ विधिर्लिख्यते।।
End:	पश्चाद्रहस्यं प्रपठेत्संपूर्णा फल भाग्भवेत् २४।।

Script:	Devanāgarī
Size:	12.7 x 21.2 cm.
Lines:	9
Copier's Name:	Gopāl
Age:	Saṃvat 1933
Place of Copying:	Jagannāth Temple
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	90
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 132	**Manuscript No.:** 15279
Subject:	Stotra
Accession No:	15279
Title of Work:	Durgā Saptaśatī
Title of Work in Sanskrit:	दुर्गा सप्तशती
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Durgā Saptaśatī is a work in praise of Goddess Durgā. The MS contains thirteen adhayāyas. Kavaca and Kīlak (कवच और कीलक) have given after ending the MS. The size of the MS is small and paper is very thin. The work has taken from Mārkeṇḍaya Purāṇa.
Beginning:	श्री राम चंद्राय नमः ।। ॐ नमश्चंडिकायै ॐ अस्य श्री सप्तशतीस्तव माला मंत्रस्य मार्कंडेय ऋषिरनुष्टुप छंदः महाकालि महालक्ष्मी........ ।।
End:	शुचिर्छेव्याप्तदा भक्तया जेनाभीष्ट फलं लभेत् १६ ।।

Script:	Devanāgarī
Size:	9.7 x 15 cm.
Lines:	6 to 8
Copier's Name:	Ambādaṭṭa Miśra
Age:	Saṃvat 1901
Place of Copying:	Sambhal Grām
For whom the MS is written:	Mangalsena
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	108
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 133	**Manuscript No.:** 15280
Subject:	Stotra
Accession No:	15280
Title of Work:	Durgā Saptaśatī
Title of Work in Sanskrit:	दुर्गा सप्तशती
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Durgā Saptaśatī is a work in praise of Goddess Durgā. The work has taken from Mārkeṇḍaya Purāṇa. The MS contains thirteen chapters called adhayāyas. Mostly folios are not readable.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। अस्या श्री पूर्व चरित्रस्य क्रतां ऋषिर्गायत्री छंदो महाकाली देवता.................. ।।
End:	सूर्य्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुऽत्र ॐ।।१६।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9 x 22.3 cm.
Lines:	7 to 8

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1987
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	53
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 4.9.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 134

Manuscript No.: 15275

Subject: Stotra

Accession No: 15275

Title of Work: Durgā Saptaśatī Satīk

Title of Work in Sanskrit: दुर्गा सप्तशती सटीक

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Rāma

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Durgā Saptaśatī Satīk is a work in praise of Goddess Durgā. The work has taken from Mārkeṇḍaya Purāṇa. There are thirteen adhayāyas in the MS. All folios are difficult to read. The MS is a commentary.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। ॐ नमश्चंडिकायै।। शंर्कहंत वधाम वामन विभोष्ट श्री भवेद्वा कथं किं वातत्रतवैव. …………… ।।

End: प्रतिन्नवम्योः पूर्वोद्वितीयादशमुत्तरे तृतीयैकादशी चाग्रौवतु थीद्वादशीनै ज्ञत्यां।।

Script: Devanāgarī

Size:	16.2 x 33 cm.
Lines:	6 to 16
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	68
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 28.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 135	**Manuscript No.:** 15304
Subject:	Stotra
Accession No:	15304
Title of Work:	Dwādaśa Pañjarikā Stotram
Title of Work in Sanskrit:	द्वादश पंजरिका स्तोत्रम्
Name of Author:	Śaṃkarācarya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Dwādaśa Pañjarikā Stotram is a small MS contains fourteen ślokas. Folio no. 3 has bound inverse by mistake.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिर वसंतः पुनरायातः कालः.............. ।
End:	भजगोविदं भजगोविदं गोविदं भज मूढमते।।१४।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 21.2 cm.
Lines:	6
Copier's Name:	Gosai Gautam Giri

Age:	Saṃvat 1778
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 136	**Manuscript No.:** 15321
Subject:	Stotra
Accession No:	15321
Title of Work:	Nārāyaṇahṛdaya Stotram
Title of Work in Sanskrit:	नारायणहृदय स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nārāyaṇahṛdaya Stotram is a work in praise of God Nārāyaṇa in 31 ślokas. The work has been taken from Atharvaṇarahasya (अथर्वणरहस्य). Some folios are difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। श्री परमात्मने नमः ॐ अस्य श्री नारायण हृदय स्तोत्र मंत्रस्य मनु भार्गव ऋषिः......... ।
End:	गोपनीत्साधनाल्लोके धन्यो भवति तत्त्वतः ३१।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.4 x 7.5 cm.
Lines:	9 to10

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	10
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 25.7.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 137	**Manuscript No.:** 34
Subject:	Stotra
Accession No:	24841
Title of Work:	Nīrañjana Stotram
Title of Work in Sanskrit:	नीरंजन स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nīrañjana Stotram is a work of Stotra.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। स्थानं नमानं न च नाद विंदुं रुपं न रेखा न च धातु वर्णः..............।
End:	तस्मै नमो ब्रह्म निरंजनायः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 15.7 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	3 (78b to 80a)
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 138	**Manuscript No.:** 34
Subject:	Stotra
Accession No:	24841
Title of Work:	Bhajagovinda Stotram
Title of Work in Sanskrit:	भजगोविंद स्तोत्रम्
Name of Author:	Śaṃkarācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	This MS has several books. First three folios are blank. Bhajagovinda Stotram is a work of Stotra.
Beginning:	श्री राम जी।। भज गोविन्दं भजगोविदं गोविदं भज मूढमते।।
End:	इति परिभाषित सर्वासारं संर्वत्यक्त्वास्वप्न विचारं १४।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 15.7 cm.
Lines:	9 to 10
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	101 (4b to 6a)
Condition:	New guarding and charring is seen.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 139	**Manuscript No.:** 15285
Subject:	Stotra
Accession No:	15285
Title of Work:	Bhuvneśvarī Paddhati
Title of Work in Sanskrit:	भुवनेश्वरी पद्धति
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Bhuvneśvarī Paddhati is a work in praise of Goddess Bhuvneśvarī. Last two folios of the MS are blank. All folios have written with red outer border. Folio no. 6 has the diagram of Durgā Yantra, Yantra Kālī, Bhuvneśvarī Chinnmastā on both side of the folio.
Beginning:	ॐ स्वस्ति श्री भगवत्यै नमो नमः।। गुरुं गणपतिं नत्वा दुर्गां वाणी महेस्वरम्।।
End:	नैवेद्यशेषं तांबूलादिकं भत्कार्घ पात्राणि विसृज्य छिमस्व।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.8 x 16 cm.

Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	47
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 140	**Manuscript No.:** 15292
Subject:	Stotra
Accession No:	15292
Title of Work:	Bhūtaśuddhipraṇapratiṣthā
Title of Work in Sanskrit:	भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठा
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Bhūtaśuddhipraṇapratiṣthā is a work of Stotra. Folio no. 1b is blank. Last two folios are also blank. In the MS, it has told that without doing Bhūtaśuddhi all Yajña and Japa are useless. The method of Bhūtaśuddhi has also given in the MS.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। आचमनं प्राणायामं कृत्वा भूतशुद्धिं प्राणप्रतिष्ठां च।।
End:	श्रोत्र जिह्वा घ्राण प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.3 x 16 cm.

Lines:	8 to 10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1918
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	8
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 141	**Manuscript No.:** 15084
Subject:	Stotra
Accession No:	15084
Title of Work:	Mangalāṣṭakam
Title of Work in Sanskrit:	मंगलाष्टकम्
Name of Author:	Kālidāsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Mangalāṣṭakam is ascribed to Kālidāsa. There are only eight. ślokas in it. The ślokas are in praise of different Gods and Goddess.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्य्यो ग्रहाणां पतिः शक्रो देवपतिर्यमः पितृपतिः चन्द्रश्च तारापतिः।
End:	मंगलम् लेखकानां च पाठकानां च मंगलं। मंगलं सर्वभूतानां भूमेर्भूपतिमंगलम्।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.7 x 16.5 cm.
Lines:	10 to 11

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1810
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	1
Condition:	Worm eaten, water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 142	**Manuscript No.:** 43
Subject:	Stotra
Accession No:	20347
Title of Work:	Mallāri Sahasranāma Stotram
Title of Work in Sanskrit:	मल्लारि सहस्रनाम स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Mallāri Sahasranāma Stotram is a work of Stotra. The work has taken from Padma Purāṇa. According to the MS who reads this stotra obtains all the things.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। मल्लारिं जगतान्नाथं त्रिपुरारिं जगद्गुरुं।।
End:	सहस्र नाम मल्लरिः किमन्यच्छोतुमिछसि।।
Script:	Devanāgarī
Size:	19 x 47.2 cm.
Lines:	15
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 143	**Manuscript No.:** 15288
Subject:	Stotra
Accession No:	15288
Title of Work:	Mahāmṛtuñjaya Mantra Vidhi
Title of Work in Sanskrit:	महामृत्युंजय मन्त्र विधि
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS Mahāmṛtuñjaya Mantra Vidhi has given. The size of the MS is very small. Mahāmṛtuñjaya Mantra has also given after ending the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ॐ अस्य श्री महामृत्युंजय मंत्रस्य वसिष्ठ ऋषिरनुष्टुप छंदः श्री त्र्यंवक रुद्रो देवता श्री बींज ही शक्तिः................ ।।
End:	भूर्भुवः स्वः ॐ जूं सः ॐ हौं इति पंचादश वर्णात्मकोयं मंत्रः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9 x 13.9 cm.
Lines:	4 to 7

Copier's Name: Not mentioned

Age: Saṃvat 1886

Place of Copying: Not mentioned

For whom the MS is written: Not mentioned

Quality of Paper: Good

No. of Folios: 8

Condition: Slightly worm eaten, water stained and new guarding.

Seal: Not available

Marginal Notes: Not given

Memory Notes: Not given

Decorative Ornament: No

Source of Receiving: Not mentioned

Date of Receiving: Not mentioned

Form No.: 144	**Manuscript No.:** 15274
Subject:	Stotra
Accession No:	15274
Title of Work:	Mahimna Vyākhyā
Title of Work in Sanskrit:	महिम्न व्याख्या
Name of Author:	Puspadanta
Name of Commentator:	Madhusudana Saraswatī
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Mahimna Vyākhyā is a work of stotra. The MS is a commentary. It is a work in praise of Lord Śiva.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ विश्वेश्वरं गुरुं नत्वा महिमाख्यास्तुतेरयं पूर्वाचार्य कृत व्याख्या संग्रह क्रियते मया १।।
End:	एकात्मने नमो नित्यं हरये च हराय च।।
Script:	Devanāgarī
Size:	15.5 x 38.6 cm.
Lines:	9 to 15
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	29
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 145	**Manuscript No.:** 15306
Subject:	Stotra
Accession No:	15306
Title of Work:	Rāmāṣṭakam
Title of Work in Sanskrit:	रामाष्टकम्
Name of Author:	Śaṃkarācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Rāmāṣṭakam is a work in praise of Lord Śrī Rāma in eight ślokas composed by Śaṃkarācārya.
Beginning:	श्री रघुपतये नमः जयति रघुवंश तिलकः कौशल्या हृदय नंदनो रामः............... ।
End:	सुहृदनुजकपींद्रो रामचंद्रः सहायः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.7 x 21.3 cm.
Lines:	10
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	1
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 146	**Manuscript No.:** 15322
Subject:	Stotra
Accession No:	15322
Title of Work:	Lakṣmīhṛdayastotram
Title of Work in Sanskrit:	लक्ष्मीहृदयस्तोत्र
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Lakṣmīhṛdayastotram is a work in praise of Goddess Lakṣmi. The work has taken from Atharvaṇarahasya. All folios are difficult to read. There is a blank folio in the end of the MS.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। आद्य लक्ष्मी हृदय नारायण हृद प्राणंभः।।
End:	भक्त्या युक्तां मुहुरभयदां मह्यमप्यच्युत श्रीः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.3 x 7.9 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Saṃvat 1857
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	42
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 27.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 147

Manuscript No.: 15296

Subject: Stotra

Accession No: 15296

Title of Work: Viṣnunāma Prakāśaḥ

Title of Work in Sanskrit: विष्णुनाम प्रकाशः

Name of Author: Paramhaṃsa Parivṛajakācārya

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Viṣnunāma Prakāśaḥ is a work in praise of God Viṣṇu with His thousand names. The MS has a versified explanation written by some Sannyāsin. Folio no. 1 and 4 are missing from the MS. All folios are worm eaten from edges. Some handwriting is also missing.

Beginning: ....न विनश्यति यस्तस्मादक्षरः कथितो हि सः जीवेश्वरैक्यविज्ञानं योगस्तद्रूप एवहि ६।।

End: अरुणाविकाशितमाशामुखमिवदोषायुतं रविणा।

Script: Devanāgarī

Size: 11.5 x 28 cm.

Lines:	9
Copier's Name:	Devdatta Tripāṭhī
Age:	Saṃvat 1910 Śake 1775
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	29
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 11.8.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 148	**Manuscript No.:** 64
Subject:	Stotra
Accession No:	12556
Title of Work:	Viṣṇu Śatnām Stotram
Title of Work in Sanskrit:	विष्णु शतनाम स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Viṣṇu Śatnām Stotram is a work of stotra. In the MS hundred names of Lord Viṣṇu have given.
Beginning:	श्री विष्णवे नमः।। वासुदेवं ह्रषीकेषं वामनंजल शायिनौ।।
End:	अश्वमेधायुतं पुण्यं संप्राप्नोति समानवः।।
Script:	Devanāgarī
Size:	3.6 x 8.1 cm.
Lines:	4
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1809

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4 (34a to 37b)
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 149	**Manuscript No.:** 7
Subject:	Stotra
Accession No:	22693
Title of Work:	Śatacaṇḍī Vidhiḥ
Title of Work in Sanskrit:	शतचण्डी विधिः
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a work of Stotra. The pattern of Śatacaṇḍī Pujā has given in the MS. This worship has done in praise of Goddess Śatacaṇḍī.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ शतचंडीविधिः तत्र मूलवचनानि मंत्रमहोदधौ......... ।
End:	गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपं सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.3 x 21.8 cm.
Lines:	9 to 11

Copier's Name:	Śrīyodhana
Age:	Saṃvat 1848 Śake 1713
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	19
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 150	**Manuscript No.:** 15320
Subject:	Stotra
Accession No:	15320
Title of Work:	Śākta Stotram
Title of Work in Sanskrit:	शाक्त स्तोत्रम्
Name of Author:	Purṇānanda Paramhaṅsa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	In the MS, the fame (Mahima) of Goddess Śakti has described. All Ṛṣi-Muni, Duryodhana, Kuntī and Draupadī worship Her.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। उपासकान्महादेव श्रृणु चैकमनाः स्वयम् ।।
End:	एतत्स्तोत्रं पठित्वातु सांगतामानये ध्रुवम् ।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.3 x 15.9 cm.
Lines:	7 to 8
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	3
Condition:	Worm eaten, paper pasting and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 151	**Manuscript No.:** 15286
Subject:	Stotra
Accession No:	15286
Title of Work:	Śivakavacam
Title of Work in Sanskrit:	शिवकवचम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śivakavacam is a work in praise of God Śiva. The work has taken from Bṛahmottara Khaṇḍa of Skāṇda Purāṇa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ऋषभ उवाच नमस्कृत्य महादेवं विश्वव्यापिनमीश्वरं वक्ष्ये शिवमयं वर्म सर्व रक्षा करं नृणां १।।
End:	ताभ्यां संपूजितः सोमयोगीस्वैरगतिर्ययौ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 15.5 cm.
Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	8
Condition:	Water stained and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 152 ***Manuscript No.:*** *15287*

Subject:	Stotra
Accession No:	15287
Title of Work:	Śivakavacam
Title of Work in Sanskrit:	शिवकवचम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śivakavacam is a work in praise of God Śiva. The work has taken from Bṛahmottara Khaṇḍa of Skāṇda Purāṇa. All folios are very difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। ....नमस्कृत्य महादेवं विश्व व्यापिनमीश्वरम् ।।
End:	ताभ्यां संपूजितः.............योगीस्वैर गतिर्ययौ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9 x 14.5 cm. (Different)
Lines:	7 to 8
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	7
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 5.5.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 153	**Manuscript No.:** 15291
Subject:	Stotra
Accession No:	15291
Title of Work:	Śītalāṣṭakam
Title of Work in Sanskrit:	शीतलाष्टकम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śītalāṣṭakam is a small MS in praise of Goddess Śītalā. According to the MS who recites, Śītalāṣṭaka there is no fear for him. In the end of the MS, there are two blank folios. The work has taken from Skāṇda Purāṇa.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। ॐ अस्य श्री शीतला स्तोत्र मंत्रस्य वामदेव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः..... .... ।।
End:	विस्फोटक भयं घोरं नैव तस्य प्रजायते।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 14.5 cm.
Lines:	10 to 12

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1912
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	4
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 154	**Manuscript No.:** 15283
Subject:	Stotra
Accession No:	15283
Title of Work:	Saptaśatī Stotra
Title of Work in Sanskrit:	सप्तशती स्तोत्र
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Saptaśatī Stotra is a work in praise of Goddess Durgā. The work has taken from Mārkeṇḍaya Purāṇa. The MS contains some ślokas from Durgā Saptaśatī. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। मार्कण्डेपुराणोक्तं देवी महात्म्मुत्तमं......... ।
End:	लोकानां च हितार्थाय देवी सूक्तानि............ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 18 cm.
Lines:	5
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	3
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 3.6.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 155	**Manuscript No.:** 15271
Subject:	Stotra
Accession No:	15271
Title of Work:	Saundaryalaharī Stotram
Title of Work in Sanskrit:	सौन्दर्यलहरी स्तोत्रम्
Name of Author:	Saṃkarācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Saundaryalaharī Stotram is a work in praise of Goddess Śakti composed by Saṃkarācārya. The MS contains 102 ślokas. Orange colour has used to write the numbers.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पदितुमपि।।
End:	सलिलनिधिसौहित्यकरणं त्वदीयाभिर्वाग्भिस्तव जन नितववाचां स्तुतिरियं।। १०२।।
Script:	Devanāgarī

Size:	9.8 x 22.2 cm.
Lines:	7 to 8
Copier's Name:	Pṛahlāda Miśra
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	16
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 156 | Manuscript No.: 30

Subject: Stotra

Accession No: 15455

Title of Work: Svarṇākarṣaṇabhairava Stotram

Title of Work in Sanskrit: स्वर्णाकर्षणभैरव स्तोत्रम्

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: This is a Stotra dedicated to Bhairava being a dialogue between Markaṇḍeya and Nandikeśwara.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। ॐ श्री महाभैरवाय नमः।। मार्कंडे उवाच।। भगवन्प्रमथाधीश शिवंतुलत्य पराक्रमः।।

End: महाभैरव सायुज्यं सांतकाले लभेत ध्रुवं।

Script: Devanāgarī

Size: 9.5 x 17.8 cm.

Lines: 7

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	9
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the done by National Archives Govt. of India in 2.6.61. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 157	**Manuscript No.:** 15314
Subject:	Stotra
Accession No:	15314
Title of Work:	Hariharātmaka Stotram
Title of Work in Sanskrit:	हरिहरात्मक स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Hariharātmaka Stotram is a work in praise of Śrī Hari in thirty-nine ślokas. The work has taken from Harivaṁsa Purāṇa. Last three folios of the MS are blank.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। श्री शिवाय नमः।। पितामह उवाच मन्दरस्योत्तरे पार्श्वेन लिन्यां भव केशवौ.......।
End:	भयं तत्र न कुर्वन्ति यत्रायं पठयते स्तवः।।३६।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.6 x 14 cm.
Lines:	8 to 10

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	8
Condition:	Slightly worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 158	**Manuscript No.:** 15316
Subject:	Stotra
Accession No:	15316
Title of Work:	Jñāna Stotram
Title of Work in Sanskrit:	ज्ञान स्तोत्रम्
Name of Author:	Vedavyasa
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS has taken from Mahābhārata Āśvamedhik Parva Guru Śiṣya Saṃvād (आश्वमेधिक पर्व गुरू शिष्य संवाद). The MS contains only 22 ślokas. The MS discussed about superiority in all things like: Grastha Āśrama is the best in all Āśramas, Grains are the best in all foods etc.
Beginning:	श्री हरिः ।। ब्रह्मोवाच यदादिमध्यपर्य्यंतं ग्रहणोपायमेव च नामलक्षण संयुक्तं सर्व वक्ष्यामि तत्वतः १ ।।
End:	निर्म्ममो निरहंकारोमुच्यते सर्वपाप्मभिः २२ ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	10.8 x 15.1 cm.

Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	3
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 23.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 159	**Manuscript No.:** 64
Subject:	Stotra
Accession No:	12556
Title of Work:	Śrī Rāmacandrastavrāja Stotram
Title of Work in Sanskrit:	श्रीरामचन्द्रस्तवराज स्तोत्रम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Śri Rāmacandrastavrāja Stotram is a work in praise of God Śrī Rāma. The work has taken from Śri Sanat Kumār Saṃhita. This MS is included with other MSS. Folio no.1 is blank.
Beginning:	श्रीमते रामानुजाय नमः।। ॐ अस्य श्री रामचंद्रस्तवराज स्तोत्र मंत्रस्य.........।
End:	कौशल्या कुक्षि संभूतं जानकी कंठ भूषणं।।
Script:	Devanāgarī
Size:	3.6 x 8.1 cm.
Lines:	4
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Saṃvat 1809
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	102 (2b to 33b)
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Upaniṣad

उपनिषद्

Form No.: 160

Manuscript No.: 15189

Subject: Upaniṣad

Accession No: 15189

Title of Work: Atharvavedopaniṣad

Title of Work in Sanskrit: अर्थववेदोपनिषद्

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Atharvavedopaniṣad is a work of Vedānta. The author does not give his name in the MS. He describes all Upaniṣad related to Atharvaveda. For example: अथर्ववेदमुडंकोपनिषद, अथर्ववेदंशूलिकोपनिषद, अथर्ववेदोपनिषम्सु अथर्वशिरोपनिषद्, अथर्ववेदेमहोपनिषत्, अथर्ववेदयोगतत्वोपनिषद्, अथर्ववेदआत्मोपनिषद्, अथर्ववेदेलोपनिषद् इत्यादि There is a blank folio in the last of the MS.

Beginning: ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ नमः सरस्वत्यै अथाथर्वणीयेज्यनिषदस्तथा शाखात्तरीयाश्चालिख्यते।

End:	एताः सर्वापृथग्वाक्या नीव ब्रह्मैक्य बोधिकाः।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 21 cm.
Lines:	8
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	134
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 161

Manuscript No.: 9

Subject: Upaniṣad

Accession No: 22680

Title of Work: Īśāvāsyarahasyam

Title of Work in Sanskrit: ईशावास्यरहस्यम्

Name of Author: Brahmānand Saraswatī

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Īśāvāsyarahasyam is a very famous work of Upaniṣad. The work has taken from Īśāvāsyopaniṣad. The commentary of Īśāvāsyopaniṣad's Ślokas has given in the MS. One Śloka's commentary has given in many Ślokas. Last folio of the MS has bound inverse by mistake.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। ॐ नमः।। ॐ ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किच्च जगत्यां जगत्।।

End: नोस्माकं वहुधाभ्यस्त देहे नानेक देहिनां।। प्रचोदयात्प्रेरयतुप्रार्थने वहिशिष्यते।।

Script: Devanāgarī

Size: 11.8 x 27.4 cm.

Lines:	10 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1932
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	7
Condition:	Slightly worm eaten and new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 162	**Manuscript No.:** 15315
Subject:	.Upaniṣad
Accession No:	15315
Title of Work:	Nārāyaṇopaniṣad
Title of Work in Sanskrit:	नारायणोपनिषद्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nārāyaṇopaniṣad has taken from Atharvaveda. According to the MS God Nārāyaṇa is the creator of all living beings. Who chants this Upaniṣad his all sins have destroyed. There is some text also after ending the MS. All folios are difficult to read.
Beginning:	श्री गणेशो जयति ॐ अथ पुरुषोहवै नारायणेकामयतः प्रजाः सृजेति.......... ।
End:	नारायण सायुज्यमाप्नोति
Script:	Devanāgarī
Size:	15.5 x 10.7 cm.

Lines:	15 to 16
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	4
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 23.9.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 163

Manuscript No.: 15334

Subject: Upaniṣad

Accession No: 15334

Title of Work: Netropaniṣad

Title of Work in Sanskrit: नेत्रोपनिषद्

Name of Author: Baladeva

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Netropaniṣad is a minar Upniṣad about the protection of eyes. According to the MS to destroy all diseases of eyes, the man chants the Netropaniṣad.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। अथातश्चाक्षुषीं विद्यां पठति सिद्धां चक्षु रोगहरां व्याख्यास्यामो।।

End: ॐ नमो भगवते आदित्याय अहोवाहिनि वाहिनि स्वाहा।

Script: Devanāgarī

Size: 10.2 x 17.2 cm.

Lines: 6

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1966
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	4
Condition:	Slightly worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 164

Manuscript No.: 15188

Subject: Upaniṣad

Accession No: 15188

Title of Work: Praśnopaniṣadbhāṣya

Title of Work in Sanskrit: प्रश्नोपनिषद्भाष्य

Name of Author: Śaṃkarācārya

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Praśnopaniṣadbhāṣya is a work of Vedānta composed by Śaṃkarācārya, the pupil of Śrī Govinda.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। मंत्रोक्तस्यार्थस्य विस्तारानुवादीदं ब्राह्मणामारभ्यते।

End: परमर्षिभ्य इति द्विर्वचनमादरार्थम्।

Script: Devanāgarī

Size: 12.5 x 22.5 cm.

Lines: 12 to 17

Copier's Name: Not mentioned

Age: Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	19
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 165	**Manuscript No.:** 33
Subject:	Upaniṣad
Accession No:	22689
Title of Work:	Vajrasūcikā Upaniṣad
Title of Work in Sanskrit:	वज्रसूचिका उपनिषद्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vajrasūcikā means a needle that is as hard as a rock/diamond. The text explains a very precious and a potent doctrine that can lead one to Moksha (salvation). The Upaniṣad concludes that it is spiritual realization and good conduct alone that determine one's caste. The colophon states that this Upniṣad is a component of Bhagawadgītā.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः अथ वज्रसूचिका प्रकरणम् वज्रसूचिकां प्रवक्षामि............।
End:	अश्मि ब्रह्माहमस्मीति ज्ञात्वा कृतकृत्यो भवतीति नान्यथा।
Script:	Devanāgarī

Size:	8.5 x 17.5 cm.
Lines:	7 to 8
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Very good
No. of Folios:	12
Condition:	Slightly worm eaten.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Vedānta

वेदान्त

Form No.: 166	**Manuscript No.:** 34
Subject:	Vedānta
Accession No:	24841
Title of Work:	Adhyatma Prakaśa
Title of Work in Sanskrit:	अध्यात्म प्रकाश
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Hindi
About the Manuscript:	Some text is missing from beginning. Folio no 43 is torn. This is Vedānta MS in medieval Hindi. This MS is included with other MSS, which have written in Sanskrit.
Beginning:	................ध्यात्तम प्रकास यह भाषा सरल सुवे ।।
End:	सोई विसेषक ज्ञांना ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 15.7 cm.
Lines:	7 to 8
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	53 (7a to 60a)
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 167

Manuscript No.: 15194

Subject: Vedānta

Accession No: 15194

Title of Work: Anubhavānanda

Title of Work in Sanskrit: अनुभवानन्द

Name of Author: Rāmanātha

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Anubhavānanda is a work of Vedānta composed by Rāmanātha. The writing of the MS is very short due to this it is difficult to read. Different types of pictures have given on folio 2a. The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives govt. of India in 22.5.61. According to the slip of National Archives bound in the MS.

Beginning: श्री गणेशाय नमः क्ववग्निपवनाकाशैः साहंकारैः सशक्तिभिः संयुतं श्री शिवंनवात्तद्विविच्ये यथास्महं १।

End:	कुर्वेति तच्छासित धर्म संस्थाः सर्गादि विश्वस्य नमोस्तु तेभ्यः ५४।
Script:	Devanāgarī
Size:	10 x 22.3 cm.
Lines:	16
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1858
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	2
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 168	**Manuscript No.:** 10
Subject:	Vedānta
Accession No:	22682
Title of Work:	Aparokḥātmavijñānam
Title of Work in Sanskrit:	अपरोक्षात्मविज्ञानम्
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Aparokḥātmavijñānam is a Prakaraṇa Grantha of Advaita Vedānta philosophy. The MS ends 'after 35 Ślokas hence name of author is not known showing no connection of soul with the Karman. This MS contains three MSS in it whose name are Aparokḥātmavijñānam, Hastāmalakastotram and Svarupanusandhān Stotram.
Beginning:	श्री परमात्मने नमः।। कर्त्तारं कर्म वध्नाति खलुवेदविदां चराः।।
End:	रहस्यानां प्रसिद्धानां प्रायश्चित हि वेदनम्।। ३५।। अपरोक्षात्मविज्ञा।
Script:	Devanāgarī

Size:	11.3 x 26.2 cm.
Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	2 (1a to 2b)
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 169

Manuscript No.: 15193

Subject: Vedānta

Accession No: 15193

Title of Work: Aṣṭślokī

Title of Work in Sanskrit: अष्टश्लोकी

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Aṣṭślokī is a work of Viśiṣṭādvaita Vedāṇta. The work is with a commentary whose writer is unknown. The folios colour changed to brown.

Beginning: श्रीमद्रामानंदाय नमः श्री पराशर भट्टार्य्यः श्रीरंगेशपुरोहितः श्रीवत्सांक सुतः श्रीमान् श्रेयसे मेस्तुभूयसे १।

End: निर्देशे न तदर्थानुसंधाने नैवकालक्षेयकवर्त्तव्य इति सूचितः ८।।

Script: Devanāgarī

Size: 10.2 x 23.3 cm.

Lines: 9 to 12

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	6
Condition:	No
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 170	**Manuscript No.:** 20
Subject:	Vedānta
Accession No:	22690
Title of Work:	Aṣṭāvakra Gītā
Title of Work in Sanskrit:	अष्टावक्र गीता
Name of Author:	Gopāl Chaitanya
Name of Commentator:	Viśveśwar
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS has a commentary named Dīpikā by Viśveśwar. The MS contains many chapters called Prakaraṇa. Every chapter has its different name. The commentator informs that he has elucidated some existing commentary authored by Gopāl Chaitanya.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। सच्चिदानंदमद्वैतं सर्वाधिष्ठानमुत्तमं।
End:	संख्या क्रमा ईदृशाः श्लोका अमी कथिता इत्यर्थः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12 x 28.3 cm. (Different)

Lines:	6 to 14 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1824
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Vairāgī Dhyāndāsa
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	73
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting. Some folios are laminated.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 171 | **Manuscript No.:** 18

Subject:	Vedānta
Accession No:	22696
Title of Work:	Updeśa Sāhasrī
Title of Work in Sanskrit:	उपदेश साहस्त्री
Name of Author:	Saṁkarācārya
Name of Commentator:	Rāmtīrtha
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Updeśa Sāhasrī is a work of Vedānta. The MS is missing from beginning. The MS is a commentary named Padayojanikā by Rāmtīrtha the pupil of Krişṇatīrtha
Beginning:	......न्वन्वय व्यतिरेकाभ्यामेवसर्व संसारविनिर्मुक्तात्मावगसात्किं वाक्येनेत्या शंक्याहः ।।
End:	यथाकथं चिद्रचित्तेन विष्णुरनेन पुष्पत्व खिलांतरात्मा ।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 30.3 cm.
Lines:	10 to 15

Copier's Name:	Ṛṣi Keśari Canda
Age:	Saṃvat 1829
Place of Copying:	Avantikā
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	23
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 172	**Manuscript No.:** 19
Subject:	Vedānta
Accession No:	Not given
Title of Work:	Upadeśa Sāhasrī
Title of Work in Sanskrit:	उपदेश साहस्री
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a work of Vedānta Philosophy. The MS is missing from beginning. The ink is bleeding on some folios.
Beginning:	.................किंचेंद्रियाणिनात्मानः करणत्वात्कुवारवदित्य नुमानांतरं सूचयन्.......... ।
End:	अन्याभावोऽक्षणिकभावः क्षणिक इति ते प्रसज्यते ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 30.2 cm.
Lines:	8 to 14 (Different)
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	78
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 173

Manuscript No.: 34

Subject: Vedānta

Accession No: 24841

Title of Work: Tattva Nirṇaya

Title of Work in Sanskrit: तत्त्व निर्णय

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Hindi

About the Manuscript: Tattva Nirṇaya is a work of Vedānta philosophy. Last folio of the MS is blank. The MS is included with other MSS, which have written in Sanskrit.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। अद्यारोप अपवाद करी कै ब्रह्म कों वेद जनावतेहैं।।

End: रूप अपना आप भासता है।

Script: Devanāgarī

Size: 9.2 x 15.7 cm.

Lines: 7

Copier's Name: Rāmajī Dāsa

Age:	Not readable
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	14 (86 b to 100b)
Condition:	Slightly worm eaten, water stained, and new guarding. Charring is seen.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 174	**Manuscript No.:** 34
Subject:	Vedānta
Accession No:	24841
Title of Work:	Tattvabodha Prakarṇam
Title of Work in Sanskrit:	तत्त्वबोध प्रकरणम्
Name of Author:	Śaṃkarācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Tattvabodha Prakarṇam is a primer of Vedānta Philosophy by Śaṃkara.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। ॐ वासुदेवेंद्र योगींद्रं। नत्वा ज्ञानप्रदंगुरुं।।
End:	ज्ञान संप्राप्ति समये मुक्तोसौविगताशय इति स्मृतेश्व।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 15.7 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	11 (60b to 71b)
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 175	**Manuscript No.:** 34
Subject:	Vedānta
Accession No:	24841
Title of Work:	Nirvāṇāṣṭakam
Title of Work in Sanskrit:	निर्वाणाष्टकम्
Name of Author:	Śaṃkarācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Nirvāṇāṣṭakam is a work of Vedānta.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। ॐ मनो बुद्धयहंकारचित्तानि नाहं न श्रोत्रं न जिंह्वा न च घ्राण.................. ।
End:	नदं रुपं शिवोहं शिवोहं ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 15.7 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	2 (80a to 81b)
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 176 | Manuscript No.: 15187

Subject: Vedānta

Accession No: 15187

Title of Work: Mananākhya Prakaraṇa

Title of Work in Sanskrit: मननाख्य प्रकरण

Name of Author: Vāsudevānandatīrtha

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Mananākhya Prakaraṇa is a work of Vedānta philosophy composed by Vāsudevānandatīrtha. On folio no. 21 and 22 charring is seen. There are grayish blue colour stains on folio no. 38, 40, 64b and 65a, which may be due to the manufacturing, defect in paper.

Beginning: श्री गणेशाय नमः हरिः ॐ यो वतीर्ण इहाचार्य रुपेणयतिनां मुदे श्रीमन् नारायणं वंदे तं हरिं करुणा निधिम्।

End: शिष्येण च श्रोतव्यं इतः परं वक्तव्यं श्रोतव्यं नास्तीति सिद्धम्।।

Script:	Devanāgarī
Size:	12.5 x 28.5 cm.
Lines:	7 to 11
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	65
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 177 | Manuscript No.: 15190

Subject:	Vedānta
Accession No:	15190
Title of Work:	Mahāvākya Vivraṇa
Title of Work in Sanskrit:	महावाक्य विवरण
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Mahāvākya Vivraṇa is a work of Vedāṇta philosophy. The author described all the matters related to Vedāṇta like- Panchtanmatra (पंचतन्मात्रा) Panchmahābhoot (पंचमहाभूत), कर्मेन्द्रिय, ज्ञानेन्द्रिय, ब्रह्मवाक्य etc.
Beginning:	ॐ श्री गणेशाय नमः।। ॐ नमः श्री सकल कल्याण भाजनाय पिनाकिने............ ।
End:	ब्रह्मांनदे क्षुद्रा नंदानामुद्भूतवादितिश्रुतेः।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.5 x 23 cm.

Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	46
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 178	**Manuscript No.:** 34
Subject:	Vedānta
Accession No:	24841
Title of Work:	Ratnamāla Praśnottarī
Title of Work in Sanskrit:	रत्नमाला प्रश्नोत्तरी
Name of Author:	Not mentioned
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Ratnamāla Praśnottarī containing questions. The work is usually ascribed to Śaṁkarācārya.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ।। अथ प्रश्नोत्तरी लिष्यते ।।
End:	तनोतिमोदं विदुषां सुरम्य रमेश गौरी इकधैव सद्यः ।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 15.7 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned

Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	6 (72a to 78b)
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 179 **Manuscript No.:** 15185

Subject: Vedānta

Accession No: 15185

Title of Work: Vedānta Paribhāṣā

Title of Work in Sanskrit: वेदान्त परिभाषा

Name of Author: Dharmarāja Dhīrendra

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Vedānta Paribhāṣā is a work of Vedānta philosophy. Some folios have spots of yellow colour. It may be Termuric.

Beginning: श्री गणेशाय नमः यद्विद्या विलासेन भूतभौतिकसृष्टयः तं नौमि परमात्मानं सच्चिदानंदविग्रहम्।

End: मोक्षश्चानर्थ निवृत्तिर्निरतिशय ब्रह्मानंदवाप्तिश्चेति सिद्धं प्रयोजन।।

Script: Devanāgarī

Size: 12.5 x 33 cm.

Lines: 7 to 11

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1898
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	44
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 180	**Manuscript No.:** 28
Subject:	Vedānta
Accession No:	15191
Title of Work:	Vedāntsāraḥ
Title of Work in Sanskrit:	वेदान्तसारः
Name of Author:	Sadānanda Yogindra
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	It is a famous Advaita Vedānta primer dealing with Theorams of Vedānta in a lucid style and hence celebrated among the beginners of Vedānta. Some folios are worm eaten from edges.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः हरिः ॐ अखंडं सच्चिदानंदमवाङ्मनसगोचरम् आत्मानंमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये १ ।।
End:	अत्रैवसमवलीयंते विमुक्तश्च विमुच्यते।
Script:	Devanāgarī
Size:	11 x 24.5 cm. (Different)
Lines:	9 to 10

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1904
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Bad
No. of Folios:	17
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	The technical restoration and conservation work of the MS has been done by National Archives Govt. of India in 6.6.1961. According to the seal of last page.
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 181	**Manuscript No.:** 15182
Subject:	Vedānta
Accession No:	15182
Title of Work:	Vedāntasiddhānta Muktāvalī Saṭika
Title of Work in Sanskrit:	वेदान्तसिद्धान्त मुक्तावली सटीक
Name of Author:	Śri Ḍhuṇḍhirāja
Name of Commentator:	Prakāśānanda
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vedāntasiddhānta Muktāvalī Saṭika is a work of Vedānta composed by Ḍhuṇḍhirāja. The MS is a commentary of Prakāśānanda the pupil of Jñānada. The colour of the folios changed to brown. The last folio is bound inverse.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ॐ नमः परमात्मने गुरवे नमः।। विश्वेशं ढुंढिराजं जगद्द्वय कृतं शारदां .... ।
End:	यस्य ब्रह्मविचारणोक्षणमपि स्थैर्यं मनः प्राप्नुयात्।।७४।।
Script:	Devanāgarī

Size:	10.2 x 28.5 cm.
Lines:	9 to 11
Copier's Name:	Sevaka Mahādāsa
Age:	Saṃvat 1792
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not good
No. of Folios:	42
Condition:	Worm eaten, water stained and conservation work with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Yes
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 182 **Manuscript No.:** 15186

Subject: Vedānta

Accession No: 15186

Title of Work: Vedāntasanjñāprakāśa

Title of Work in Sanskrit: वेदान्तसंज्ञाप्रकाश

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Vedāntasanjñāprakāśa is work regarding technical terms of Vedānta philosophy. In the MS Author name is not mentioned. The MS describes Adhyāropa-Apvād, Panchguṇa etc. There is an extra text on the last folio of the MS.

Beginning: श्री गणेशाय नमः ब्रह्मणेनमः ॐ श्रीमद्गुरोः पादयुगं नत्वातस्यप्रसादतः वेदातं संज्ञाः प्रत्येकं निरुप्यंते यथामति १।

End: सर्वप्रपंचरहितं ब्रह्माहमस्मीति प्रत्यगभिन्न ब्रह्मज्ञानवान्मुक्त इति सिद्धं।

Script:	Devanāgarī
Size:	10.3 x 26 cm.
Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1904 Śake 1769
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	25
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 183	**Manuscript No.:** 34
Subject:	Vedānta
Accession No:	24841
Title of Work:	Vijñānanavakā
Title of Work in Sanskrit:	विज्ञाननवका
Name of Author:	Śaṃkarācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Vijñānanavakā is a work of Vedānta Philosophy.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। तपोयज्ञ दानादिभिः शुद्धबुद्धिः विरक्तो नृपादेः पदे................. ।
End:	अर्थवादोपपत्तिश्च लिंगं तात्पर्य्य निर्णये।।
Script:	Devanāgarī
Size:	9.2 x 15.7 cm.
Lines:	7
Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned

For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	3 (82b to 84b)
Condition:	Water stained.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 184

Manuscript No.: 31

Subject. Vedānta

Accession No: 22681

Title of Work: Sandhyā Pañcīkaraṇa Mahāvākya

Title of Work in Sanskrit: सन्ध्या पंचीकरण महावाक्य

Name of Author: Not mentioned

Name of Commentator: Not mentioned

Language: Sanskrit

About the Manuscript: Sandhyā Pañcīkaraṇa Mahāvākya is a small MS related to Vedānta philosophy. It is related to hermits. All folios of the MS have bound inverse by mistake.

Beginning: श्री गणेशाय नमः।। श्री गुरुभ्यो नमः।। ॐ शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजं।।

End: सुप्रसन्नोव।। धेनु मुद्रया सांनिध्यं सांनिध्यं कुरु।।

Script: Devanāgarī

Size: 8 x 11 cm.

Lines: 6 to 8

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1893 Śake 1758
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	38
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No : 185	**Manuscript No.:** 8
Subject:	Vedānta
Accession No:	22692
Title of Work:	Siddhāntabinduḥ
Title of Work in Sanskrit:	सिद्धांतबिन्दुः
Name of Author:	Madhusūdansaraswatī
Name of Commentator:	Śaṁkarācarya
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	Siddhāntabinduḥ is a commentary of Daśaślokī composed by Śaṁkarācarya. Folio no. 3a has written inverse. The MS is incomplete.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः ॐ श्री शंकराचार्य नवावतारं विश्वेश्वरं विश्वगुरुं प्रणम्य वेदांतशास्त्रश्रवणालसानां बोधाय कुर्वेकमपि प्रयत्नं।। १।।
End:	ज्ञानं सतिमात्यपिवस्तुनि नास्तिनमतीति प्रतीतिमेजनन सामर्थ्यमावरण.................।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.2 x 27.1 cm.
Lines:	9 to 10

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	11
Condition:	Worm eaten and paper pasting.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 186	**Manuscript No.:** 10
Subject:	Vedānta
Accession No:	22682
Title of Work:	Svarūpānusandhānstotram
Title of Work in Sanskrit:	स्वरुपानुसंधानस्तोत्रम्
Name of Author:	Śaṃkararācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	This is an Advaita-Vedānta Stotra dealing with identification of the reality of one's self, which is beyond all worldly limitation.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः। ॐ तपोदानयज्ञादिभिः शुद्धबुद्धिर्विरक्तो ग्रहादेर्य.................. ।
End:	श्रृणोतीह वानित्यमुद्योग युक्तो भवेद्विद्भुरत्रैव वेद प्रमाण इति।।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.3 x 26.2 cm.
Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	1 (4a to 4b)
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 187	**Manuscript No.:** 21
Subject:	Vedānta
Accession No:	22694
Title of Work:	Harimīdestoram with commentary Haritattvamuktāvali
Title of Work in Sanskrit:	हरिमीडेस्तोत्रम् (हरितत्वमुक्तावली टीका सहित)
Name of Author:	Śaṁkarācarya
Name of Commentator:	Svayamprakāśa
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	The MS is a Vedānta Stotra with a commentary called Haritattvammktāvalī. It claims to possess all Vedānta principals elucidated vividly.
Beginning:	श्री गणेशाय नमः।। नित्यं निजानंद सद् द्वितीयं शुद्धं विभुं सत्यमति स्वतंत्रं..... ।
End:	वंदामहें वयममंदमुदांबिकेशम्।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.5 x 27.5 cm.
Lines:	13 to 16

Copier's Name:	Not mentioned
Age:	Saṃvat 1932
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Good
No. of Folios:	36
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

Form No.: 188	**Manuscript No.:** 10
Subject:	Vedānta
Accession No:	22682
Title of Work:	Hastāmalakastotram
Title of Work in Sanskrit:	हस्तामलकस्तोत्रम्
Name of Author:	Hastāmalakācārya
Name of Commentator:	Not mentioned
Language:	Sanskrit
About the Manuscript:	This is a Vedānta Stotra called Hastāmalakastotra, which is a dialogue between Saṁkara and his would be disciple Hastāmalak. It ends abruptly after 10 Ślokas.
Beginning:	।। श्री गणेशाय नमः ।। कस्त्वं शिशो कस्य कुतोऽसि गंता किं नाम ते कुत्र समागतोऽसि।
End:	चलासुप्रभिन्ने.............. ।
Script:	Devanāgarī
Size:	11.3 x 26.2 cm.
Lines:	9
Copier's Name:	Not mentioned

Age:	Not mentioned
Place of Copying:	Not mentioned
For whom the MS is written:	Not mentioned
Quality of Paper:	Not so good
No. of Folios:	1 (3a to 3b)
Condition:	Worm eaten, water stained and paper pasting with new guarding.
Seal:	Not available
Marginal Notes:	Not given
Memory Notes:	Not given
Decorative Ornament:	No
Source of Receiving:	Not mentioned
Date of Receiving:	Not mentioned

शीर्षक	पृष्ठ संख्या
अनन्त कथा	1
अनन्त व्रत कथा	3, 5
आदित्य व्रत विधि	7
ऋषि पंचमी व्रत कथा	9
एकादशीव्रत कथा	11
कार्तिकव्रतोद्यापन सूत्रसार	13
कुम्भ विवाह विधिः	15
चूडाकरण संस्कार	17
जलाशयपूजा प्रतिष्टा	19
तुलसी विवाह	21
दामोदर तुलसी विवाह	23
नामकरण पद्धति	25
पूजा पद्धतिः	27
प्रदोष शिवपूजन विधि	29
मूलविधानम्	31
मूलश्लेषा विधान	33
यजुर्वेद मंजरी	35
यज्ञोपवीत पद्धति	37, 39
विवाह पद्धति	41, 43, 45
विष्णु प्रतिमा विवाह विधि	47

लेखक	पृष्ठ संख्या
मनु	17
गणेश दत्त मिश्र	39
रुद्रधर	67
कालिदास	69, 71, 79, 81, 87—97, 101, 247, 281
भारवि	73
जयदेव	75, 77
भर्तृहरि	83, 103, 105
श्री हर्ष	85
पण्डित सूर्य	99
माघ	107
अमर सिंह	109—127
अन्नम भट्ट	129—135
टीकाराम शर्मा	137
विश्वनाथ	139
ऋषि गर्ग	145—157
वेदव्यास	161—201, 207—231, 315
कमललोचन	205